जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 49 संख्याः 291 प्रभात कोटा, मंगलवार 13 अगस्त, 2024 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

सेबी की चेयरमैन माधवी पुरी बुच की भूमिका पर तलवारें खिंची मोदी सरकार व विपक्ष में

सरकार का कहना है कि श्रीमती बुच को कठघरे में खड़ा करके विपक्ष उस षड़यंत्र का हिस्सा बन गया है, जो भारत में कोई ''इकोनॉमिक इन्वेस्टमैंट'' नहीं होने देना चाहता

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। जैसी कि उम्मीद थी, ताजातरीन हिंडनबर्ग रिपोर्ट को लेकर सत्तारूढ़ भाजपा और विपक्ष के बीच साफ तौर पर आमने सामने आ गए हैं। ज्ञातव्य है कि इस रिपोर्ट में आरोप लगाया गया है कि एस.ई.बी.आई. (सेबी) प्रमुख माधवी पुरी बुच तथा उनके पति धवल बुच की अडानी के घोटाले में गहरी लिप्तता है तथा अडानी के उस गुमनाम ऑफशोर फंड में बुच-युगल की हिस्सेदारी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के घोर समर्थक इस पूरे मुद्दे को राष्ट्रहित के खिलाफ एक साजिश के रूप में देख रहे हैं।

हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट में विसल ब्लोअर दस्तावेजों का हवाला देते हुये यह दावा किया गया है कि बुच दम्पति आई.पी.ई. प्लस फंड, जो एक ऑफशोर (देश से बाहर स्थित) फर्म है, में शामिल है तथा यह फर्म संवीक्षा (स्क्रूटनी) में आ गई है। रिपोर्ट में आरोप लगाया गया है कि गौतम अडानी का भाई, विनोद (कॉम्प्लेक्स स्ट्रक्चर) के हिस्से के रूप में करता था, जो मनी-लॉन्डरिंग के लिये अनेक ऑफशोर फंड्स से जुड़ा

- सरकार का यह भी कहना है कि हिंडनबर्ग रिसर्च, जिसने श्रीमती बुच व अडानी ग्रुप की सांठ-गांठ का आरोप लगाया है, के मालिक हंगरी में जन्मे अमेरिकी इन्वेस्टर सोरोस हैं तथा सोरोस शुरु से भारत, नरेन्द्र मोदी व भाजपा के खिलाफ प्रोपैगैंडा करते रहे हैं।
- दूसरी ओर हिंडनबर्ग रिपोर्ट में स्पष्ट लिखा है श्रीमती बुच, सेबी की अध्यक्ष के रूप में सदा अडानी ग्रुप के बचाव में रही हैं।
- तथा हिंडनबर्ग रिपोर्ट में प्रकाशित सबूत व आरोपों, जिनकी पुष्टि 40 निष्पक्ष व स्वतंत्र मीडिया ग्रुप्स ने भी की है, की अनेदखी करती रहीं हैं, सेबी की अध्यक्ष के रूप में।
- हिंडनबर्ग रिपोर्ट ने यह भी आरोप लगाया है कि श्रीमती बुच ने इस बात को भी कभी सार्वजनिक नहीं किया कि उनके पास उस कंपनी में शेयर थे जिसे अडानी ग्रुप ने काम में लिया था, अपना ब्लैक का पैसा वाइट करने के लिये।
- सेबी के नियमों के अनुसार, सेबी के किसी भी अधिकारी का उस केस में थोड़ा बहुत भी ''इन्टरेस्ट'' है, जिसकी सेबी जाँच-पड़ताल कर रही है या करने की सोच रही है तो उस अफसर के लिए ''अपना इन्टरेस्ट'' सार्वजनिक करना या उस जाँच से अपने को अलग कर लेना अनिवार्य होता है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एस.आई. पेपर लीक केस, सुप्रीम कोर्ट ने एस.एल.पी. खारिज की

जयपुर, 12 अगस्त (का.सं.)। सुप्रीम कोर्ट ने एस.आई. भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में एस.ओ.जी. की ओर से की गई आरोपियों की गिरफ्तारी की कार्रवाई को सही माना है। इसके साथ ही, सुप्रीम कोर्ट ने आरोपियों को जमानत देने से इन्कार करते हुए उनकी स्पैशल लीव पिटिशन (एस.एल.पी.) खारिज कर दी। जस्टिस पी.एस. नरसिम्हा और जस्टिस पंकज मित्थल की खंडपीठ ने यह आदेश आरोपी सुभाष विश्नोई व अन्य की एस.एल.पी. पर दिए।

- सुप्रीम कोर्ट ने एस.आई. पेपर लीक केस के ट्रेनी आरोपियों की गिरफ्तारी को सही माना और आरोपियों को जमानत देने से इन्कार करते हुए उनकी एस.एल.पी. खारिज कर दी।

खंडपीठ ने कहा कि आरोपियों का अपराध एक व्यक्ति विशेष के खिलाफ न होकर पूरे समाज के खिलाफ है। आरोपियों ने लाखों प्रतिभाशाली लोगों की भावनाओं के साथ खेला है और ऐसे में उन्हें किसी भी तरह की राहत नहीं दे सकते। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि एस.ओ.जी. पहले आरोपियों को पूछताछ के लिए लाई थी और उनके

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ये माधवी पुरी बुच आखिर हैं कौन?

सेबी की वर्तमान अध्यक्ष, श्रीमती बुच 2017 से सेबी अध्यक्ष अजय त्यागी के कार्यकाल में सेबी के बोर्ड की सदस्य बनीं, तदोपरान्त सेबी की पहली महिला अध्यक्षा बनीं

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। सिक्यूरीटीज़ एक्सचेंज बोर्ड (सेबी) की अध्यक्ष माधवी पुरी बुच, जो कि अमेरिका रिसर्च फर्म हिडंनबर्ग की रिपोर्ट में लगाए गए आरोपों के कारण विवादों के घेरे में हैं, सेबी की पहली महिला अध्यक्ष हैं।

वर्ष 1966 में जन्मी माधवी अप्रैल 2017 से ही सेबी के पूर्व अध्यक्ष अजय त्यागी के साथ सेबी की पूर्णकालिक सदस्य के रुप में काम कर चुकी हैं। वे पहली ऐसी शख्सियत हैं जिन्हें प्राइवेट सैक्टर से लाकर इस पोस्ट पर लगाया गया था।

वे पहली शख्स थीं, जो प्राइवेट सैक्टर से आईं और उन्हें सेबी का प्रमुख बनाया गया। इस पर काफी विवाद भी उठा और पूछा गया कि आखिर उन्हें इस सर्वोच्च पद पर लाने के पीछे किसका हाथ है।

इसी के साथ यह कहा जाना भी आवश्यक है कि सेबी अध्यक्ष के रुप में माधवी ने सिस्टम को सुचारु रुप से चलाने में और संगठन की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए उसका व्यवसायीकरण करने में अहं भूमिका निभाई थी।

- श्रीमती बुच, पहली व्यक्ति हैं, जो प्राइवेट सैक्टर से सेबी के सर्वोच्च पद पर नियुक्त हुई हैं।
- श्रीमती बुच ने सेंट स्टीफन्स कॉलेज दिल्ली से मैथमैटिक्स (गणित) में ग्रेजुएशन (स्नातक) की पढ़ाई की तथा इसके बाद आई.आई.एम. अहमदाबाद से एम.बी.ए. की शिक्षा ग्रहण की।
- अठारह वर्ष की उम्र में धवल बुच से मंगनी की, उस समय उनके भावी पति, बहुराष्ट्रीय कंपनी युनिलीवर में निदेशक थे। 21 वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद दोनों की शादी हुई
- वे कई महत्वपूर्ण पदों पर रह चुकी हैं तथा सेबी में कई नये टैक्नोज़िकल सिस्टम शुरु करवाये हैं। सेबी में ''कॉरपोरेट कल्चर'' (कोरपीटाइज़ेशन) की प्रक्रिया उन्होंने आरम्भ की।
- हिंडनबर्ग रिपोर्ट में माधवी पुरी बुच व उनके पति धवल बुच पर अडानी ग्रुप के शेयर के दाम बेहिसाब तरीके से बढ़वाने में मदद करने का आरोप लगा हुआ है।

माधवी पुरी बुच ने मुम्बई के फोर्ट कॉन्वैन्ट और दिल्ली के कॉन्वैंट आफ जीसस एण्ड मैरी से स्कूली शिक्षा पूरी की और दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से उन्होंने गणित विषय में ग्रेजुएशन किया और अहमदाबाद आई.आई.एम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

डॉ. किरोड़ी लाल मीणा फिर से मंत्री पद संभाल सकते हैं

पिछले दो दिन से आपदा प्रबंधन की स्थिति का जायजा ले रहे हैं डॉ. किरोड़ी

जयपुर, 12 अगस्त (का.सं.)। भजनलाल सरकार में मंत्री पद से इस्तीफा दे चुके किरोड़ीलाल मीणा एक बार फिर से मंत्री पद संभाल सकते हैं, जिसके संकेत अब मिलने लगे हैं। पिछले दो दिनों से किरोड़ीलाल मीणा प्रदेश में आपदा प्रबंधन की स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। वे भजनलाल सरकार में ग्रामीण विकास और आपदा प्रबंधन विभाग का जिम्मा संभाल रहे थे। मंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद किरोड़ी विभाग का कामकाज नहीं देख रहे थे। लेकिन अब अचानक किरोड़ी आपदा प्रबंधन विभाग में सक्रिय हुए हैं। रविवार को उन्होंने आपदा प्रबंधन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव आनंद कुमार से प्रदेश में भारी बारिश से उपजी स्थिति के संबंध में वार्ता की। वहीं, मंगलवार को किरोड़ी पूर्वी राजस्थान के जिलों में जलभराव वाले इलाकों का दौरा करेंगे। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ ने भी कहा कि किरोड़ी जल्द कामकाज संभालेंगे, उन्होंने भावनात्मक रूप से मंत्री पद से इस्तीफा दिया था।

- डॉ. किरोडी, भजनलाल सरकार में ग्रामीण विकास और आपदा प्रबंधन मंत्री के पद पर ही थे।
- मंगलवार को भी डॉ. किरोड़ी पूर्वी राजस्थान के जिलों का दौरा करेंगे।
- भाजपा के नए प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने भी कहा कि डॉ. किरोड़ी जल्दी ही मंत्री पद की जिम्मेवारी संभालेंगे।

गौरतलब है कि किरोड़ीलाल मीणा ने लोकसभा चुनावों में दौसा सीट नहीं जीतने पर मंत्री पद से इस्तीफा देने की बात कही थी। चुनाव में भाजपा दौसा लोकसभा सीट हार गई, जिसके बाद किरोड़ीलाल मीणा ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को अपना इस्तीफा भेज दिया। इसका खुलासा खुद किरोड़ी ने 4 जुलाई को जयपुर में एक धार्मिक कार्यक्रम के दौरान मीडिया से बात करते हुए किया था।

उसके बाद से ही किरोड़ी विभाग का कामकाज नहीं देख रहे थे। लेकिन, पिछले दो दिन से किरोड़ी प्रदेश में आपदा प्रबंधन को लेकर सक्रिय दिखाई दे रहे हैं। रविवार को किरोड़ी ने आपदा प्रबंधन के अतिरिक्त मुख्य सचिव सहित अन्य अधिकारियों से प्रदेश की स्थिति के बारे में वार्ता की। इसके अलावा, मंगलवार को वे महुवा, वैर, (श्रीनगर) बयाना, हिण्डौन, करौली, गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर में जलभराव वाले इलाकों के दौरे पर रहेंगे। इसकी जानकारी उन्होने अपने सोशल मीडिया अकाउन्ट एक्स पर भी दी।

डॉ. किरोड़ीलाल मीणा के पिछले

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सिंघानिया वि.वि. पर कार्रवाई क्यों नहीं- हाई कोर्ट

जयपुर, 12 अगस्त (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने नेशनल मेडिकल काउन्सिल (एन.एम.सी.) से मान्यता लिए बिना ही एम.बी.बी.एस. कोर्स संचालित करने वाली झुंझुंनूं की सिंघानिया युनिवर्सिटी के खिलाफ शिकायत मिलने के बाद भी राज्य सरकार की ओर से कार्रवाई नहीं करने को गंभीर माना है। इसी क्रम में अदालत ने अतिरिक्त मुख्य उच्च शिक्षा सचिव को मंगलवार को उपस्थित होकर यह

- नैशनल मैडिकल काउन्सिल से मान्यता लिए बिना ही एम.बी.बी.एस. कोर्स संचालित कर रहे झुंझुनू के सिंघानिया विश्वविद्यालय पर कार्यवाही नहीं करने को हाई कोर्ट ने गंभीर माना और राज्य सरकार से जवाब तलब किया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा व विपक्ष यू.पी. के बाय इलैक्शन ऐसे लड़ रहे हैं, जैसे अस्तित्व की लड़ाई हो

10 सीटों पर उपचनुाव हो रहे हैं उनमें से सात भाजपा व सहयोगी दलों के पास थी तथा बाकी तीन पर सपा आदि का कब्जा था

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। ऐसा प्रायः देखने में नहीं आता है कि विधानसभा उपचुनाव इतने महत्वपूर्ण मान लिये जायें, जितने उत्तर प्रदेश की 10 विधानसभा सीटों के आगामी उपचुनाव मान लिये गये हैं। लोकसभा चुनाव में लगे आघात के जख्मों को अभी भी सहला रही भाजपा ने शनिवार को राज्यव्यापी ''तिरंगा यात्रा'' शुरु कर दी, जिसका उद्देश्य हिन्दुत्व और राष्ट्रवाद के उद्घोष को और अधिक सशक्त करना है। राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ''मिशन-20'' लॉन्च कर ही दिया है, जिसके अन्तर्गत सभी दस चुनाव क्षेत्रों में से प्रत्येक की चुनाव व्यवस्था की देख-रेख के लिये दो-दो मंत्री लगा दिये गये हैं।

इसी प्रकार, कांग्रेस ने एक महीने का प्रचार अभियान शुरु कर दिया है, जो जातिगत जनगणना की उसकी माँग तथा वक्फ संशोधन विधेयक पर उसके द्वारा उठाई गई आपत्तियों पर केन्द्रित है। जहाँ तक समाजवादी पार्टी का प्रश्न है, वह अपने पी.डी.ए. मुद्दे पर जोर देने के लिये पूरे राज्य में पदयात्रा आयोजित कर रही है।

- पर, इस बार उपचुनाव में दोनों राजनीतिक ग्रुप अपनी पुरानी सीट पर जीतने के प्रयास में ही नहीं हैं, बल्कि 10-0 का स्कोर चाहते हैं।
- भाजपा लोकसभा चुनाव में पायी असफलता का कलंक धो देना चाहती है।
- इंडिया गठबंधन 10-0 का स्कोर हासिल कर यह जताना चाहता है कि लोकसभा की सफलता कोई अपवाद नहीं थी, बल्कि जनता के मूड का सही मापदंड था और यह मूड अभी भी बरकरार है।
- कांटे की टक्कर फैज़ाबाद जिले की मिल्कीपुर सीट पर है। लोकसभा चुनावों में फैजाबाद सीट पर सपा जीती थी, यह भाजपा के मुंह पर चपत था, क्योंकि इस सीट के केन्द्र बिन्दु अयोध्या में भव्य मंदिर बनवाया था, भाजपा ने।

इन 10 सीटों में से, भाजपा ने 2022 के चुनाव में 5 सीटें जीती थीं तथा इसके दो मित्र दलों ने एक-एक सीट जीती थी। शेष सीटें सपा के खाते में गई थीं। इन उपचुनावों के बारे में एक विशेष पहलू यह है कि 2022 के चुनावों में प्राप्त सीटों को अपने पास बनाये रखने की लड़ाई के बजाय, दोनों ही गठबंधन- एन.डी.ए. तथा इंडिया इन उपचुनावों को सभी चुनावी लड़ाइयों की मां मानते हुये लड़ रहे हैं। दोनों ही गठबंधन इन उपचुनावों का परिणाम 10-0 रखने के लिये संकल्पित हैं। जाहिर है, दोनों ही गठबंधनों के लिये इन उपचुनावों का राजनैतिक महत्व बहुत ही ज्यादा है। इन उपचुनावों के नतीजे से ही यह तय होगा कि योगी आदित्यनाथ राज्य के मुख्यमंत्री बने रहेंगे अथवा नहीं। वहीं, इंडिया ब्लॉक के लिये ये चुनाव इस बात का संकेत देंगे कि उसे लोकसभा में मिला लाभ वास्तविक तथा स्थायी था अथवा नहीं।

इन 10 सीटों में, सबसे ज्यादा महत्व मिल्कीपुर सीट को दिया जा रहा है। भाजपा इस सीट को जीतने के लिये

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तेलंगाना के कैब चालकों ने आंध्र के टैक्सी चालकों को भगाने की मुहिम शुरु की

तेलंगाना कैब ड्राइवर्स का मत है कि आंध्र के टैक्सी चालकों की वजह से उनकी आजीविका प्रभावित हो रही है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना दोनों राज्यों के लोग तेलुगूभाषी हैं, लेकिन तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में आंध्र के कुछ लोग टैक्सियां चला रहे हैं। आजीविका का मृद्दा गर्माने के कारण इन टैक्सी वालों से आंध्रप्रदेश जाने के लिए कहा जा रहा है।

तेलंगाना मूल के कैब चालक इस बात को लेकर परेशान है कि आई.टी. हब हैदराबाद में बाहर के वाहनों की बाढ़ आई हुई है और ये लोग उनकी आजीविका छीन रहे हैं।

आंध्रप्रदेश के विभाजन से एक लम्बे जनांदोलन के बाद दस वर्ष पूर्व तेलंगाना और आंध्रप्रदेश और 2 जून 2024 के एक समझौते के अनुसार हैदराबाद अब दोनों राज्यों की एक राजधानी नहीं रहा है और तभी से तेलंगाना के टैक्सी ड्राइवर आंध्र के टैक्सी ड्राइवर्स को राज्य से बाहर निकालने का दबाव बना रहे हैं।

स्थानीय कैब यूनियन ने राज्य सरकार से अनुरोध किया है कि वह हैदराबाद में चलने वाले अन्य राज्य के वाहनों के संचालन को रैग्युलेट करे। वास्तव में, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र और तमिलनाडू के वाहनों का परमिट लैप्स हो जाने के बावजूद ऐप आधारित शेयरिंग सर्विसेज तथा सॉफ्टवेयर फर्म्स के लिए कार्य करते पाया गया है।

स्थानीय टैक्सी ऑपरेटर्स ने कहा है कि बाहर के राज्यों की कैब्स में से ज्यादातर आंध्रप्रदेश की हैं और परिवर्तन विभाग को बाहर के वाहनों पर कार्रवाई करनी चाहिए।

- तेलंगाना के कैब ड्राइवर्स की यूनियन ने राज्य सरकार से व अन्य राज्यों के कैब ड्राइवर्स के काम काज पर सख्ती बरतने का आग्रह किया, पर, उनका निशाना आंध्र के कैब ड्राइवर्स हैं, जो उनकी ही तरह तेलुगू भाषी हैं।
- दस साल पहले जब आंध्र प्रदेश का विभाजन हुआ था और तेलंगाना व आंध्र दो राज्य बने थे तब हैदराबाद को दस साल के लिए दोनों राज्यों की राजधानी करार दिया गया था, और तब से ही दोनों तेलुगू भाषी राज्यों के कैब ड्राइवर्स अपना-अपना काम कर रहे थे।
- पर, समझौते के अनुसार, 2 जून 2024 से हैदराबाद संयुक्त राजधानी नहीं रह गया है, अब यह सिर्फ तेलंगाना की राजधानी है। तब से ही तेलंगाना के कैब ड्राइवर्स आंध्र के टैक्सी चालकों को भगाने पर तुले हैं।

अब, हैदराबाद में कार्यरत आंध्र के टैक्सी ऑपरेटर्स आंध्रप्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने यूनियन के नेताओं से बात कर अनुरोध किया है कि आंध्र के लोगों को भी हैदाराबाद में काम करने दिया जाए। इस अनुरोध पर तेलंगाना की कैब ड्राइवर्स यूनियन ने कहा कि वह आंध्र के कैब ड्राइवर्स के खिलाफ नहीं है, बल्कि उनका विरोध एग्रीगेटर कम्पनियों से हैं जो अवैध रूप से सर्विस प्रोवाइड कर रही हैं।

''तेलंगाना गिग एण्ड प्लेटफॉर्म वर्कर यूनियन'' के अध्यक्ष शाईक सलाउद्दीन ने कहा कि ''तेलंगाना में संचालित अन्य राज्य के वाहन राजकोष को प्रभावित करते हैं। त्योहारों के सीज़न में निजी वाहनों द्वारा अवैध कैब सर्विसेज बढ़ जाती हैं जिससे पंजीकृत कैब ड्राइवर्स का कारोबार प्रभावित होता है तथा यात्री सुरक्षा का भी जोखिम रहता है।''

आंध्रप्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने तेलंगाना की कैब ड्राइवर्स यूनियन से अपील की है कि वे अपने साथी तेलुगू भाषी लोगों को अपने साथ काम करने की मंजूरी दें क्योंकि दोनों तेलुगू भाषी राज्यों के विकास के लिए उनमें एकता जरूरी है। आंध्र के कैब ड्राइवर्स को हैदराबाद से चले जाने की बात कहना अनुचित है। उन्होंने तेलंगाना के कैब ड्राइवर्स से अनुरोध किया कि वे आंध्रप्रदेश के अपने भाईयों के साथ संवेदनशीलता से काम लें क्योंकि उन्हें अपने स्थान से हटाने का मतलब होगा 2 हजार परिवारों की आजीविका छीनना।

पवन कल्याण ने यह भी कहा कि वह इस समस्या के समाधान का प्रयास करेंगे और तेलंगाना सरकार के संबंधित लोगों से बात करेंगे। तेलुगू भाषी दोनों राज्यों को परस्पर सहयोग की आवश्यकता है।

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी की सुरक्षा में चूक

अजमेर, 12 अगस्त (कासं)। एक दिवसीय दौरे पर सोमवार को उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी जब अधिकारियों की बैठक लेने अजमेर के जिला कलैक्ट्रेट सभागार पहुंचीं तो उनकी सुरक्षा व्यवस्था में सेंधमारी करते हुए एक युवक बैठक में पहुंच गया। बैठक में तीनों जिले के एस.पी. और कलैक्टर सहित अन्य अधिकारी भी मौजूद थे। सुरक्षाकर्मियों ने बाद में युवक को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस युवक से पूछताछ में जुटी है।

- अजमेर कलैक्ट्रेट में मीटिंग के दौरान एक अज्ञात युवक दौड़ता हुआ आया और सभागार में घुस गया, पुलिस ने युवक को पकड़ लिया है।

जिला कलैक्ट्रेट के सभागार में सोमवार को जब उपमुख्यमंत्री दिया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जो आदमी नशे में मदहोश हो उसकी सूरत उसकी माँ को भी बुरी लगती है। –तिरुवल्लुवर

सदनों की गरिमा बनाए रखने का दायित्व सांसदों और आसन, दोनों का है

लोकसभा एवं राज्यसभा संसद के दो सदन हैं ,जहां पूरे देश से संबंधित विभिन्न विषयों पर न केवल चर्चा होती है अपितु आवश्यकता अनुसार कानून भी बनाए जाते हैं। गत कुछ वर्षों से यह अनुभव किया जा रहा है कि इन सदनों का महत्व कम किया गया है। कई बार अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों पर कानून, बिना किसी चर्चा के, शोर शराबे के बीच पारित कर दिए गए। इस कारण, जिस प्रकार की विस्तृत चर्चा सांसदों द्वारा की जानी चाहिए, वह नहीं हो पाई। यह स्थिति, संविधान के अनुच्छेद 107 की भावना के विपरीत है, जिसमें यह अपेक्षा की गई है कि कोई भी कानून तब ही पारित होगा, जब सदन की उस पर सहमति हो। सहमति का अर्थ यही है कि विधेयक, सदस्यों को समय पर प्राप्त हो ताकि वे उसका अध्ययन कर सकें एवं चर्चा में भाग ले सकें। लोकसभा में किसानों से संबंधित तीन कानून शोर शराबे में बिना चर्चा के पारित कर दिए गए थे। बिना चर्चा के कानून पारित करने का परिणाम यह हुआ कि उठा किसान आंदोलन हुआ जो लंबा चला एवं सरकार के पूरे दमन के बावजूद इन तीनों कानूनों को सरकार को पुनः वापस लेना पड़ा। इस अटपटी स्थिति से बचा जा सकता था, यदि विपक्ष के सदस्यों द्वारा भी इन कानूनों के गुणअवगुण पर गहन चर्चा होती एवं इनके संभावित प्रभाव का समुचित आकलन करने का अवसर मिलता।

उल्लेखनीय है कि लोकसभा के अध्यक्ष एवं राज्यसभा के सभापति, दोनों से यह अपेक्षा होती है कि वे पूर्णतया निष्पक्षता के साथ कार्य करेंगे एवं सत्ता पक्ष के साथ ही, विपक्ष के सांसदों को भी अपनी बात रखने का पर्याप्त अवसर देंगे। उन्हें विभिन्न प्रकार के विषय उठाने और उन पर चर्चा करने का अवसर भी प्रदान करेंगे। आसन का काम यह देखने का कतई नहीं है कि सदस्य अपने भाषण में क्या कहते हैं। उनका काम केवल यह सुनिश्चित करना है कि भाषा की मर्यादा बनी रहे। प्रतिपक्ष के सांसद, सरकार की कितनी भी कड़ी आलोचना क्यों न करें, आसन को उससे विचलित नहीं होना चाहिए और न ऐसा करने पर ,उन्हें रोका जाना चाहिए। यह सही है कि लोकसभा अध्यक्ष या राज्यसभा के सभापति (उपराष्ट्रपति ही, राज्यसभा के सभा पति होते हैं) , चुने जाने से पूर्व सामान्यतया, सत्ताधारी राजनीतिक दल के सदस्य होते हैं, किंतु एक बार जब वे इस आसन पर चुन लिए जाते हैं तो उनकी भूमिका एक निष्पक्ष व्यक्ति की हो जाती है। लोकसभा और राज्यसभा में अध्यक्ष और सभापति का आसन भी न्यायाधीशों की तरह ही बहुत ऊंचा होता है। उनसे यह अपेक्षा होती है वह कम से कम बोलें और अधिकतर समय विभिन्न दलों के सदस्यों को किसी भी विषय पर बोलने के लिए अवसर प्रदान करें। ऐसा करते समय उन्हें सत्ताधारी दल के साथ किसी प्रकार का पक्षपात नहीं करना चाहिए और स्वयं की विचारधारा के आधार पर सदस्यों के प्रति व्यवहार नहीं करना चाहिए। उनका कार्य सभी सदस्यों के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा, समान रूप से करने का है।

2014 से 2019, विशेषकर 2019 के चुनाव के बाद दोनों सदनों में भाजपा का अच्छा खासा बहुमत रहा। इसलिए आसन के पक्षपात पूर्ण निर्णय के विरुद्ध विपक्षी दल कोई मजबूत आवाज नहीं उठा पाए थे। जब भी उन्होंने आवाज उठाई, आसान ने संबंधित सांसदों को सत्ताधारी दल से प्रस्ताव आमंत्रित कर निलंबित तक कर दिया। स्थिति यहां तक हो गई कि लोकसभा में एक समय 146 सांसद निलंबित थे। इन्हीं के निलंबित रहते हुए, सरकार ने कई विधाई कार्य भी निपटा लिए और नए कानून भी बना लिए। आसन का यह व्यवहार,लोकतंत्र की भावना के अनुकूल नहीं कहा जा सकता। कार्य और व्यवहार, दोनों की दृष्टि से आसन पर बैठे इन दोनों व्यक्तियों ने स्वयं को निष्पक्ष, स्वतंत्र एवं निर्भीक सिद्ध नहीं किया है। कई बार यह देखा गया कि विपक्ष द्वारा अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की मांग करने पर उन्हें आसान द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है। यह शायद इसलिए किया जाता है कि सत्ताधारी दल ऐसा नहीं चाहता।

अब, 2024 में चुनाव के बाद स्थिति वैसी एक तरफा नहीं रही है। भाजपा द्वारा तेलुगू देशम पार्टी, जनता दल (यू) एवं अन्य छोटी पार्टियों के सहयोग से एनडीए की सरकार चलाई जा रही है। भाजपा के लोकसभा में 240 सदस्य हैं जो बहुमत से 32 कम हैं। विपक्ष, संख्या बल में मजबूत हुआ है और उसने आक्रामक रवैया भी अपनाया है। ऐसे दृश्य संसद में देखे गए जब आसन की, विपक्षी सांसदों, विशेषकर कर कांग्रेस के सांसदों से कड़ी तकरार हुई और कई बार ऐसी भाषा का प्रयोग किया गया जो संसद की गरिमा के अनुकूल नहीं थी। इसके लिए जिम्मेदार ,केवल विपक्ष के सदस्य ही नहीं माने जा सकते, अपितु सत्ताधारी दल का रवैया भी आसन के समर्थन से विपक्षी सांसदों को अपमानित करने का ही रहा है। राज्यसभा के सभापति द्वारा कई बार ऐसे बयान दिए जाते हैं, जिनसे लगता है वे सत्ताधारी दल के एहसान तले दबे हैं। वे सरकार का यशोगान करने से भी नहीं चूकते। उनका ऐसा आचरण आसन की मर्यादा के अनुकूल नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार, सत्ताधारी पक्ष के समर्थन में आसन की अभिव्यक्ति, उनके निष्पक्ष होने पर संदेह उत्पन्न करती है।

संसद की गरिमा बचाए रखने का दायित्व केवल प्रतिपक्ष के सदस्यों पर ही नहीं है अपितु सत्ता और प्रतिपक्ष, दोनों पर है, और इसे सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी आसन की है। इन्हें अपनी पुरानी दलीय संबद्धता से ऊपर उठकर, स्वतंत्र और निर्भीक रूप से सदनों को संचालित करना होगा ताकि सदन की गरिमा बनी रह सके।

जिस प्रकार मल्लिकार्जुन खड़गे जैसे वरिष्ठ कांग्रेसी सदस्य और राज्यसभा में प्रतिपक्ष के नेता पर केवल उनके नाम के आधार पर वंशवाद का आरोप लगा दिया, वह कतई मर्यादा पूर्ण नहीं था। इसका विरोध करने पर उन्हें बोलने तक नहीं दिया गया एवं उन्हें एक प्रकार से डांट-डपट कर बिठा दिया गया। विपक्षी सांसद ,चाहे वे कांग्रेस के हों, समाजवादी पार्टी के, तृणमूल कांग्रेस के अथवा आम आदमी पार्टी के, सभी के प्रति आसन का व्यवहार एवं आचरण कतई निष्पक्ष नहीं दिखाई देता।

हाल ही में जया बच्चन , जो कि राज्यसभा की पुरानी वरिष्ठ सदस्य हैं, को संबोधित करते हुए राज्यसभा के सभापति ने यहां तक कह दिया वे कलाकार हैं और कलाकार को डायरेक्टर के निर्देशानुसार कार्य करना होता है। क्या वे यह कहना चाह रहे थे कि सदन के सदस्यों को डायरेक्ट करने का काम सभापति का है? ऐसा करके उन्होंने सदस्यों के सम्मान को कम ही किया है। राज्यसभा के सभापति द्वारा कई बार लंबे-लंबे भाषण दिए गए हैं। इन भाषणों में सामान्यतया विपक्षी दलों और कुछ नेताओं की कड़ी आलोचना की जाती है एवं ऐसा बताने का प्रयास किया जाता है जैसे सदन में गतिरोध केवल विपक्षी सदस्यों द्वारा ही उत्पन्न किया जा जाता है। संसदीय नियम, प्रक्रियाएं सब पर समान रूप से लागू होनी चाहिएं। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हीं नियम प्रक्रियाओं का अर्थ, सत्ताधारी दल और विपक्षी सांसदों के संदर्भ में अलग अलग निकाला जाता है। उदाहरण के लिए, जैसे विपक्षी दलों के भाषणों में कही गई हर बात को सत्यापित करने के लिए आसन द्वारा कहा जाता है, जबकि सत्ताधारी दल के सांसद के साथ ऐसा व्यवहार अधिकांशतया नहीं होता है। नियमानुसार सत्यापन दस्तावेज को सत्यापित करने की आवश्यकता है, जिसे सदन के पटल पर किसी सदस्य द्वारा अपने भाषण के दौरान रखा जाये।

सदन की कार्यवाही आजकल संसद टी वी के माध्यम से सीधी प्रसारित की जाती है। देश के सभी नागरिकों को सदन में क्या हो रहा है यह सीधे देखने का अवसर मिलता है। विपक्षी दलों के इस आरोप में सच्चाई है कि जब भी विपक्षी दल किसी भी विषय पर अपना विरोध कर रहे होते हैं अथवा कोई नारेबाजी कर रहे होते हैं, तो विपक्षी दलों की ओर कैमरा नहीं होता एवं केवल सत्ताधारी दल के सदस्यों को ही दिखाया जाता है। यह भी एक प्रकार से पक्षपात पूर्ण कार्यवाही ही है। सीधे प्रसारण का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है जब कार्रवाई एक तरफा दिखाई जाये। सदस्यों के भाषण के अंश, कई बार आसन द्वारा कार्यवाही से हटा दिए जाते हैं। ऐसा करते समय भी आसन द्वारा सत्ताधारी दल के सांसदों के भाषण के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया जाता है और विपक्षी दलों के भाषणों, विशेषकर विपक्ष के नेता राहुल गांधी के भाषण के अधिकांश अंशों को सदन की कार्यवाही से निकाल दिया गया।

राज्यसभा के सभापति द्वारा बार बार यह कहना कि "nothing will go on record" अजीब लगता है। सदन की कार्रवाई के संचालन की जिम्मेदारी अध्यक्ष अथवा सभापति की होती है, जिसे चुनौती नहीं दी जा सकती। विपक्षी दलों के पास केवल एक ही विकल्प बचता है कि वे कार्यवाही का बहिष्कार करें और वह ऐसा करते भी हैं ,किंतु ऐसा कदम उठाने से संवाद और बहस की संभावना पूरी तरह समाप्त हो जाती है। अभी हाल ही में राज्यसभा में जब विपक्ष के सांसद, आसन के व्यवहार के प्रति अपनी आपत्ति दर्ज कराते हुए वॉक आउट कर गए, तो उसके बाद राज्यसभा के सभापति ने, सत्ताधारी दल के प्रस्ताव पर विपक्षी दलों के विरुद्ध निंदा प्रस्ताव पारित कर दिया।

विपक्षी दलों के नेताओं , विशेष कर प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बोलते समय उनका माइक बंद करने की बात कई बार उठाई। टीवी पर जो लोग इसका प्रसारण देख रहे होते है, उन्हें स्पष्ट रूप से लगता है कि माइक को तब बंद कर दिया जाता है जब वह सरकार के विरुद्ध कोई ऐसी बात कर रहे थे, जिससे सरकार असहज महसूस करे। आपत्ति करने पर अध्यक्ष और सभापति का केवल एक ही कहना होता है कि माइक उनके द्वारा ांद नहीं किया जा सकता। ऐसा कहकर, वे अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकते क्योंकि सदन की पूरी कार्यवाही को सुचारू रूप से संचालित करने का दायित्व उन्हीं पर है। उनके सचिवालय का पूरा स्टाफ भी उन्हीं के अधीन होता है। यदि किसी ने उनके निर्देशानुसार कार्य नहीं किया तो फिर उसके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई अब तक क्यों नहीं की गई? सबसे बड़ी समस्या तो यही है कि विपक्षी दलों को महत्वपूर्ण प्रश्न उठाने की अनुमति नहीं दी जाती।

उदाहरण के लिए, विनेश फोगाट को ओलंपिक से अयोग्य घोषित कर दिया गया, तो जिन परिस्थितियों में ऐसा किया गया, उस पर चर्चा हेतु स्थगन प्रस्ताव विपक्षी सांसदों द्वारा दिया गया, किंतु उसे स्वीकार नहीं किया गया। कुल मिलाकर, लगता यही है कि संख्या बल बढ़ने के बावजूद विपक्षी दल कुछ करने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं और उनकी आवाज को दबाने में सत्ताधारी दल का साथ, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आसन के द्वारा दिया जा रहा है। इसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ही कहा जा सकता है। आशा यही है कि किसी दिन आसन पर बैठे अध्यक्ष और सभापति की अंतरात्मा जागे और उन्हें यह एहसास हो कि उनकी जिम्मेदारी विपक्ष के अधिकारों की रक्षा करने की भी उतनी ही है, जितनी सत्तापक्ष के अधिकारों की। यदि ऐसा नहीं हो पाया तो यह लोकतंत्र की सबसे बड़ी पंचायत अर्थात संसद की गरिमा को ठेस पहुंचाने जैसा ही होगा। संसद की गरिमा बचाए रखने का दायित्व केवल प्रतिपक्ष के सदस्यों पर ही नहीं है अपितु सत्ता और प्रतिपक्ष, दोनों पर है और इसे सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी आसन की है। इन्हें अपनी पुरानी दलीय संबद्धता से ऊपर उठकर, स्वतंत्र और निर्भीक रूप से सदनों को संचालित करना होगा ताकि सदन की गरिमा बनी रह सके।

क्या है लव जिहाद और इस पर क्यों इतनी तीखी बहस?

महावीर सिंह

आजकल समाचारों में व सामान्य रूप से कुछ वर्गों के लोगों में लव जिहाद पर चर्चा-बहस सुनने को मिलती है। मुख्यतः पॉलिटिशियन कहलाए जाने वाले जीवों में इसके पक्ष व विपक्ष में भयंकर जिद्दोजहद सुनने को मिलती है। ऐसी तुमुल बहसें को 24 घण्टे चलने वाली टीवी चैनल्स पर सुनाई पड़ती है मानों कि संसार का सबसे प्रमुख चिंता का विषय यही होना चाहिए। लव का सामान्य समझ वाला अर्थ है प्रेम। सभी प्रमुख धर्मों का यह सर्वोत्तम उपदेश यही है जिस में मनुष्यों को प्रेम व सद्भाव से रहने का आव्हान किया जाता है।

प्रेम एक अहसास है जो दिल से वास्ता रखता है। हम माता, पिता, भाई, बहन, पत्नी, बेटा, बेटी, परिवार जनों को प्रेम करते है उसमें दिमाग से निर्णय की जरूरत नही। हमे हमारे साथ, आसपास रहने वाले पशु-पक्षियों से भी प्रेम हो जाता है। इन सब मे हानि, लाभ, निन्दा, डर आदि की कोई जगह नहीं। यह सब दिमाग का कार्य क्षेत्र है। प्रेम के अहसास में इनका स्थान ही नहीं, यह दिल का कार्य क्षेत्र है।

कुछ समय पूर्व तक और कहीं-कहीं अब भी, अंतरजातीय विवाहों भारी बबाल होता है। कई हिंसक घटनाएं हुई है और कुछ प्रेमी जोड़ों को मौत के घाट उतार दिया गया, गांव बदर कर दिया गया, जाती से -समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। इस प्रकार की सारी घटनाएं परिभाषित अपराध है। इस प्रकार की अधिकतर घटनाएं हिन्दू समाज में होती है, इसलिए इन्हें कोई जिहाद जैसे विशेषण से नहीं बताया जाता।

विवाह क्या है, कैसे सम्पन्न होते हैं? विवाह का निर्णय सामान्य रूप से माता-पिता व नजदीकी परिवार जन द्वारा लिया जाता रहा है। अब इसमें अधिकतर मामलों में लड़के और लड़की को भी एक दूसरे से मिलाया जाता है और उनकी सहमति भी ली जाती है। यह सब शिक्षा से हुई जागृति के कारण हुआ है। रोजगार के प्रकार, स्थान, वेतन, आय आदि भी विवाह के निर्णय से पूर्व अहम हो गए हैं। इसमें प्रेम के अहसास की एंट्री शादी के बाद होती है।

एक अन्य प्रकार है प्रेम विवाह। शादी पूर्व लड़के-लड़की की विभिन्न कारणों से यथा एक जैसी शैक्षणिक योग्यता, जॉब,एक स्थान पर रहवास, मित्रता, आकर्षण आदि के चलते स्वयं ही शादी फैसला कर लेते है। इसका ज्यादा प्रचलन वाला नाम है, लव मैरिज। लव मैरिज वाले जोड़े एक जाति अथवा भिन्न-भिन्न जातियों वाले व भिन्न-भिन्न धर्मों में आस्था रखने वाले हो सकते है। अधिकांसतः, एक जाती अथवा भिन्न जातियों वाले जोड़ों के मामलों में उनके परिवार, रिश्तेदार, समाज प्रारंभिक हिचक के बाद स्वीकृति दे देता है। जहां स्वीकृति नहीं मिलती वहां कोर्ट मैरीज, आर्य समाज की विधि के अनुसार या किसी मंदिर के पुजारी के समक्ष शादी की विधिक औपचारिकताएं पूरी कर लेते हैं। कहीं-कहीं, ऐसे मामलों में पुलिस प्रोटेक्शन की आवश्यकता भी पड़ती है। असली झगड़ा भिन्न धर्मों में आस्था रखने वाले जोड़ों की शादियों में उतपन्न होता है। यदि शादी हिन्दू-सिख,-जैन-बौद्ध-पारसी-ईसाई धर्म में आस्था रखने वाले जोड़ों की हो तो कोई ज्यादा बबाल नहीं मचता। यदि शादी के जोड़े में लड़की मुस्लिम हो, लड़का हिन्दू-जैन आदि आस्था वाले हों तो भी, समाज के स्वयम्भू ठेकेदारों की ओर से कोई बड़े पैमाने पर तीखी बयान बाजी, खुले आम उनको अपमानित करने की घटनाएं अपवाद स्वरूप ही सुनी जाती है।

यदि लड़की हिन्दू माता-पिता की संतान हो और बड़े धनाढ्य, समाज में किसी बड़ी प्रकार की हैसियत रखने वाले हो जैसे बड़े बिजनेसमैन, उद्योगपति, सेलेब्रिटी, बड़ा राजनेता आदि और लड़का मुस्लिम हो तो भी, समाज का ठेकेदार बानेर विभिन्न नामों से घूमने वाली ब्रिगेड्स द्वारा कोई विशेष बयानबाजी, तोड़फोड़ नहीं होती। किन्तु इसके विपरीत, यदि लड़की हिन्दू संस्कारों में आस्था रखने वाली, गरीब या अल्प या मध्यम आय वर्ग परिवार से हो और लड़का मुस्लिम हो तो धर्म के ठेकेदार, समाज के पंच पटेल लड़की और उसके परिवार वालों का गांव, मोहहल्ले में विभिन्न प्रकार की उलूल जुलूल कार्यवाहियों, सार्वजनिक प्रताड़नाओं से जीना हराम कर देते है। ताने, बयान बाजी से आगे उन्हें आर्थिक दण्ड या समाज बहिष्कार का दंड फरमान भो सुना दिया जाता है।

सामान्य निष्कर्ष यह है कि अंतर धार्मिक विवाहों पर अमीर, हैसियत वालों को कोई समाजिक बहिष्कार का व अन्य सामाजिक दण्डों का सामना नहीं करना पड़ता। यह सब गरीब व निम्न व मध्यम आय के परिवारों या अति रूढ़िवादी समाज के लोगों के लिए ही है।

किन्तु अंतर धार्मिक विवाहों के कुछ डरावने पक्ष भी है। कई बार यह सुननें में आता है की मुस्लिम लड़के नें अपनी सही पहचान गलत इरादों से छुपाई यथा अपना धर्म, जाती, निवास स्थान, रोजगार आदि छुपाया और किसी मंदिर में शादी कर ली या कोर्ट में शादी कर ली। इस प्रकार के सारे कृत्य कानून में परिभाषित अपराध है और सामान्य रुप से भी, बिना इन्हें धार्मिक रंग दिए, पुलिस स्टेशन पर जाकर मुकदमा दर्ज कराया जा सकता है । कुछ मामलों में लड़की को धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य करने के प्रयास होते है और यह भी अपराध है ।। आइए अब इस विचार करें कि जिहाद क्या है और लव जिहाद क्या है? जिहाद एक अरबी शब्द है जिसका सामान्य अर्थ है- किसी अच्छे, प्रशंसनीय कार्य के लिए किए गए प्रयास।इस्लाम में इसका एक अर्थ यह भी होता है कि किसी धार्मिक कार्य के लिए संघर्ष भी है। एक अन्य अर्थ यह भी--आध्यात्मिकता के लिए व्यक्तिगत जिद्दोजिहाद। आत्मरक्षा के लिए सामूहिक संघर्ष। इन सब व्याख्याओं में मुस्लिम, हिन्दू लड़के-लड़कियोज प्रेम, विवाह पर बंदिस की कहीं कोई बात नहीं।

लेकिन कुछ व्याख्याकार धार्मिक ग्रन्थों का हवाला देकर, इसका यह भी अर्थ निकालते है--काफिरों के खिलाफ धर्म रक्षा के लिए पवित्र युद्ध। इस्लाम के अनुयायियों के संरक्षण, व प्रसार के लिए युद्ध। यह सब आध्यात्मिक धर्म से अलग इस्लाम के नाम पर लोगों के राजनीतिक, प्रभुत्व स्थापित करने वाले औजार है। वास्तविक धर्म से इनका कोई सम्बन्ध नहीं।ओर यह केवल इस्लाम में हो यह भी नहीं। ईसाई, हिन्दू व अन्य कई धर्मों को भी राजनीतिक औजार बनाया जाता रहा है और बनाया जा रहा है। यह लव जिहाद भी वैसा ही एक औजार है। हिंदुस्तान में लव जिहाद एक राजनीतिक नारा बन चुका है। इसे इन आधारों पर तराशा जाता है:-- हिन्दू धर्म और संस्कृति खतरे में है-- मुसलमानों की जनसंख्या बेहताशा बढ़ रही है तथा ओर बढ़ेगी--हिन्दू लड़कियों को सही पहचान छुपा कर या गलत जानकारियां देकर शादी के लिए फंसाने वाले अधिकतर मुस्लिम युवक अपराधी किस्म के है--हिन्दू लड़कियों को झांसा या प्रलोभन देकर इस्लाम कुबूल कराया जाता है- इसलिए हिन्दू लड़कियों को मुसलमान युवकों से शादी करने से हर प्रकार से रोकेंगे। अरे भाई लोगों इसके लिए रेस्टोरेंट्स में जाकर हंगामा करने, इस प्रकार के साल में 5, 10 जोड़ों की मार पिटाई करने व अन्य इसी प्रकार के असभ्य तरीके अपनाने के बजाय, थानेदार-डिप्टी एसपी, एसपी से मिल कर, कानूनी कार्यवाही क्यों नहीं करते? अरे नहीं भाई, इससे हमें क्या लाभ, हमारी राजनीति या यों कहें टुच्ची दादागिरी कैसे चमकेगी। हम तो कानून बनवाके मानेंगे की हिदू लड़की का मुसलमान लड़के से विवाह गैर कानूनी व सज्जा योग्य अपराध है--ठीक है, किन्तु यह तो गैर संवैधानिक होगा----तो क्या संविधान नहीं बदलता क्या?! जय राम जी की, कितना मिठास भरा सम्बोधन, अभिवादन जो सदियों से हमारे पुरखे काम में लेते रहे और अब--?

–महावीर सिंह,
पूर्व आईएए स

कब्स बुलबुल हीरक पंख एवं स्वर्ण तीर बैज प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन

जयपुर। केन्द्रीय विद्यालय संगठन राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, जयपुर मण्डल के तत्वाधान में पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 07 जयपुर में सोमवार को त्रिदिवसीय कब्स एवं बुलबुल हेतु चतुर्थ चरण हीरक पंख एवं स्वर्ण तीर बैज प्रशिक्षण शिविर 2024 का प्रारंभ हुआ। राज्य स्तरीय इस आयोजन में केन्द्रीय विद्यालय संगठन, संभागीय कार्यालय-जयपुर के अधीन 21 केन्द्रीय विद्यालयों के 302 नन्हें मुन्ने कब्स एवं बुलबुल ने प्रतिभागिता हेतु उपस्थिति दर्ज की। रविवार सांयकाल से ही अपने अनुरक्षक शिक्षकों के साथ राज्य स्तरीय प्रशिक्षण शिविर में आये इन नन्ने कब्स एवं बुलबुल का स्वागत इंद्रदेव ने रिमझिम फुहारों से किया। सोमवार प्रातःकाल उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. पंकज कुमार, कमान्डेंट, 8वीं आरक्षित वाहिनी, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, जयपुर के विद्यालय आगमन पर पारम्परिक तरीके से साफा एवं माल्यार्पण स्वागत किया।

उद्घाटन समारोह में अतिथियों का स्वागत किया गया।

विद्यालय के कब्स एवं बुलबुल द्वारा चकरी स्वागत एवं बुलबुल स्वागत ने उपस्थितजन के ह्रदय को विभोर कर दिया। प्राचार्य डॉक्टर दर्शन लाल मीना की अगवानी में मुख्य अतिथि ने माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन कर आशीष लिया तत्पश्चात लार्ड एवं लेडी बेडेन पावेल के आवक्ष पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का विधिवत प्रारंभ हुआ। पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 07 के विद्यार्थियों द्वारा स्वागत गीत झूम झूम हर कली बार बार कह चली के साथ आगंतुकों का स्वागत किया गया। वहीं दूसरी ओर राजस्थानी नृत्य- माथे साजे बोरलो पगां में पायल बाजणी ने उपस्थित जनमानस का ह्रदय मोह लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. पंकज कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम से विद्यार्थी नैतिकता, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनेंगें। स्तर दर स्तर आत्मनिर्भरता, टीमवर्क, और सेवा भाव के गुणों के विकास की नींव इन्ही कार्यक्रमों से विकसित होनी तय है। विद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर दर्शन लाल मीना के अनुसार स्काउटिंग का आदर्श वाक्य ''सदैव तत्पर'' हमें हर स्थिति में तैयार रहने की प्रेरणा देता है। सदैव तत्परता का यह भाव जीवन कौशल के संवर्धन में महत्ती भूमिका निर्वहन करता है। इस त्रिदिवसीय आवासीय शिविर में विद्यार्थी नैतिक विकास,नेतृत्व क्षमता, सामाजिक जिम्मेदारी, शारीरिक विकास, जीवन कौशल के गुर भी सीखेंगे जो जीवन पर्यंत काम आयेंगे।

राज्य स्तरीय इस कार्यक्रम में गिरिराज प्रसाद मीना मुख्य पर्यवेक्षक ने त्रिदिवसीय कार्यक्रम की विस्तृत रुपरेखा प्रस्तुत की जिसमें कब्स एवं बुलबुल द्वारा अगले तीन दिनों में की जाने वाली गतिविधियों का विस्तृत मार्गदर्शन निहित था। गतिविधियों के सहज एवं सरल सञ्चालन हेतु जितेन्द्र सिंह एलओसी, केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 02, आर्मी जोधपुर, संजीव कुमार चौहान, मुख्य परीक्षक कब्स, केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 02, आर्मी जोधपुर, विजय कपुरिया, परीक्षक कब्स केन्द्रीय विद्यालय नसीराबाद, ब्रिजेश तलवार, परिक्षक कब्स केन्द्रीय विद्यालय लालगढ़ जाटान, राजकुमारी गुलपहाडिया, एलओसी, बुलबुल केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 03, कविता मीना, मुख्य परिक्षक, बुलबुल केन्द्रीय विद्यालय अलवर, गरिमा गुप्ता, परिक्षक, बुलबुल, केन्द्रीय विद्यालय, भरतपुर ने चयनकर्ताओं, प्रशिक्षकों के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज की।

■ पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक सात में त्रिदिवसीय शिविर शुरु

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय के स्काउट कवार्टर मास्टरकमल मीना, कब्स प्रभारी विनोद नामा बुलबुल प्रभारी स्वाति गोगना, स्काउट प्रभारी सुल्तान मीना गाइड प्रभारी मंजु मीना एवं सपना वर्मा अनुराधा मीना मोनिका गुप्ता जालिम सिंह मीना नीरू चड्ढा एवं साधना चौबे ने त्रिदिवसीय कार्यक्रम हेतु अपने प्रभारों हेतु की गई तेयारियों की जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के अंत में श्री राम नारायण मीना द्वारा उद्घाटन कार्यक्रम की सफलतम सिद्धि में जुटे समस्त शिक्षकगण एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त कर धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का सफलतम संचालन राजेश रॉय सामतानी व्याख्याता हिंदी एवं अंजु चौधरी अंग्रेजी द्वारा किया गया। प्राचार्य डॉक्टर दर्शन लाल मीना द्वारा डॉ. पंकज कुमार, कमान्डेंट 8वीं आरक्षित वाहिनी, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, जयपुर का स्वागत। प्राचार्य डॉक्टर दर्शन लाल मीना एवं मुख्य अतिथि डॉ. पंकज कुमार, कमान्डेंट 8वीं आरक्षित वाहिनी, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, जयपुर लार्ड एवं लेडी बेडेन पावेल के आवक्ष पर माल्यार्पण।

राशिफल मंगलवार 13 अगस्त, 2024

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, विशाखा नक्षत्र दिन 10:44 तक, ब्रह्म योग सांय 4:33 तक, बव करण प्रातः 9:32 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 10:44 से आरम्भ होगा। आज दुर्गाष्टमी, भौमाष्टमी, मंगला गौरी पूजा और मेला नयना देवी और चित्यपूर्णी है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:16 से 10:54 तक, लाभ-अमृत 10:54 से 2:09 तक, शुभ 3:47 से 5:24 तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6मे:01, सूर्यास्त 7:02

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

सिंह
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आय में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सार-समाचार

विजय नंदवाना ने एस.डी.पी. डोनेट की

कोटा, (निसं)। टीम जीवनदाता निरंतर जीवनदायिनी बनते हुए लोगों की मदद कर एसडीपी व रक्त उपलब्ध करा रही है। ऐसे में निजी अस्पताल में भर्ती मरीज जोगिंदर सिंह की प्लेटलेट नहीं बढ़ रही, उन्हें लगातार एसडीपी चढ़ाई जा रही है। इससे पूर्व भी चिकित्सक उन्हें एसडीपी चढ़ा चुके हैं। एक बार फिर उन्हे, ए पॉजिटिव एसडीपी की आवश्यकता महसूस की गई, उनके परिजन सीधा अपना ब्लड सेंटर तलवंडी पहुंचे, और एसडीपी के लिए गुहार लगाई। उन्हें आश्वस्त किया कि शीघ्र ही उनकी व्यवस्था हो जाएगी। टीम जीवनदाता के संरक्षक व संयोजक भुवनेश गुप्ता ने बताया कि ऐसी स्थिति में श्याम भक्त विजय नंदवाना को कॉल किया और उन्हें मरीज की गंभीर अवस्था के बारे में बताया। वह लंच कर करने जा रहे थे, लेकिन वह ऑफिस में सैफ के साथ बेहद जरूरी कार्य में व्यस्त थे, किंतु दर्द के सामने वो तुरंत दौड़े आए और अपना ब्लड सेंटर पहुंचे और 16वीं बार एसडीपी डोनेट की। वह से पूर्व 20 बार ब्लड डोनेशन कर चुके हैं नंदवाना का कहना है कि श्याम धणी हारे का सहारा बने थे, हमें भी जरूरतमंद का सहारा बनना चाहिए। वे सदेव ईश्वर के पुण्य प्रताप को बखूबी मानते है और स्वयं प्रयास करते है कि किसी को जरूरत हो तो दूसरे का दुख मिटाने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए।

नशा मुक्ति की शपथ ली

कोटा, (निसं)। एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट अपने सामाजिक सरोकारों के लिए संकल्पित है। समय-समय पर विभिन्न गतिविधियां के माध्यम से विद्यार्थियों में जागरूकता लाई जाती है। इन्हीं प्रयासों के तहत अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर नशा मुक्त भारत अभियान के तहत शपथ ग्रहण कार्यक्रम किए गऐं। एलन के निदेशक डॉ.नवीन माहेश्वरी ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के मंत्री डॉ.वीरेन्द्र कुमार के निर्देशन में देशभर में नशा मुक्त भारत अभियान सोमवार को आयोजित किया गया। एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट ने इस अभियान में सक्रिय भूमिका निभाते हुए विद्यार्थियों को नशा मुक्ति के लिए जागरूक किया। एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट में करीब 3.25 लाख विद्यार्थियों को नशा मुक्ति के लिए शपथ दिलाई गई। एलन के देशभर के 64 शहरों के स्टडी सेंटर्स पर इंजीनियरिंग व मेडिकल प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी करने वाले करीब 3.25 लाख विद्यार्थियों को शपथ दिलवाई गई। विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने के साथ-साथ अपने आस-पास वालों को भी नशा करने से रोकने का प्रयास करने का संकल्प दिलवाया गया।

कोटा नागरिक सहकारी बैंक लि. बोरखेडा शाखा नए परिसर में स्थानांतरित

कोटा, (निसं)। कोटा नागरिक सहकारी बैंक लि.कोटा की बोरखेड़ा शाखा को स्थानांतरित कर सोमवार को बालाजी की बगीची के पास बोरखेड़ा, बारां रोड़ पर लोकार्पण किया गया। बैंक प्रबंध निदेशक बिजेन्द्र कुमार शर्मा ने बताया कि लोकापर्ण समारोह के मुख्य अतिथि बैंक अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला रहे। उन्होंने भगवान, गणपति व महालक्ष्मी पूजन के साथ रिबन काट कर बैंक का लोकार्पण किया। लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए बैंक अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला ने कहा कि वर्ष 2011 से संचालित बैंक शाखा बोरखेड़ा इस नवीन परिसर मे अपने पुराने विश्वास व पारदर्शिता के साथ बैंकिंग कार्य करेगी और नागरिक सहकारी की विभिन्न योजनाओं से जनता को लाभान्वित करती रहेगी। बिरला ने बताया 13 वर्षो से यह शाखा अनवरत कार्य कर रही है ऐसे में बैंक के बढ़ते आकार,सदस्य व कार्यों के लिए नवीन परिसर की आवश्यकता थी जिसे आज पूरा किया गया है।

नशा युवा पीढ़ी के लिए घातक, इसे छोड़ने के लिए युवा दृढ़ संकल्प लेवें

कोटा, (निसं)। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा में नशामुक्त भारत अभियान (विकसित भारत का मंत्र, भारत हो नशे से स्वतंत्र) के संदर्भ मे महानिदेशक, ड्रग्स रोकथाम, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, भारत सरकार के निर्देशानुसार नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत नशा मुक्ति शपथ कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें कुलपति प्रो.एसके सिंह ने शिक्षकों कर्मचारीयों एवं छात्रों को शपथ दिलाई। सह-जनसंपर्क अधिकारी विक्रम राठौड़ नें बताया की आयोजन का मुख्य उद्देश्य युवाओं में नशे के दुष्परिणाम के प्रति जागरूक करना था। कुलपति नें अपने उद्बोधन में सभी को नशे से दूर रहने की अपील की। किसी एक व्यक्ति की नशे की लत से पूरा परिवार और समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

'तिरंगा देशभक्ति की भावना जगाता है'

कोटा, (निसं)। भाजपा के शीर्ष नेतृत्व के आव्हान पर कोटा शहर में जिलाध्यक्ष राकेश जैन के नेतृत्व एवं भाजपा युवा मोर्चा के सहयोग से हर घर तिरंगा अभियान की शुरूआत हुई। कार्यक्रम संयोजक रितेश चितौड़ा ने बताया कि शीर्ष नेतृत्व के निर्देश पर 12 से 15 अगस्त तक स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में कार्यक्रमों की वृहद् श्रृंखला बनाई गई है। ार्यक्रम सहसंयोजक कीर्तिकान्त गोयल ने बताया की कार्यक्रमों की श्रृंखला में भाजपा कोटा शहर के नेतृत्व में सरस डेरी शिवपुरा कोटा दक्षिण विधानसभा से भाजपा युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष सुदर्शन गौतम, सहसंयोजक राहुल सिकरवार, के सानिध्य में भाजपा कार्यकर्ता तिरंगा बाईक रैली के माध्यम से शहीद स्मारक अण्टाघर चौराहे पर एकत्रित हुए।

शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

कोटा, (निसं)। राजकीय महाविद्यालय कोटा में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत् विकसित भारत का मंत्र भारत हो नशे से स्वतंत्र की थीम पर शपथ समारोह महाविद्यालय प्राचार्य डॉ.प्रतिमा श्रीवास्तव के निर्देशन में किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्य द्वारा बताया गया कि नशा देश एवं समाज के लिए अभिशाप है। इससे मुक्त होकर ही समाज व नई पीढ़ी देश को उन्नति की और ले जा सकेगी। इस अवसर पर प्रभारी डॉ.सविता गुप्ता द्वारा महाविद्यालय को पूर्णतया ध्रुम्रपान/तम्बाकू मुक्त एवं नशा मुक्त करने की घोषणा की। शपथ ग्रहण समारोह में महाविद्यालय के समस्त संकाय सदस्य/अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक कर्मचारी उपस्थित रहे।

नगर निगम ने शपथ दिलाई

कोटा, (निसं)। नगर निगम कोटा उत्तर के प्रशासनिक भवन मे सोमवार को ''सम्मान तिरंगा'' आयोजन के तहत निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों को राष्ट्रीयध्वज का सम्मान करन, तिरंगा फहराने और इस हेतु भारत के ध्वजसंहिता का पालन करने की शपथ दिलाई गई। सभी ने शपथ के साथ ही संकल्प लिया कि वो खुद भी अपने घरों पर तिरंगा फहराएंगे और अन्य लोगों को भी अपने घरों पर तिरंगा फहराने के लिए प्रेरित करेंगे। जिससे समूचे देश मे राष्ट्र भक्ति की भावना प्रबल हो और देश अधिक मजबूत बने। शपथ कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों को शपथ निगम उत्तर की अतिरिक्त आयुक्त भावना शर्मा ने दिलाई।

सावन भादों का त्यौहार मनाया

कोटा, (निसं)। माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा झालावाड़ रोड स्थित माहेश्वरी भवन पर ''सावन के रंग भादो के संग'' धूमधाम से संपन्न हुआ। माहेश्वरी समाज की 250 से अधिक महिलाएं इस कार्यक्रम उपस्थित रही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उपसभापति पश्चिमांचल अ.भा.माहेश्वरी महासभा राजेश कृष्ण बिरला व विशिष्ट अतिथि पूर्वी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के प्रदेशाध्यक्ष महेश चंद अजमेरा व मंत्री आन्नद राठी रहे। कार्यक्रम की निर्देशिकाएं किरण मांधना श्यामा बिरला पुष्पा सोमानी अंकिता राठी सुलोचना मोहता और सरोज लाहोटी द्वारा इस सुंदर आयोजन की रचना की गयी। कार्यक्रम में पूर्व राष्ट्रीय माहेश्वरी महिला अध्यक्ष आशा माहेश्वरी व हितकारी सहकारी समिति की अध्यक्षा सूरज बिरला का सानिध्य भी प्राप्त हुआ।

नवगठित कार्यकारिणी ने शपथ ली

कोटा, (निसं)। रोटरी क्लब कोटा नॉर्थ का पद स्थापना एवं पुरस्कार वितरण समारोह कुन्हाड़ी स्थित निजी होटल में आयोजित किया गया। इस अवसर पर नए पदाधिकारियों को शपथ दिलाई गई वहीं पुराने पदाधिकारी का सम्मान किया गया। वर्षभर किए गए उत्कृष्ट कार्य करने पर वर्ष 2023-24 कि टीम को बधाई दी गई। नव-नियुक्त अध्यक्ष सुरेंद्र अग्रवाल ने बताया कि पदस्थापन समारोह में अतिथि के रूप में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर राखी गुप्ता, पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर प्रद्युम्न पाटनी, पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर निर्मल कुनावत, सहायक प्रांतपाल आनंद खंडेलवाल मंचासीन रहे।

खाद्य सुरक्षा टीम ने चार संस्थानों का निरीक्षण कर पांच नमूने लिये

कोटा, (निसं)। प्रदेश सरकार द्वारा चलाये जा रहे मिलावट के खिलाफ अभियान के तहत अतिरिक्त मुख्य सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य शुभ्रा सिंह के मार्गदर्शन में आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रण इकबाल खान एवं अतिरिक्त आयुक्त पंकज ओझा एवं जिला कलेक्टर डॉ.रविंद्र गौस्वामी के निर्देशन में मिलावटखोरी रोकने के लिए विभिन्न खाद्य पदार्थों के सैंपल लिए जा रहे हैं।

अभिहित अधिकारी एंव मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.जगदीश सोनी ने बताया कि दिनांक 12 अगस्त को झालावाड़ रोड़ पर स्थित सिटी मॉल में 4 फूड कोर्ट का निरिक्षण किया गया। लगातार कार्यवाही के चलते यहां जागरुकता देखने को मिली, सभी फूड कोर्ट ने अपने-अपने लाईसेंस लगा रखें थे। साफ सफाई संतोषजनक थी, अधिकांश स्थानों पर फूड हैंडलर्स के मेडिकल सर्टिफिकेट एंव पेस्ट कंट्रोल की रिपोर्ट पाई गई। टीपीसी मीटर द्वारा तेल की गुणवत्ता जांच करने पर तेल मानक स्तर का पाया गया। यहां पर स्थित द अमेरिकन रेस्टोरेंट से पनीर, सुरुचि फूड्स से पनीर, डोमिनोज पिज्जा से पनीर, सबवे रेस्टोरेंट से दो प्रकार से सांस का नमूना खाद्य सुरक्षा एंव मानक अधिनियम के तहत लिया गया। इस प्रकार 4 संस्थानों का निरीक्षण कर कुल 5 नमूने खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के अन्तर्गत लिए। लिए गए नमूनों को खाद्य सुरक्षा प्रयोगशाला कोटा में भेजा गया। जांच रिपोर्ट आने के बाद नियम अनुसार विधिक कार्यवाही की जावेगी। टीम में खाद्य सुरक्षा अधिकारी संदीप अग्रवाल, चंद्रवीर सिंह जादौन, नितेश गौतम मौजूद रहे।

कोटा में खाद्य सुरक्षा की टीम ने नमूने लेने की कार्यवाही की गई।

घुटने की रिप्लेसमेंट सर्जरी हुई

- सॉफ्ट रोबोटिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑगमेंटेड रियलिटी की मदद से हुई सर्जरी

कोटा, (निसं)। कोटा हार्ट हॉस्पिटल में चिकित्सा के क्षेत्र में एक नया और महत्वपूर्ण अध्याय जुड़ गया है। सीनियर जॉइंट रिप्लेसमेंट एवं लिगामेंट सर्जन डॉ. दुर्गा शंकर ढिल्लन ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर) की नवीनतम तकनीकों का उपयोग करते हुए घुटने की रिप्लेसमेंट सर्जरी सफलतापूर्वक की। यह तकनीक कोटा में पहली बार उपयोग में लाई गई है और पिक्सी (पीआईएक्सइई) मेडिकल सॉफ्ट रोबोटिक की नी रिप्लेसमेंट तकनीक के माध्यम से इसे अंजाम दिया गया। डॉ. ढिल्लन ने बताया कि पिक्सी मेडिकल सॉफ्ट रोबोटिक की नी रिप्लेसमेंट तकनीक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑगमेंटेड रियलिटी का अद्वितीय मिश्रण है।

इस तकनीक में सर्जन सर्जरी के दौरान एआई ग्लास पहनते हैं, जिसमें एआई उन्हें सर्जरी की सटीक और विस्तृत प्लानिंग बताता है एवं यह एआई ग्लासेज न केवल ऑपरेशन के दौरान मरीज के घुटने की इमेज बनाते हैं बल्कि सर्जरी को रियल टाइम में और भी अधिक सटीकता के साथ कम समय में सम्पन्न करने में मदद करते हैं।

कम रक्तस्राव, कम दर्द एवं तेजी से स्वस्थ होने का वादा:-इस अत्याधुनिक तकनीक के उपयोग से सर्जरी के दौरान होने वाला रक्तस्राव बहुत कम हो जाता है, जिससे मरीज को जल्द स्वस्थ होने में मदद मिलती है। सर्जरी के अगले ही दिन मरीज बिना किसी सहारे के चलने में सक्षम हो सकता है और दर्द भी बहुत कम होता हैं।

डॉ. ढिल्लन ने बताया कि ऑपरेशन के दौरान सर्जन को नेविगेशन गाईड, मरीज का डाटा और अन्य आवश्यक जानकारी लगातार मिलती रहती है, जिससे सर्जन को अधिक ध्यान केंद्रित एवं सटीकता से प्रत्यारोपण करने में सहायता मिलती है। टीम में एनेस्थेटिस्ट डॉ. ललित गोयल, डॉ. सलोनी भार्गव, फारूक, प्रेम सुमन, पवन, हरीश, चिराग़ शामिल रहे।

कोटा हार्ट हॉस्पिटल का मिशन- चिकित्सा में नवीनीकरण:- कोटा हार्ट हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. राकेश जिंदल ने कहा कि हमारा मुख्य उद्देश्य हमेशा से ही मरीजों को दुनिया में मौजूद सबसे नवीनतम और उन्नत तकनीकों का लाभ पहुंचाना रहा है। इस तकनीक का उपयोग न केवल सर्जरी की सफलता दर को बढ़ाता है बल्कि मरीजों के जीवन में भी गुणात्मक सुधार लाता है।

छात्रों ने राखीयां बनाई

कोटा, (निसं)। एलबीएस ग्रुप के चेयरमेन कुलदीप माथुर ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य विशेष बच्चों की सृजनशीलता को प्रोत्साहित करना और उन्हें पारंपरिक राखी बनाने और बांधने की प्रक्रिया में शामिल करना था, जो भाई-बहन के रिश्ते का प्रतीक है। इस कार्यक्रम में बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया और रंग-बिरंगे धागों, मोतियों और अन्य सजावटी वस्तुओं का उपयोग करके अनूठी और सुंदर राखियां तैयार कीं। शिक्षकों और स्टॉफ सदस्यों ने छात्रों को मार्गदर्शन दिया, जिससे वे अपनी रचनात्मकता को वास्तविकता में बदल सकें। कार्यक्रम का शुभारम्भ एलबीएस ग्रुप के चेयरमेन कुलदीप माथुर द्वारा रिबन काट कर किया गया। स्कूल की प्रधानाचार्य प्रिंयका मीना ने खुशी जताते हुए कहा, राखी बनाने के इस आयोजन ने न केवल हमारे छात्रों को अपनी सृजनशीलता को व्यक्त करने का मौका दिया, बल्कि उन्हें रक्षाबंधन के सांस्कृतिक महत्व को भी समझने का अवसर प्रदान किया।

दिव्यांगजनों ने तिरंगा रैली निकाली

कोटा, (निसं)। हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत सोमवार सायं किशोर सागर तालाब की पाल पर दिव्यांगजन रैली निकाली गई।

जिला कलेक्टर डॉ.रविन्द्र गोस्वामी ने दिव्यांग रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान की शपथ दिलाई। रैली किशोर सागर तालाब की बारहदरी से आरंभ होकर जेडीबी कॉलेज के सामने होते हुए स्टेडियम के सामने सैनिक चौराहा पर सम्पन्न हुई।

संयुक्त निदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता सविता कृष्णिया ने बताया कि रैली में जिले के विभिन्न हिस्सों से लगभग 40 दिव्यांगजन मोटराइज्ड व्हिकल, ई-रिक्शा इत्यादि से पहुंचे और तिरंगा लेकर रैली में जयघोष के साथ हर घर तिरंगा का संदेश पहुंचाया।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत जिला स्तर पर जिला कलक्टर डॉ. रविंद्र गोस्वामी ने सभी जिला स्तरीय अधिकारियों को तिरंगे के साथ शपथ दिलवाई। जिला कलेक्टर ने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान से नई पीढ़ी के साथ-साथ देश के सभी लोगों में देश के प्रति और राष्ट्रीय ध्वज के प्रति गौरव और सम्मान बढ़ेगा।

उन्होंने कहा सभी विभाग प्रयास करें कि हर घर तिरंगा अभियान के तहत तिरंगा यात्राएं, तिरंगा रैलियां, तिरंगा दौड़ जैसे देशभक्ति से जुड़े कार्यक्रम आयोजित कर प्रत्येक नागरिक को इस अभियान से जोड़ा जाए।

कोटा में दिव्यांगजन तिरंगा रैली निकाली गई।

विद्यालयों में आज का अवकाश घोषित

कोटा, (निसं)। मौसम विभाग द्वारा कोटा जिले में अत्यधिक भारी बारिश की संभावना के तहत रेड अलर्ट जारी किया गया है। रेड अलर्ट को देखते हुए जिले में संचालित कक्षा 1 से 12 तक के समस्त सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में आज का अवकाश घोषित किया गया है। यह अवकाश केवल विद्यार्थियों के लिए घोषित किया गया है। जिला कलक्टर एवं अध्यक्ष जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, कोटा डॉ. रविन्द्र गोस्वामी ने कक्षा 1 से 12 तक के समस्त सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में आज का अवकाश घोषित किया।

नाम परिवर्तन

मैंने अपना पुराना नाम महस्विन आचार्य से बदलकर नया नाम महस्विन वशिष्ठ आचार्य रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना पहचाना जावे।

पता-महस्विन वशिष्ठ आचार्य पुत्र यतीश आचार्य 2-एम-2 नियर रिद्धि सिद्धि पार्क रंगबाड़ी योजना कोटा

नाम परिवर्तन

मैंने अपना पुराना नाम MOHAMMED SALIM KHAN से बदलकर नया नाम MOHD. SALIM रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना पहचाना जावे।

पता-MOHD. SALIM पुत्र मोहम्मद अयुब खान 4-च-5 विज्ञान नगर कोटा

नाम परिवर्तन

मैंने अपना पुराना नाम तस्नीम से बदलकर नया नाम तस्नीम सुसनेरवाला रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना पहचाना जावे।

पता-TASNIM SUSNERWALA W/O SAFUDDIN सैफीपुरा सुनेल झालावाड़

अतिवृष्टि को लेकर विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश

कोटा, (निसं)। प्रदेश एवं जिले में अतिवृष्टि को देखते हुए जिला कलक्टर डॉ. रविंद्र गोस्वामी ने सोमवार को वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से सभी उपखंड अधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने सभी को निर्देश दिए कि मौसम विभाग के अलर्ट पर सभी अधिकारी राहत कार्यों के लिए तैयार रहें।

जिला कलेक्टर ने कहा कि कोई भी पर्यटन स्थल जहां जल भराव या बाढ़ जैसी स्थिति हो सकती है वहां सुरक्षा मानकों का ध्यान रखें। उन्होंने कहा विभिन्न पुलिया, रास्तों में गढ्डों और दरारों से होने वाली दुर्घटनाओं के लिए विभाग सचेत रहे एवं तात्कालिक समाधान के लिए आवश्यक मरम्मत कार्य करवाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी नदियों में बढ़ते जलस्तर एवं नहरों में पानी की आवक का विशेष ध्यान रखते हुए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम रखें। डॉ.गोस्वामी ने कहा कि किसी क्षेत्र विशेष में अधिक बारिश होती है तो औपचारिकताओं में देर ना करते हुए स्कूल में अवकाश आदि के निर्णय तुरंत लिए जाएं। उन्होंने कहा कि विभिन्न बांधों में जलस्तर बढ़ता है तो उसके लिए सभी ब्लॉक तैयार रहें एवं रेस्क्यू टीम को तैयार रखें। उन्होंने कहा कि पशुधन का भी विशेष ध्यान रखा जाए एवं उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाऐं। उन्होंने कहा कि अतिवृष्टि की स्थिति में सभी अधिकारी स्वयं मौके पर जाएं और राहत कार्यों को खुद की निगरानी में करवाएं। उन्होंने निर्देश दिए कि वर्षा या अन्य प्राकृतिक कारण से होने वाले नुकसान के मुआवजे के किसी मामले को अनावश्यक लम्बित ना रखा जाए और उस पर तुरंत कार्रवाई की जाएं।

जिला कलक्टर ने कहा कि राजस्व संबंधी मामलों को भी ऑनलाईन फीड किया जाए एवं संपर्क पोर्टल पर आने वाले सभी परिवादों का निस्तारण शीघ्र किया जाए। उन्होंने कहा कि विभिन्न खंड स्तरीय एवं ग्राम स्तरीय जनसुनवाई में जो भी प्रकरण आ रहे हैं सभी अधिकारी उनका नियमित फॉलोअप करें एवं परिवादों का संतोषजनक निस्तारण करें। उन्होंने सभी उपखंड अधिकारियों से हर घर तिरंगा अभियान की प्रगति की समीक्षा की एवं होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी ली जिसमें सभी एसडीएम द्वारा बताया गया कि हर घर तिरंगा अभियान में रैली, मानव श्रृंखला पोस्टर प्रतियोगिता, रंगोली आदि के माध्यम से आमजन को जोड़ा जा रहा है।

पोस्टमैनों की बीट कम करने से डाककर्मियों में रोष व्याप्त

कोटा, (निसं)। राजस्थान डाक प्रशासन के अधिकारियों द्वारा कोटा शहर के दस वितरण डाकघरों में से डाक वितरण व्यवस्था बंद कर सम्पूर्ण कोटा शहर में दो डाकघरों से कराये जाने एवं साथ ही पोस्टमैनों की बीटें 79 में से आधी से कम करने की कार्य योजना को लेकर डाककर्मीयों में रोष व्याप्त है।

पेंशनर डाककर्मी राजेन्द्र शर्मा ने बताया कि हाल ही में राजस्थान के मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल के द्वारा कोटा शहर की सम्पूर्ण डाक व्यवस्था जो कि वर्तमान में दस डाकघरों से की जा रही है उसे केवल दो डाकघरों से कराये जाने की कार्य योजना शीघ्र लागू करने हेतु कहा है तथा साथ ही सम्पूर्ण कोटा शहर में 79 पोस्टमैनों द्वारा डाक बांटी जा रही है जिन्हे लगभग आधी बीटें किये जाने के प्रस्ताव पर कार्य किया जा रहा है। डाक प्रशासन के इन दोनों ही निर्णयों से कोटा शहर की डाक व्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ेगा तथा साथ ही आमजन को भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। सेवानिवृत्त सहायक डाक निदेशक सत्य नारायण शर्मा ने बताया कि पिछले 15 वर्षों से कोटा शहर की बीटों को रिव्यू नही हुआ है। पिछले 15 वर्षो में कोटा शहर काफी बढ़ गया है ऐसे में सम्पूर्ण कोटा शहर में सुचारू डाक व्यवस्था के लिए कम से कम भी 150 से अधिक पोस्टमैन की बीट होना अति-आवश्यक है लेकिन डाक प्रशासन पोस्टमैनों की बीटे कम करने में लगा है जिसका काफी नकारात्मक प्रभाव डाक व्यवस्था पर पड़ेगा। डाक विभाग के अधिकारीयों को पोस्टमैन की बीटे बढ़ाने हेतु पत्र लिखा गया है।

सोलह श्रृंगार करके आई महिलाएं, नृत्य व कैटवॉक में दम दिखाया

कोटा, (निसं)। दाधीच महिला मंडल, कोटा द्वारा, श्री महर्षि दधीचि छात्रावास, कोटा प्रांगण में, 'सावन लहरिया महोत्सव एवं सावन क्वीन' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महिला अध्यक्ष स्मिता शर्मा ने बताया कि विभिन्न आयु वर्ग में परिचय, कैटवाक एवं सोलह श्रृंगार की प्रतियोगिताएं रखी गई। महिलाओं राजस्थानी, बॉलीवुड और पंजाबी गीतों पर नृत्य भी करें। दाधीच समाज की महिलाओं ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर उत्साह से भाग लिया।

राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड

कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन, कोटा-324008

ऑनलाइन/ऑफलाइन निविदा सूचना

निम्नलिखित सामग्री की आपूर्ति हेतु निविदाएं आमन्त्रित की जाती है:- 15265 (RVU2425GLOB00843) बाउल मील्स XRP-803/763 के लिए ग्राइंडिंग रोल, बुल रिंग सेगमेंट और एयर पोर्ट रिंग असेंबली एवं 15264 (RVU2425GSOB00842) हाई टेम्प्रेचर सीलिंग कंपाउंड हाइसील 80-20। विस्तृत विवरण http://eproc.rajasthan.gov.in (ई-निविदा हेतु), www.energy.rajasthan.gov.in/rvunl एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

राज.संवाद/सी/24/3598 RVUN/PR-4038 मुख्य अभियंता (के.एस.टी.पी.एस.)

कार्यालय कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांक:-एफ-15/कृ.भू.रू./2024/1964 विज्ञप्ति दिनांक:-12.8.2024

सर्व साधारण को जर्ये विज्ञप्ति सूचित किया जाता है कि ग्राम देवली अरब योजना सांई धाम नगर नगर खसरा नं. 23 व 24 में स्थित भूखण्ड संख्या 63 के नाम हस्तान्तरण करने हेतु न्यास कार्यालय में श्री सुरेन्द्र सिंह पुत्र श्री कमल सिंह निवासी-जे-6, पुलिस लाईन कोटा राज. द्वारा ऑनलाईन आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। उक्त का पट्टा क्रमांक 536 दिनांक 02.10.2021 को श्री जवीर सिंह पुत्र श्री जगन सिंह के पक्ष में जारी किया गया था। आवेदक द्वारा उक्त भूखण्ड बैचान जर्ये पंजीकृत मुख्तारआम श्री आशिक अली द्वारा जर्ये रजि. विक्रय पत्र दिनांक 05.04.2024 से श्री सुरेन्द्र सिंह पुत्र श्री कमल सिंह को कर दिया गया है।

अत: श्री सुरेन्द्र सिंह पुत्र श्री कमल सिंह के नाम हस्तान्तरण किये जाने में किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो अन्दर 7 योम कार्यालय में उपस्थित होकर अथवा लिखित में अद्योहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करें। मियाद गुजर जाने के बाद आपत्ति मान्य नही होगी।

उप सचिव, कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

कार्यालय कोटा विकास प्राधिकरण

क्रमांक:-एफ-15/कृ.भू.रू./2024/1949 विज्ञप्ति दिनांक:-12.8.2024

सर्व साधारण को जर्ये विज्ञप्ति सूचित किया जाता है कि ग्राम कोटडी में स्थित कृषि भूमि योजना कृष्णा नगर खसरा नं. 147, 147/379 में स्थित भूखंड संख्या सी-6 आवेदक/आवेदिका श्री सचिन अग्रवाल पुत्र स्व. श्री हरीश चन्द अग्रवाल निवासी सी-6 कृष्णा नगर पुलिस लाईन जिला कोटा ऑनलाईन नाम हस्तान्तरण हेतु न्यास कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। उक्त भूखंड का पट्टा क्रमांक 1129 दिनांक 25.09.2002 को श्रीमती मीना सोनी पत्नी श्री मनोज कुमार सोनी के पक्ष में जारी किया गया था। पट्टाधारी द्वारा उक्त भूखंड का बैचान जर्ये रजि. विक्रय पत्र दिनांक 26.10.2004 को जर्ये मुख्तारआम मोहन सिंह चौधरी पुत्र श्री मूलीराम द्वारा श्रीमती विमलेश अग्रवाल पत्नी श्री हरीश चन्द्र अग्रवाल एवं श्री संजय अग्रवाल व सचिन अग्रवाल पिसरान श्री हरीश चन्द्र अग्रवाल के पक्ष में किया गया है। सहक्रेता श्रीमती विमलेश अग्रवाल की मृत्यु प्रमाण पत्र अनुसार दिनांक 01.08.2015 को एवं श्री संजय अग्रवाल की मृत्यु प्रमाण पत्र अनुसार दिनांक 17.08.2011 को हो चुकी है। श्रीमती विमलेश अग्रवाल एवं संजय अग्रवाल द्वारा अपने जीवनकाल में जर्ये रजि. वसीयत दिनांक 27.09.2023 को आवेदक के पक्ष में किया गया है।

अत: श्री सचिन अग्रवाल पुत्र स्व. श्री हरीश चन्द अग्रवाल के पक्ष में नाम हस्तान्तरण जारी किये जाने में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो अन्दर 7 योम कार्यालय में उपस्थित होकर अथवा लिखित में अद्योहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करें। मियाद गुजर जाने के बाद आपत्ति मान्य नही होगी।

उपसचिव कोटा विकास प्राधिकरण

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण (राज.)

क्रमांक:-ननिकोद/जोन-प्रथम/भ.नि.अनु./2024/8097 दिनांक: 8.8.24

स्वामित्व हस्तांतरण बाबत सार्वजनिक विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री प्रकाश साहनी पुत्र स्व. यू.टी. साहनी निवासी 59 बी तलवण्डी योजना कोटा (राज.) ने नगर निगम कोटा दक्षिण में आवेदन प्रस्तुत कर भूखंड संख्या 59 बी तलवण्डी योजना कोटा क्षेत्रफल-4125 वर्गफुट का कार्यालय नगर विकास न्यास कोटा के पत्र क्रमांक : एफ 1() सामान्य/74/9852-79 दिनांक 02.08.1974 से श्रीमती चन्द्रकान्ता पत्नी श्री मदन लाल को किया गया। श्रीमती चन्द्रकान्ता पत्नी श्री मदन लाल ने जरिये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 26.09.1986 से उक्त भूखंड श्री प्रकाश साहनी पुत्र स्व. यू.टी. साहनी एवं सुश्री रतना साहनी पुत्री श्री यू.टी. साहनी को विक्रय कर दिया गया है। सुश्री रतना साहनी पुत्री श्री यू.टी. साहनी द्वारा उक्त भूखंड में से अपने हिस्से की वसीयत अपने भाई श्री प्रकाश साहनी पुत्र स्व. यू.टी. साहनी के नाम कर दी गई है। सुश्री रतना साहनी पुत्री श्री यू.टी. साहनी की मृत्यु दिनांक 03.09.2023 को हो गई है। श्री प्रकाश साहनी पुत्र स्व. यू.टी. साहनी के पक्ष में नाम हस्तांतरण की कार्यवाही की जानी है।

आवेदक द्वारा प्रस्तुत आवेदन अनुसार नगर निगम कोटा दक्षिण में उक्त भूखंड के स्वामित्व नाम हस्तान्तरण की कार्यवाही की जा रही है। उक्त भूखंड का स्वामित्व नाम हस्तांतरण करने में किसी व्यक्ति, संस्था या अन्य किसी को भी उक्त भूखंड से संबंध रखता है, को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस में अपनी आपत्ति लिखित में उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण कार्यालय में प्रस्तुत करें। बाद मियाद आपत्ति मान्य नहीं होगी।

उपायुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण

अधिकारी जल भराव वाले स्थानों पर स्वयं जाकर कार्रवाई करें : कलेक्टर

कोटा, (निसं)। विभागीय योजनाओं की प्रगति एवं अंतर विभागीय समन्वय समीक्षा बैठक जिला कलक्टर डॉ.रविंद्र गोस्वामी की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की गई। बैठक में जिला कलक्टर ने प्रभारी सचिव द्वारा दिए गए निर्देशों की समीक्षा की एवं सभी विभागों को बजट घोषणाओं से संबंधित ज

रामगढ़ पचवारा में दस इंच बारिश, दौसा जिले में बाढ़ जैसे हालात

तेज बारिश के चलते अधिकांश बांधों में पानी की आवक बनी

- दौसा-गंगापुर रेल मार्ग पर लालसोट टनल के समीप पहाड़ का मलबा गिरने से रेलवे ट्रैक भी प्रभावित हुआ

दौसा, (निसं)। जिले में भारी बारिश के चलते अधिकांश बांधों में पानी की लगातार आवक बनी हुई है। बांधों के भराव क्षेत्र के आसपास रह रहे ग्रामीणों ने अपने मकान खाली कर दिये हैं तथा अपने गांव चले गये हैं। उधर बांध में पानी की लगातार आवक एवं नदी के ऊफान पर होने के कारण नांगल राजावतान से खानवास जाने वाला मार्ग पूरी तरह से बंद हो गया है। वहीं दूसरी ओर सर्वाधिक वर्षा रामगढ़ पचवारा में करीब दस इंच दर्ज की गई है। लगातार बारिश से जिले में बाढ़ जैसे हालात हो गये हैं। सोमवार को भी दौसा जिले में जमकर बरसात हुई, जिसके चलते शहर के निचले क्षेत्र में स्थित अधिकांश कॉलोनियां जलमग्न हो गई है। बरसात से रेलवे ट्रेक भी प्रभावित हो गया।

दौसा जिल में भारी बारिश से बाढ़ जैसे हालात पैदा हो गये हैं। सोमवार को प्रातः 8 बजे तक लालसोट में करीब सात इंच, रामगढ़ पचवारा में दस इंच, राहुवास में 161 एमएम, निर्झरना में सात इंच, नांगल- राजावतन में सवा पांच इंच, लवाण में सवा पांच इंच और मोरल बांध पर सवा पांच इंच बारिश दर्ज की गई। दौसा-गंगापुर रेल मार्ग पर लालसोट टनल के समीप पहाड़ का मलबा गिरने से रेलवे ट्रैक भी प्रभावित हुआ है। भारी बारिश होने के कारण अधिकतर एनीकट और बांध ओवरफ्लो हो चुके हैं।

सीकर में मूसलाधार बारिश से निचले इलाके जलमग्न

सीकर, (निसं)। जिला मुख्यालय पर पिछले एक हफ्ते से रिमझिम बरसात के बाद सोमवार को हुई मूसलाधार बरसात से जहां शहर के निचले इलाके जलमग्न हो गए, वहीं पानी भराव के चलते वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। शहर में करीब आधा घंटे हुई मूसलाधार बरसात ने प्रशासन के दांवों की पोल खोल कर रख दी।

बरसात का पानी दुकानों और घरों में घुस गया, हालत यह बन गए कि नवलगढ़ रोड और पिपराली रोड सहित शहर के निचले हिस्से पूरी तरह जलमग्न हो गए। सीकर में पिछले एक सप्ताह से जारी रिमझिम बरसात के बाद सोमवार को अंचल में बादल झूम कर के बरसे। सीकर जिला मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्रों में अच्छी बरसात हुई। जहां एक ओर सीकर शहर में बारिश के बाद शहर में अनेक स्थानों पर पानी का भराव हो गया, वहीं खेतों में पानी अमृत बन के बरसा। पलसाना, रानोली क्षेत्र में अच्छी बरसात होने से किसानों ने राहत की सांस ली। वहीं बारिश के चलते पहाड़ी क्षेत्र भी हरियाली से आच्छादित हो चुके हैं। कोट बांध में भी पानी की आवक हुई है। सीकर शहर में बरसात के बाद नवलगढ़ रोड़, लुहारू बस स्टैण्ड, बस डीपो, बजाज रोड़, शिव कॉलोनी सहित मुख्य मार्गों पर पानी का भराव हो गया।

गंभीर नदी पर बनी पुलिया ढही, हिण्डौन-गंगापुर मार्ग अवरुद्ध

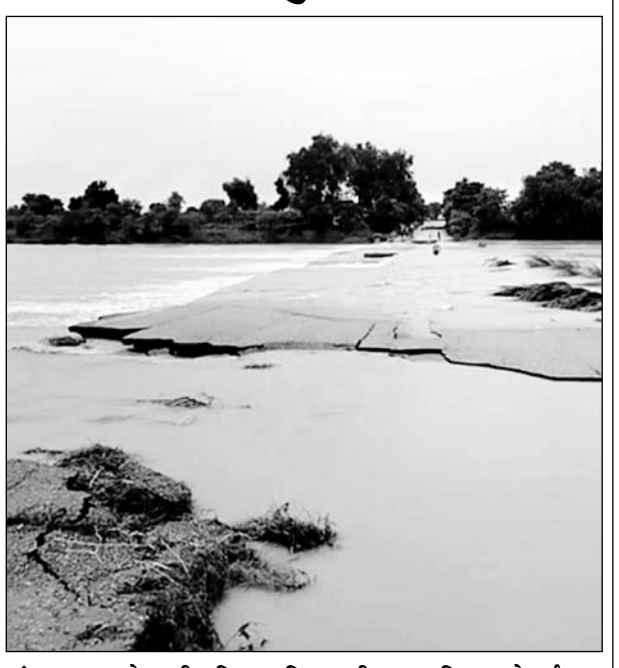

गांव काटकर के समीप स्थित पुलिया पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।

- गंभीर नदी के रास्ते पानी भरतपुर की ओर बढ़ रहा है, रास्ते में बने कई एनीकट भी ढह गये
- पांचना बांध के छह गेट खोलने से नदी में तेज बहाव से पानी की आवक जारी

हिंडौन सिटी, (निसं)। पांचना बांध के सभी छह गेट खुलने के बाद गंभीर नदी में पानी के तेज बहाव के चलते गंगापुर मार्ग पर गांव काटकर के समीप स्थित पुलिया पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई, जिससे अब हिण्डौन-गंगापुर मार्ग पूरी तरह अवरुद्ध हो गया है।

जानकारी के अनुसार गत तीन दिन से क्षेत्र में चल रहे भारी बारिश के दौर ने शहर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भी हालातों को बदतर कर दिया है। पांचना बांध में पानी की भारी आवक ने क्षेत्र के लोगों की व प्रशासन की चिंताएं बढ़ा दी जिससे छुटकारा पाने के लिए प्रशासन में तत्काल प्रभाव से निर्णय लेकर पांचना से पानी निकासी के सभी 6 गेट खोल दिए, जिनमें से भारी मात्रा में पानी की निकासी हो रही है। गंभीर नदी के रास्ते यह पानी भरतपुर की ओर बढ़ रहा है, इस बीच रास्ते में बने कई एनीकट भी ढह गये हैं, जिससे पानी का बहाव और तेज हो गया। पानी के इस तेज बहाव ने गंगापुर रोड पर स्थित गांव काटकड़ के समीप सड़क पर बनी पुलिया पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। हालांकि गत दिनों से छोटे और दोपहिया वाहनों का आवागमन पुलिया पर पानी की चादर चलने के कारण बंद कर रखा था, लेकिन अब पुलिया के क्षतिग्रस्त होने के बाद इस मार्ग पर बड़े वाहनों का आवागमन भी बंद हो गया है, जिससे अब हिंडौन शहर का वजीरपुर और गंगापुर क्षेत्र के गांव से पूरी तरह कट गया है। पानी के तेज बहाव से पुलिया इस तरह क्षतिग्रस्त हुई है कि लगभग 15 फीट के क्षेत्र में सड़क और पुलिया का नामोनिशान ही मिट गया है। अब गंगापुर जाने वाले वाहनों को करौली सपोटरा होते हुए निकाला जा रहा है, जिससे सैकड़ों गांव के लोगों की परेशानी बढ़ गई है। बारिश का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा है। पुलिस और प्रशासन पूरी मुस्तादी के साथ भारी बारिश से पैदा हो रही इन समस्याओं से निपटने की कोशिश कर रहा है। इधर जनप्रतिनिधि और विभिन्न सामाजिक संगठनों के लोग भी अतिवृष्टि से आमजन के सामने पैदा हुई इन समस्याओं का सामना करने में मदद कर रहे हैं।

रील बनाने के चक्कर में नहर में गिरी कार, तीन की मौत

हनुमानगढ़, (कासं)।राजस्थान में लगातार तेज बारिश से हालात बिगड़ते

- एक साथ पिता-पुत्र-पोते की हादसे में मौत हो गई

जा रहे है। कई जिलों में अभी भी बारिश का दौर बना हुआ है। ऐसे में अभी तक 30 लोगों की मौत हो चुकी है। मौसम विभाग ने अगले पांच दिन तक प्रदेश में भारी बारिश होने की संभावना व्यक्त की है। वहीं, हनुमानगढ़ जिले के टिब्बी में रील बनाने के चक्कर में एक बड़ा हादसा हो गया। जहां पिता, पुत्र व पोते की तलवाड़ा झील मार्ग पर इंदिरा गांधी नहर के पुल से नहर में कार गिरने से मौत हो गई।

इंदिरा गांधी नहर के पुल से सोमवार सुबह करीब 8:00 बजे गिरी कार को चार घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद नहर से निकाला गया। साथ ही नहर से तीनों के शव भी बरामद किए गए हैं। जिनकी पहचान राठीखेड़ा निवासी मरबूब आलम (60) सानिब हुसैन(19) व हसनैन(5) के रूप में हुई है। कार सवार तीनों पिता, पुत्र व पोते के शव को कस्बे के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर लाया जा रहा है। जहां उनका पोस्टमार्टम किया गया।

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

निविदा सूचना

विश्वविद्यालय में सामग्री/सेवा हेतु ई-निविदा जारी की गयी है, जिसके यूबीएन GSU2425GLOB00022 है। निविदा से संबंधित विस्तृत जानकारी http://www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

राज.संवाद/सी/24/3610 कुलसचिव

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण, राजस्थान

राजीव गांधी भवन, दशहरा मैदान, सी.ए.डी. सर्किल-कोटा

email : nnksouth@gmail.com, websites : www.urban,rajasthan.gov.in/nnks, Ph.: 0744-2502142

क्रमांक :- ननिको/दक्षिण/निर्माण/2024/116-131 दिनांक :- 08.08.2024

ई-निविदा सूचना संख्या : 07/2024-25

नगर निगम कोटा (उत्तर/दक्षिण) द्वारा विभिन्न अभियान्त्रिकी विभागों "A" एवं "AA" श्रेणी एवं नगर निगम कोटा (उत्तर/दक्षिण) में उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से कुल 06 कार्यो हेतु कुल राशि 56.92 लाख रूपये की ऑन लाईन निविदायें दिनांक 12.08.2024 से दिनांक 22.08.2024 तक आमन्त्रित की जाती हैं। टेन्डर बेचे जाने, प्राप्त करने की तिथि व निविदा की शर्ते इत्यादि नगर निगम की वेबसाईट www.urban.rajasthan.gov.in/nnks http://sppp.raj.nic.in, http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती हैं।

UBN No. DLB2425WSOB05099 UBN No. DLB2425WSOB05100
UBN No. DLB2425WSOB05101 UBN No. DLB2425WSOB05102
UBN No. DLB2425WSOB05103 UBN No. DLB2425WSOB05104

अधिशाषी अभियन्ता
राज.संवाद/सी/24/3590 नगर निगम कोटा दक्षिण

कार्यालय कृषि उपज मंडी समिति (फल एवं सब्जी) जयपुर

महात्मा ज्योतिबा फूले मुख्य मण्डी प्रांगण ई-मेल kums.jaipurfv@rajasthan.gov.in

क्रमांक :- 1194 - 1211 दिनांक :- 08/08/2024

ई-निविदा सूचना

कृषि उपज मण्डी समिति (फल सब्जी) जयपुर द्वारा मुख्य मण्डी प्रांगण टर्मिनल मार्केट मुहाना में इन्क्यूबेशन सेन्टर स्थापित किये जाने हेतु विभिन्न शेष उपकरण एवं प्रयोगशाला सामग्री क्रय की जानी है तथा स्थापित इन्क्यूबेशन सेन्टर को 5 वर्ष के लिये संचालन हेतु इच्छुक संस्था/व्यक्ति को Operation and Management (O&M) आधार पर दिया जाना है। उक्त कार्यो हेतु कार्यालय द्वारा ऑनलाईन निविदा संख्या 10/2024-25 एवं 11/2024-25 आंमत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र व शर्ते www.sppp.rajasthan.gov.in/ www.eproc.rajasthan.gov.in, https://agriculture.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है व www.eproc.rajasthan.gov.in पर दिनांक 08.08.2024 से दिनांक 01.09.2024 सांय 6:00 बजे तक निविदा दरे प्रस्तुत कर भाग लिया जा सकता है।

UBN- Tender-10 (DAM2425GLOB00631)
UBN- Tender-11 (DAM2425WSOB00632)

राज.संवाद/सी/24/3604 सचिव

कार्यालय नगर पालिका मण्डल, सांभरलेक जिला जयपुर ग्रामीण

क्रमांक :- न.पा.सा./2024/91 दिनांक :- 08/08/2024

ई-निविदा सूचना संख्या 05/2024

नगर पालिका सांभर लेक द्वारा निम्न कार्य कराये जाने हेतु सेवायें में इच्छुक एवं अनुभवी संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूमेन्ट प्रक्रिया हेतु आनलाईन निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा फार्म आनलाईन वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in डाउनलोड एवं अपलोड व http://sppp.rajasthan.gov.in पर डाउनलोड किये जा सकते है:-

Particulars	Detail
Unique Bid Number	DLB2425SLOB05377, DLB2425SLOB05378, DLB2425SLOB05380, DLB2425SLOB05381, DLB2425SLOB05379,
Number of Work	05
Estimate Cost of Tender	80.00 लाख
Earnest money (EMD) 2%	1.60 लाख
Cost of tender document (non-refundable) In favor of Municipal Corporation Jaipur Heritage Payable at Jaipur.	निविदा में अंकित कार्य के सम्मुख तालिका अनुसार
RISL Processing Fees (non-refundable) In favor of MD RISL Payable at Jaipur.	निविदा में अंकित कार्य के सम्मुख तालिका अनुसार
Tender Publication on official website http://eproc.rajasthan.gov.in	10.08.2024
Tender download start date	10.08.2024
Bid Submission start date & Time	13.08.2024
Bid Submission End date & Time	13.08.2024
Technical bid opening date & Time	13.08.2024
Financial bid opening date & Time	Will be Intimated latter to the Technically qualified Bidders

राज.संवाद/सी/24/3615 अध्यक्ष अधिशाषी अधिकारी

Mahila Engineering College, Ajmer

(A constituent college of Bikaner Technical University, Bikaner)
Nasirabad Road. Makhupura. Ajmer-305002
Website www.gweca.ac.in Ph. No. : 0145-2695534-35
Email : principal@gweca.ac.in Fax No. : 0145-2695102

No. WECA/RHTEQIS/2024/143 Date: 08.08.2024

CONTRACTUAL HIRING (ASSISTANT TEACHING ASSOCIATES)

Applications in prescribed format are invited from interested eligible candidates for contractual hiring on the post of Assistant Teaching Associates in various departments under Rajasthan Higher Technical Education Quality Improvement Scheme (RHTEQIS) on monthly fixed remuneration of INR 28,850/- (Rupees Twenty Eight Thousand Eight Hundred Fifty only).

Artificial Intelligence and Machine Learning (AIML)	Mechanical Engineering	Electrical Engineering	Computer Science & Engineering
02 [UR-01, UR(F)-01]	01 [UR-01]	01 [UR-01]	01 [BC(W)-01]

Total Post: 05*; UR-Unreserved, BC-Backward Class, SC- Scheduled Caste, ST-Scheduled Tribe, W-Widow, F-Female.

Reservation applicable as per DOP, Govt. of Raj. Order No त-7(2)-कार्मिक/क-2/19 दिनांक 24/02/2020. These contractual hiring shall be made on merit basis and in accordance with order of the Department of Technical Education, Govt. of Rajasthan order No. F.11(4)/T.E./2001/Part Vo-1, Jaipur dated 03.05.2023 for a period of ONE YEAR (extendable on satisfactory performance) or till termination of the Scheme, whichever is earlier. Qualifications and experience for these posts will be as per norms of AICTE applicable for Teaching Posts as on date.

Candidate will have to submit application in prescribed format with the following documents. Those who have applied for the earlier advertisement need to apply again.

DD in favour of Principal, Govt. Mahila Engineering College, Ajmer, payable at Ajmer for INR 200/- (Two Hundred only) towards application fee (non refundable); Self-attested photo copies of Educational qualifications (mark sheets & degree/certificates); GATE Score Card; valid Caste Certificate; Experience Certificates; document related to conversion of CGPA into percentage.

Age Limit: Minimum-21 years and Maximum up to 40 years. Relaxation as per DOP order No. F.17(4)DOP/A-2/2014 dated 11.01.2022. Last date for submitting hard copy of application by registered/speed post is **28.08.2024, 04.00 PM**. College will not be held responsible for any postal delay and application received late or by hand will be rejected.

Application form and other related details are available on www.gweca.ac.in. Candidates are advised to keep visiting college website for any updated information.

PRINCIPAL

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड CIN No: U40109RJ2000SGC016486
अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड CIN No: U40109RJ2000SGC016482
जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड CIN No: U40109RJ2000SGC016483

वर्ष 2024-25 के लिए वार्षिक राजस्व आवश्यकता एवं टैरिफ आदेश के मुख्य बिन्दु:-

राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग ने जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड एवं जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के लिए अपने आदेश दिनांक 26.07.2024 के द्वारा वर्ष 2024-25 के लिए वार्षिक राजस्व आवश्यकता एवं टैरिफ आदेश जारी कर दिया है। नया आदेश, दिनांक 01.08.2024 से प्रभावी होगा। विस्तृत वार्षिक राजस्व आवश्यकता एवं टैरिफ आदेश निगमों की वेबसाईट https://energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, https://energy.rajasthan.gov.in/avvnl, https://energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl एवं माननीय आरईआरसी की वेबसाईट https://rerc.rajasthan.gov.in पर भी उपलब्ध है।

टैरिफ आदेश के मुख्य बिन्दु निम्न प्रकार है:-

- माननीय आयोग ने माना है कि वर्तमान टैरिफ संरचना लागत-प्रतिबिंबित (cost-reflective) नहीं है क्योंकि स्थाई शुल्क से राजस्व, डिस्कॉम्स द्वारा निर्धारित निश्चित लागत के अनुरूप नहीं है और इस प्रकार, अनफंडेड अंतर और इस तथ्य को देखते हुए कि माननीय राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग आदेश दिनांक 06.02.2020 के बाद से कोई भी टैरिफ वृद्धि नहीं हुई थी, माननीय राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग द्वारा कृषि श्रेणी को छोड़कर सभी उपभोक्ता श्रेणियों पर मौजूदा निर्धारित शुल्क को सांकेतिक संशोधित अनुमोदित किया है।
- 50 यूनिट/माह तक की खपत वाले बीपीएल/आस्था कार्ड धारकों और छोटे घरेलू उपभोक्ताओं के स्लैब को मिलाकर एक स्लैब बनाया गया है।
- वित्त वर्ष 2022-23 की चौथी तिमाही के लिए ईंधन अधिभार (@1.33 रूपये/यूनिट) की वसूली और वित्त वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही के लिए ईंधन अधिभार (0.90 रूपये/यूनिट) की वसूली वित्त वर्ष 2024-25 के लिए टैरिफ आदेश में अनुमोदित किया गया है।
- डिस्कॉम्स से ग्रीन पावर का विकल्प चुनने वाले उपभोक्ताओं से हरित बिजली शुल्क (Green power tariff) 0.21 रू./यूनिट , जो कि टैरिफ आदेश के अनुसार संबंधित श्रेणी के सामान्य टैरिफ से अधिक (over and above) है, लगाया जाएगा।
- यदि सौर ऊर्जा और डिस्कॉम के ड्रॉवल दोनों को ध्यान में रखते हुए संयुक्त लोड फैक्टर 50 प्रतिशत या अधिक है और डिस्कॉम के ड्रॉवल का लोड फैक्टर न्यूनतम 40 प्रतिशत या अधिक है। ऐसे मामलों में डिस्कॉम से ली गई ऊर्जा को 1 एमवीए या अधिक बिलिंग मांग और 50 प्रतिशत या अधिक फैक्टर वाले उपभोक्ताओं के लिए लागू टैरिफ पर बिल किया जाएगा।
- पॉलीहाउसों को आपूर्ति कोड विनियमों के अनुसार उनके वोल्टेज स्तर के आधार पर एचटी/ एलटी टैरिफ अनुसूची के तहत मिश्रित भार श्रेणी के अंतर्गत कवर किया जाएगा।
- नवीन औद्योगिक छूट कनेक्शन दिनांक से स्वतः जारी हो जायेगी। तथा उपखण्ड अधिकारी से किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं होगी।
- वृद्धिशील छूट उन कनेक्शनों पर लागू नहीं होगी, जो सरकारी विभाग/ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों से संबंधित हैं।
- माननीय राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग द्वारा स्पष्ट किया है कि अतिरिक्त मांग अधिभार (बिना छूट या अधिभार पर विचार किए) टैरिफ आदेश में निर्दिष्ट सकल ऊर्जा और स्थाई शुल्क पर लगाया जावेगा
- ट्राईवेक्टर मीटर (टीवीएम) वाले 18.65 किलोवाट से अधिक कनेक्टेड लोड वाले एलटी उपभोक्ताओं और स्मार्ट मीटर वाले अन्य एलटी ईवी उपभोक्ताओं के लिए ईवी चार्जिंग स्टेशनों के लिए टीओडी टैरिफ जारी रहेगी।
- माननीय राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग द्वारा टीओडी टैरिफ संशोधित की है। उपरोक्त में सुबह 6:00 AM – 08:00 AM में ऊर्जा शुल्क पर 5% अधिभार एवं सांय 6:00 PM – 10:00 PM बजे तक ऊर्जा शुल्क पर 10% अधिभार लागू होगा। साथ ही दोपहर 12:00 PM – 04:00 PM बजे तक ऊर्जा शुल्क पर 10% छूट लागू होगी। यह संशोधित टीओडी टैरिफ, एमआईपी (एचटी), एनडीएस (एचटी), एलआईपी (एचटी) और ईवी चार्जिंग स्टेशन उपभोक्ताओं पर लागू होगी।

वर्ष 2024-25 के लिये अनुमोदित टैरिफ

घरेलू श्रेणी (एल.टी-1 एवं एच.टी-1)

(बीपीएल, आस्था कार्ड धारक और लघू घरेलू उपभोक्ता किसी बिलिंग चक्र में 50 यूनिट प्रतिमाह)

बीपीएल और लघू घरेलू

घरेलू श्रेणी			घरेलू श्रेणी		
विशिष्टियाँ	मौजूदा टैरिफ		विशिष्टियाँ	अनुमोदित टैरिफ	
	ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार		ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार
बीपीएल और आस्था कार्ड धारक *					
(i) 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	3.50 रू प्रति यूनिट	100 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह	(i) प्रथम 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	4.75 रू प्रति यूनिट	150 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह
लघू घरेलू *					
(i) प्रथम 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	3.85 रू प्रति यूनिट	125 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह			

* नोट : बीपीएल और आस्था कार्ड धारक की घरेलू टैरिफ एकल उपभोक्ता पर ही लागू होगी और यह किसी संस्था पर लागू नहीं होगी। यदि बीपीएल, आस्था कार्ड धारक और लघू घरेलू उपभोक्ता किसी बिलिंग चक्र में 50 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर उपभोग करते है तो उपभोक्ता पर घरेलू श्रेणी एलटी-1 के अन्तर्गत अतिरिक्त यूनिटों के उपभोग पर सम्बन्धित स्लेब लागू होगी।

सामान्य घरेलू-1

घरेलू श्रेणी			घरेलू श्रेणी		
विशिष्टियाँ	मौजूदा टैरिफ		विशिष्टियाँ	अनुमोदित टैरिफ	
सामान्य घरेलू-1 (150 यूनिट प्रतिमाह तक उपभोग)			सामान्य घरेलू-1 (150 यूनिट प्रतिमाह तक उपभोग)		
	ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार		ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार
(i) प्रथम 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	4.75 रू प्रति यूनिट	230 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह	(i) प्रथम 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	4.75 रू प्रति यूनिट	250 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह
(ii) 50 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर और 150 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	6.50 रू प्रति यूनिट		(ii) 50 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर और 150 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	6.50 रू प्रति यूनिट	

सामान्य घरेलू-2

घरेलू श्रेणी			घरेलू श्रेणी		
विशिष्टियाँ	मौजूदा टैरिफ		विशिष्टियाँ	अनुमोदित टैरिफ	
सामान्य घरेलू-2 (150 यूनिट से ऊपर 300 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग)			सामान्य घरेलू-2 (150 यूनिट से ऊपर 300 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग)		
	ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार		ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार
(i) प्रथम 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	4.75 रू प्रति यूनिट	275 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह	(i) प्रथम 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	4.75 रू प्रति यूनिट	300 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह
(ii) 50 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर और 150 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	6.50 रू प्रति यूनिट		(ii) 50 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर और 150 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	6.50 रू प्रति यूनिट	
(iii) 150 यूनिट से ऊपर 300 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.35 रू प्रति यूनिट		(iii) 150 यूनिट से ऊपर 300 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.35 रू प्रति यूनिट	

सामान्य घरेलू-3

घरेलू श्रेणी			घरेलू श्रेणी		
विशिष्टियाँ	मौजूदा टैरिफ		विशिष्टियाँ	अनुमोदित टैरिफ	
सामान्य घरेलू-3 (300 यूनिट से ऊपर 500 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग)			सामान्य घरेलू-3 (300 यूनिट से ऊपर 500 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग)		
	ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार		ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार
(i) प्रथम 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	4.75 रू प्रति यूनिट	345 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह	(i) प्रथम 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	4.75 रू प्रति यूनिट	400 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह
(ii) 50 यूनिट से ऊपर और 150 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	6.50 रू प्रति यूनिट		(ii) 50 यूनिट से ऊपर और 150 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	6.50 रू प्रति यूनिट	
(iii) 150 यूनिट से ऊपर और 300 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.35 रू प्रति यूनिट		(iii) 150 यूनिट से ऊपर और 300 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.35 रू प्रति यूनिट	
(iv) 300 यूनिट से ऊपर और 500 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.65 रू प्रति यूनिट		(iv) 300 यूनिट से ऊपर और 500 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.65 रू प्रति यूनिट	

सामान्य घरेलू-4

घरेलू श्रेणी			घरेलू श्रेणी		
विशिष्टियाँ	मौजूदा टैरिफ		विशिष्टियाँ	अनुमोदित टैरिफ	
सामान्य घरेलू-4 (500 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर का उपभोग)			सामान्य घरेलू-4 (500 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर का उपभोग)		
	ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार		ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार
(i) प्रथम 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	4.75 रू प्रति यूनिट	400 रू प्रति कनेक्शन प्रति माह	(i) प्रथम 50 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	4.75 रू प्रति यूनिट	450 रू प्रति कनेक्शन प्रति माह
(ii) 50 यूनिट से ऊपर और 150 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	6.50 रू प्रति यूनिट		(ii) 50 यूनिट से ऊपर और 150 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	6.50 रू प्रति यूनिट	
(iii) 150 यूनिट से ऊपर और 300 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.35 रू प्रति यूनिट		(iii) 150 यूनिट से ऊपर और 300 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.35 रू प्रति यूनिट	
(iv) 300 यूनिट से ऊपर और 500 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.65 रू प्रति यूनिट		(iv) 300 यूनिट से ऊपर और 500 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.65 रू प्रति यूनिट	
(v) 500 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर का उपभोग	7.95 रू प्रति यूनिट		(v) 500 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर का उपभोग	7.95 रू प्रति यूनिट	

घरेलू श्रेणी (एच.टी-1)

घरेलू श्रेणी			घरेलू श्रेणी		
विशिष्टियाँ	मौजूदा टैरिफ		विशिष्टियाँ	अनुमोदित टैरिफ	
एच.टी घरेलू (एच.टी-1)			एच.टी घरेलू (एच.टी-1)		
	ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार		ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार
50 के.वी.ए. से ऊपर की संविदा स्वीकृत मांग	7.15 प्रति यूनिट	बिलिंग डिमाण्ड प्रतिमाह का 250 रू प्रति के.वी.ए.	50 के.वी.ए. से ऊपर की संविदा स्वीकृत मांग	7.15 प्रति यूनिट	बिलिंग डिमाण्ड प्रतिमाह का 275 रू प्रति के.वी.ए.

अघरेलू श्रेणी (एल.टी-2 एवं एच.टी-2)

अघरेलू 5 किलोवाट तक स्वीकृत सम्बंद्ध भार

(अघरेलू टाईप-1)

अघरेलू श्रेणी			अघरेलू श्रेणी		
विशिष्टियाँ	मौजूदा टैरिफ		विशिष्टियाँ	अनुमोदित टैरिफ	
एल.टी - अघरेलू (एल.टी-2)			एल.टी - अघरेलू (एल.टी-2)		
100 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग (टाईप-1)			100 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग (टाईप-1)		
	ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार		ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार
प्रथम 100 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.55 रू प्रति यूनिट	300 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह	प्रथम 100 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.55 रू प्रति यूनिट	330 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह

(अघरेलू टाईप-2)

अघरेलू श्रेणी			अघरेलू श्रेणी		
विशिष्टियाँ	मौजूदा टैरिफ		विशिष्टियाँ	अनुमोदित टैरिफ	
एल.टी - अघरेलू (एल.टी-2)			एल.टी - अघरेलू (एल.टी-2)		
100 यूनिट से ऊपर 200 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग (टाईप-2)			100 यूनिट से ऊपर 200 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग (टाईप-2)		
	ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार		ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार
प्रथम 100 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.55 रू प्रति यूनिट	300 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह	प्रथम 100 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.55 रू प्रति यूनिट	330 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह
100 यूनिट से ऊपर और 200 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	8.50 रू प्रति यूनिट		100 यूनिट से ऊपर और 200 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	8.50 रू प्रति यूनिट	

(अघरेलू टाईप-3)

अघरेलू श्रेणी			अघरेलू श्रेणी		
विशिष्टियाँ	मौजूदा टैरिफ		विशिष्टियाँ		अनुमोदित टैरिफ
एल.टी - अघरेलू (एल.टी-2)			एल.टी - अघरेलू (एल.टी-2)		
200 यूनिट से ऊपर 500 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग (टाईप-3)			200 यूनिट से ऊपर 500 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग (टाईप-3)		
	ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार		ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार
प्रथम 100 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.55 रू प्रति यूनिट	380 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह	प्रथम 100 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.55 रू प्रति यूनिट	420 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह
100 यूनिट से ऊपर और 200 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	8.50 रू प्रति यूनिट		100 यूनिट से ऊपर और 200 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	8.50 रू प्रति यूनिट	
200 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर और 500 यूनिट प्रतिमाह तक उपभोग	8.85 रू प्रति यूनिट		200 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर और 500 यूनिट प्रतिमाह तक उपभोग	8.85 रू प्रति यूनिट	

(अघरेलू टाईप-4)

अघरेलू श्रेणी			अघरेलू श्रेणी		
विशिष्टियाँ	मौजूदा टैरिफ		विशिष्टियाँ		अनुमोदित टैरिफ
एल.टी - अघरेलू (एल.टी-2)			एल.टी - अघरेलू (एल.टी-2)		
500 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर का उपभोग (टाईप-4)			500 यूनिट प्रतिमाह से ऊपर का उपभोग (टाईप-4)		
	ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार		ऊर्जा प्रभार	स्थाई प्रभार
प्रथम 100 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.55 रू प्रति यूनिट	460 रू प्रति कनेक्शन प्रतिमाह	प्रथम 100 यूनिट प्रतिमाह तक का उपभोग	7.55 रू प्रति यूनिट	500 र

कार्यालय कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

CAD सर्किल के पास कोटा फोन नं. 0744-2500539,
वेबसाइट-https://lsg.rajasthan.gov.in/uitkota/#home/dpthome
Udhonline.rajasthan.gov.in (Helpline for online support-01412560211)

एफ 11/नीलामी/2024/1617 दिनांक 12.08.2024

ई-आक्शन के माध्यम से भूखण्ड खरीदने का अवसर

प्राधिकरण कोटा में S.S.O. आईडी के माध्यम से भूखण्डों/आवासों का ई-ऑक्शन प्रारम्भ किया जा रहा है। ई-ऑक्शन में भाग लेने के लिए S.S.O आईडी के माध्यम से लॉगइन करना होगा। ई-ऑक्शन में भाग लेने हेतु पंजीयन शुल्क/ईएमडी ऑनलाईन जमा करवाना होगा। नीलामी की विस्तृत शर्ते कोटा विकास प्राधिकरण की वेबसाईट https://lsg.rajasthan.gov.in/uitkota/#home/dpthome पर देखी जा सकती है।

ई-नीलामी से क्रय किये गये भूखंडों की 15 प्रतिशत राशि नीलामी तिथि को सम्मिलित करते हुए 3 कार्य दिवसों में जमा होने व नहीं होने की समस्त जिम्मेदारी स्वयं क्रेता की ही होगी।

नोट-सभी नीलामी कार्यक्रम प्रारम्भ होने का समय प्रातः 10.00 बजे एवं समाप्ति समय प्रातः 11.00 बजे रहेगा।

दैनिक नीलामी कार्यक्रम का विवरण

क्रसं	योजना का नाम	भूखण्ड संख्या	भूखण्ड की साईज	आरक्षित दर (नगरीय कर की गणना हेतु) प्र.व.मी.	प्रारम्भिक दर प्र.व.फी./ प्र.व.मी.	धरोहर राषि (EMD)	सम्बन्धित कनि. अभियन्ता एवं सहायक अभियंता का मोबाईल नम्बर
1	2	3	4	6	7	8	9
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 21.08.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 23.08.2024							
1.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-01 Corner	8.70+5/2×9=62.65 व.मी.=666.51 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	125000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
2.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	47 कॉर्नर	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3520/- प्र.व.फी.	85500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
3.	विनोबा भावे नगर आवासीय योजना	1239 Corner	5.50×9=49.5 व.मी.=532.82 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	4400/- प्र.व.फी.	47000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 22.08.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 26.08.2024							
4.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-50 Corner	5+6.50/2×9=51.75 व.मी.=556.83 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	123000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
5.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	118-ए	9×19.50=175.5 व.मी. =1888.38 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	121000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
6.	मुकुन्दरा विहार में व्यावसायिक योजना	5	30×28.86=859.5 व.मी.	10000/- प्र.व.मी.	16000/- प्र.व.मी.	310000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 23.08.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 28.08.2024							
7.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-09 Corner	4.90+10.30/2×9= 68.40 व.मी.=735.98 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	162000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
8.	मुकुन्दरा विहार में व्यावसायिक योजना	7	30×28.86=859.5 व.मी.	10000/- प्र.व.मी.	16000/- प्र.व.मी.	310000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
9.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	225	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	174000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 26.08.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 29.08.2024							
10.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-51 Corner	3.5+7.05/2×9=47.47 व.मी.=510.77 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	112500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
11.	मुकुन्दरा विहार में व्यावसायिक योजना	8	30×28.86=859.5 व.मी.	10000/- प्र.व.मी.	16000/- प्र.व.मी.	276000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
12.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	227	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	174000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 28.08.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 30.08.2024							
13.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-67 Corner	10.55+8.80/2×4.5= 43.53 व.मी. =468.38व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	103500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
14.	मुकुन्दरा विहार में व्यावसायिक योजना	12	30×28.86=859.5 व.मी.	10000/- प्र.व.मी.	16000/- प्र.व.मी.	276000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
15.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	228	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	174000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 29.08.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 02.09.2024							
16.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-11 Corner	7.70+10/2×4.5=39.82व.मी.=428.46 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	94500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
17.	मुकुन्दरा विहार में व्यावसायिक योजना	23	30×28.86=859.5 व.मी.	10000/- प्र.व.मी.	16000/- प्र.व.मी.	310000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
18.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	229	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	174000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 30.08.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 03.09.2024							
19.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-19 Corner	5+6.70/2×9=62.65 व.मी.=666.51 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	125000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
20.	मुकुन्दरा विहार में व्यावसायिक योजना	24	30×28.86=859.5 व.मी.	10000/- प्र.व.मी.	16000/- प्र.व.मी.	276000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
21.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	238 कॉर्नर	14.50×19.50=282.75 व.मी.=3042.39 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3520/- प्र.व.फी.	214500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 02.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 04.09.2024							
22.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-20 Corner	5+6.60/2×9=53.10 व.मी.=571.35 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	126000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
23.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	239 कॉर्नर	14.50×19.50=282.75 व.मी.=3042.39 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3520/- प्र.व.फी.	214500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
24.	वीर सारवरकर योजना में व्यावसायिक भूखण्ड	26 Corner	3×3=9 व.मी =96.84 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	16500/- प्र.व.फी.	32000/-	सुश्री सोनम जैन 6378521569 श्री कुलदीप तंवर 9587406054
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 03.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 05.09.2024							
25.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-24 Corner	3.30+12.70/2×9=72 व.मी.=774.72 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	170500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
26.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	242	9×19.50=175.5 व.मी. =1888.38 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	121000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
27.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	31-ए	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 04.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 06.09.2024							
28.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-31 Corner	8.70+5/2×9=63.10व.मी.=666.51 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	125000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
29.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	245	9×19.50=175.5 व.मी. =1888.38 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	121000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
30.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	62-ए	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 05.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 09.09.2024							
31.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-32 Corner	5.60+10.80/2×4.5= 36.9 व.मी. =397.04 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	87500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
32.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	246	9×19.50=175.5 व.मी. =1888.38 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	121000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
33.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	48-ए	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 06.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 10.09.2024							
34.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-58 Corner	5+6.20/2×9=45.9 व.मी.=493.88 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	109000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
35.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	247	9×19.50=175.5 व.मी. =1888.38 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	121000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
36.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	49-ए	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 09.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 11.09.2024							
37.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	CR-59 Corner	5.50+5.20/2×9=48.15 व.मी.=518.09 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	11000/- प्र.व.फी.	114000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
38.	श्रीरामकृष्णपुरम , श्रीनाथपुरम व्यावसायिक योजना	R-C-1	719 व.मी	6000/- प्र.व.मी.	75000/- प्र.व.मी.	1078500/-	श्री नितिन नागर 9251030303 श्री पंकज शर्मा 8824001175
39.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	248	9×19.50=175.5 व.मी. =1888.38 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	121000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 10.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 12.09.2024							
40.	श्रीरामकृष्णपुरम , श्रीनाथपुरम व्यावसायिक योजना	R-C-2	895.50 व.मी	6000/- प्र.व.मी.	85000/- प्र.व.मी.	1182500/-	श्री नितिन नागर 9251030303 श्री पंकज शर्मा 8824001175
41.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	249	9×19.50=175.5 व.मी. =1888.38 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	121000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
42.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	81-ए	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 18.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 20.09.2024							
43.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	250	9×19.50=175.5 व.मी. =1888.38 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	121000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
44.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	65-ए	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
45.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	33-ए	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	10000/- प्र.व.फी.	242500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 19.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 23.09.2024							
46.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	2	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
47.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	222	10.50×21=220.5 व.मी. =2372.58 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	152000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
48.	मुकुन्दरा विहार में आवासीय योजना योजना	440	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	10000/- प्र.व.मी.	3000/- प्र.व.फी.	163000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 20.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 24.09.2024							
49.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	4	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
50.	लाल हवेली परिसर में ब्लॉक-डी में निर्मित व्यावसायिक दुकानें	Shop-19	144 व.फी.	-	20000/- प्र.व.फी.	58000/-	सुश्री सोनम जैन 6378521569 श्री कुलदीप तंवर 9587406054
51.	मुकुन्दरा विहार में आवासीय योजना योजना	441	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	10000/- प्र.व.मी.	3000/- प्र.व.फी.	163000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 23.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 25.09.2024							
52.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	8	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
53.	आरोग्य नगर आवासीय योजना	183	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	5500/- प्र.व.फी.	298500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
54.	मुकुन्दरा विहार में आवासीय योजना योजना	443	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	10000/- प्र.व.मी.	3000/- प्र.व.फी.	163000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 24.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 26.09.2024							
55.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	9	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
56.	आरोग्य नगर आवासीय योजना	184	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	5500/- प्र.व.फी.	298500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
57.	मुकुन्दरा विहार में आवासीय योजना योजना	444	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	10000/- प्र.व.मी.	3000/- प्र.व.फी.	163000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 25.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 27.09.2024							
58.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	21	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
59.	आरोग्य नगर आवासीय योजना	185	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	5500/- प्र.व.फी.	298500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
60.	मुकुन्दरा विहार में आवासीय योजना योजना	445	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	10000/- प्र.व.मी.	3000/- प्र.व.फी.	163000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 26.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 30.09.2024							
61.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	24	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
62.	आरोग्य नगर आवासीय योजना	186	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	5500/- प्र.व.फी.	298500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
63.	मुकुन्दरा विहार में आवासीय योजना योजना	446	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	10000/- प्र.व.मी.	3000/- प्र.व.फी.	163000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 27.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 01.10.2024							
64.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	34	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
65.	आरोग्य नगर आवासीय योजना	187	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	5500/- प्र.व.फी.	298500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
66.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	01 कॉर्नर	13.90×21=291.90 व.मी. =3140.84 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3520/- प्र.व.फी.	221500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 30.09.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 04.10.2024							
67.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	41	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
68.	आरोग्य नगर आवासीय योजना	188	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	5500/- प्र.व.फी.	298500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
69.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	02	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	174000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 01.10.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 07.10.2024							
70.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	42	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
71.	आरोग्य नगर आवासीय योजना	189	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	5500/- प्र.व.फी.	298500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
72.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	06	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	174000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 04.10.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 08.10.2024							
73.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	43	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
74.	आरोग्य नगर आवासीय योजना	190	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	5500/- प्र.व.फी.	298500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
75.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	07 कॉर्नर	19.50×21=409.5 व.मी. =4400.22 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3520/- प्र.व.फी.	310500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 07.10.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 09.10.2024							
76.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	44	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
77.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	57-ए	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	10000/- प्र.व.फी.	242500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
78.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	10	10.50×21=220.5 व.मी. =2372.58 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	152000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 08.10.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 10.10.2024							
79.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	45	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
80.	आरोग्य नगर आवासीय कम व्यावसायिक योजना	57-बी	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	7500/- प्र.व.मी.	10000/- प्र.व.फी.	242500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
81.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	11	10.50×21=220.5 व.मी. =2372.58 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	152000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 09.10.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 14.10.2024							
82.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	51	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
83.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	12	10.50×21=220.5 व.मी. =2372.58 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	152000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
84.	जयपुर गोल्डन परिसर नवनिर्मित पार्किंग स्थल में निर्मित व्यावसायिक दुकानें	Shop-1	49.50 व.फी.	-	12000/- प्र.व.फी.	12000/-	सुश्री सोनम जैन 6378521569 श्री कुलदीप तंवर 9587406054
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 10.10.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 15.10.2024							
85.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	16 कॉर्नर	13.50×19.50=263.25 व.मी.=2832.57 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3520/- प्र.व.फी.	199500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
86.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	53	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
87.	जयपुर गोल्डन परिसर नवनिर्मित पार्किंग स्थल में निर्मित व्यावसायिक दुकानें	Shop-9	174.95 व.फी.	-	12000/- प्र.व.फी.	42000/-	सुश्री सोनम जैन 6378521569 श्री कुलदीप तंवर 9587406054
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 14.10.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 16.10.2024							
88.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	68	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	174000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
89.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	55	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
90.	जयपुर गोल्डन परिसर नवनिर्मित पार्किंग स्थल में निर्मित व्यावसायिक दुकानें	Shop-11	167.21 व.फी.	-	12000/- प्र.व.फी.	40500/-	सुश्री सोनम जैन 6378521569 श्री कुलदीप तंवर 9587406054
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 15.10.2024 ई-ऑक्शन की समाप्ति तिथि 17.10.2024							
91.	चाणक्यपुरी आवासीय योजना	69	12×21=252 व.मी. =2711.52 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	3200/- प्र.व.फी.	174000/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
92.	चाणक्यपुरी आवासीय कम व्यावसायिक योजना	56	7.5×15=112.5 व.मी. =1210.5 व.फी.	6000/- प्र.व.मी.	5000/- प्र.व.फी.	121500/-	श्री प्रदीप असवाल 9571619111 श्रीमती नीलम व्यास 9587250588
93.	जयपुर गोल्डन परिसर नवनिर्मित पार्किंग स्थल में निर्मित व्यावसायिक दुकानें	Shop-12	172.33 व.फी.	-	12000/- प्र.व.फी.	41500/-	सुश्री सोनम जैन 6378521569 श्री कुलदीप तंवर 9587406054
ई-ऑक्शन की प्रारम्भ तिथि 16.10.2024 ई-ऑ

सार-समाचार

पार्श्वनाथ के निर्वाण लड्डू चढ़ाया

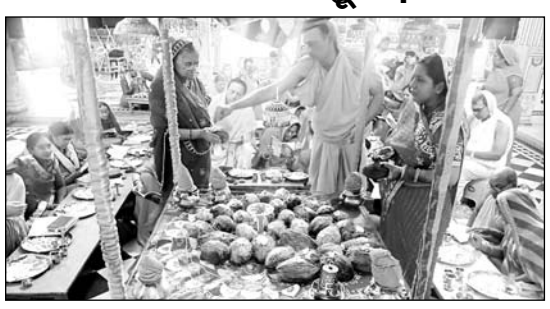

बूंदी (निसं)। जैन धर्म के 23 वें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक महोत्सव पर रविवार को चौगान बाजार पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, दिगंबर जैन नरसिया, देवपुरा संभावनाथ दिगंबर जैन मंदिर सहित जैनालियों में श्रावण शुक्ल सप्तशती पर निर्वाण लड्डू चढ़ाया गया। भगवान के निर्वाण दिवस पर श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन चोगान जैन मंदिर में भगवान के अभिषेक व शांति द्वारा करके पारसनाथ विधान मंडल का आयोजन हुआ। इस विधान से जुड़े बबीता गंगवाल व अनीता सेठिया ने बताया कि विधान में भगवान के 180 अर्थ चढ़ाए गए एवं भगवान की सामूहिक आरती की गई। सायंकाल भक्तामर पाठ व आरती हुई। विधान एवं शांति धारा विधानाचार्य देवेंद्र जैन व प्रियंका जैन अलोद वालों ने संपन्न कराया। भगवान के मोक्ष कल्याणक पर देश व समाज की सुख समृद्धि के लिए कन्याओं ने निराहार उपवास रखकर पार्श्वनाथ भगवान की पूजा अर्चना की। इस अवसर पर पदम सेठिया, विरेन्द्र गंगवाल, संगीता गंगवाल, मनोज, पायल, विमल अग्रवाल, रमेश जैन सहित कई श्रद्धालु उपस्थित रहे।

तीन दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रारंभ

छबड़ा (निसं)। सीबीईओ ओमप्रकाश गालव के मार्गदर्शन में नीमथुर बालाजी परिसर में सोमवार को कक्षा 1 से 5 तक अध्यापन करवाने वाले शिक्षकों का तीन दिवसीय, गैर आवासीय बुनियादी साक्षरता, संख्या ज्ञान एवं आंकलन आधारित प्रथम चरण के शिक्षक प्रशिक्षण का शुभारंभ मुख्य पुजारी विष्णु वैष्णव, शिक्षक संघ के अध्यक्ष बद्री लाल मेहता, पूर्व शिक्षक संघ अध्यक्ष बिठ्ठल मीणा तथा संदर्भ व्यक्ति शंकरलाल नागर द्वारा किया गया। संदर्भ व्यक्ति चिंकी गालव के अनुसार प्रथम सत्र में संभागियों का परिचय, पूर्व परख एवं राज्य में एफएलएन का पुनरावलोकन उप सत्र में सामान्य परिचय एवं पूर्व परख राज्य में एफएलएन का पुनरावलोकन एवं प्रयास दूसरे सत्र में राज्य में एफएलएन हेतु किये गए नवीन प्रयासों पर विस्तृत चर्चा, उप सत्र में बहुभाषी शिक्षा व भाषा आधारित शिक्षण, अवधारणा व प्रमुख रणनीतियां, विधा प्रवेश (स्कूल रेडीनेश) मध्यान्तर बाद तीसरे सत्र में एफएलएन में सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक अध्ययन एवं आंकलन और असेसमेंट पोर्टल का उपयोग उप सत्र में एफएलएन सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक अध्ययन, आंकलन एव असेसमेंट पॉर्टल का उपयोग पर जानकारी दी। संभागियों के प्रश्नों का समाधान किया गया।

'कर्म की गति का भोग भोगना ही होता है'

छबड़ा (निसं)। कस्बे के ग्रीन ग्रीन पार्क कॉलोनी स्थित राम जानकी मंदिर पर आयोजित शिव पुराण कथा में सोमवार को शिवजी के पांच मुखो का वर्णन किया गया। यहां निराकार शिवलिंग का अर्थ समझाया गया। श्यामबाबू अहीर अध्यापक ने बताया कि कथा प्रसंग के दौरान पण्डित रमेष भार्गव ने कहा कि कर्म की गति का भोग हमें भोगना पड़ता है। मिठाई और दवाई में अंतर है, हम मिठाई अपनी मर्जी से सेवन करते हैं, लेकिन दवाई डॉक्टर की सलाह से लेते हैं। जन्म लेने के बाद इस शरीर को पाने के बाद दुनिया के सारे दुख, सारी तकलीफें, सारे कष्ट, सारे रोग, बीमारी और दु:ख हमारे जीवन में जो-जो लिखा होगा वो सब आएगा। लेकिन ऐसा नहीं है कि दु:ख ही दु:ख मिलेगा। शिव महापुराण की कथा कहती है जैसे दिन होता है रात होती है, धूप होती है छांव होती है, ठीक उसी तरह सुख होता है दु:ख होता है। उस सुख और दुख के बीच में अगर किसी ने भगवान का गुणगान कर लिया, उसने भगवान का भजन कर लिया तो उसकी जिंदगी सार्थक हो जाती है और उसका जीवन आनंदित हो जाता है।

कलेक्टर ने नैनवां क्षेत्र का दौरा किया

नैनवां (निसं)। उपखंड क्षेत्र में जारी भारी बारिश के मध्य नजर प्रशासनिक अधिकारियों ने स्थितियों, समस्याओं को लेकर क्षेत्र का जायजा लिया। इस दौरान जिला कलेक्टर अक्षय गोदारा, पुलिस अधीक्षक हनुमान प्रसाद मीणा, एसडीएम हिंडोली नैनवां विनोद कुमार मीणा, तहसीलदार नैनवा राम राय मीणा मौजूद रहे। इस दौरान नैनवा एसडीएम कार्यालय में मीडिया से मुखातिब होते हुए जिला कलेक्टर अक्षय गोदारा ने जनता से अपील करते हुए कहा कि सुबह आठ बजे से ही बूंदी नैनवा सहित पूरे क्षेत्र में भारी बारिश का दौर जारी है। भारी बारिश को देखते हुए अधिकारियों के साथ क्षेत्र का जायजा लिया है। अभी तक कुछ स्थानों को छोड़कर हालात सामान्य है।जनता से अपील है कि कि वह जल भराव क्षेत्र, बांधो, नदियों से दूर रहे सावधानी बरतें। तो वही पिकनिक स्थलों पर भी सावधान रहे। पुलिया या रपटो वाले क्षेत्रों में अनावश्यक रिस्क न लेकर सावधानीपूर्वक आवागमन करें। किसी भी प्रकार की आपात स्थितियों के लिए सहायता केंद्र पर सूचना करें।

डिजि लॉकर एप की जानकारी दी

बून्दी (निसं)। राजकीय कन्या महाविद्यालय, बूंदी में प्राचार्य डॉक्टर संदीप यादव की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के सत्र 2023-24 के सर्टिफिकेट डाउनलोड करने हेतु डिजिलॉकर एप की जानकारी छात्राओं को दी गई। साथ ही छात्राओं से राष्ट्रीय सेवा योजना के सर्टिफिकेट डाउनलोड करवाए गए। डॉ. मनीलता पचानौत ने कहा कि पूर्व में राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रमाण पत्र ऑफलाइन जारी किए जाते थे परंतु सत्र 2023-24 से सर्टिफिकेट ऑनलाइन डिजिलॉकर एप के माध्यम से छात्रा के आधार से जुड़े मोबाइल पर जारी किए जा रहे हैं। जो छात्रा राष्ट्रीय सेवा योजना के 2 साल पूरे कर चुकी है एवं सात दिवसीय विशेष शिविर पूर्ण कर चुकी है वह छात्रा अपना आधार से लिंक मोबाइल नंबर में डिजिलॉकर एप डाउनलोड कर, इसमें राष्ट्रीय सेवा योजना पर जाकर, रजिस्ट्रेशन नंबर और रोल नंबर डालकर अपना सर्टिफिकेट प्राप्त कर सकती है।

टैबलेट वितरण कार्यक्रम स्थगित

बून्दी (निसं)। जिले के शैक्षिणक सत्र 2021-22 एवं 2022-23 के पात्र 1287 मेधावी विद्यार्थियों को ब्लॉकवार टेबलेट का वितरण 13 अगस्त से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में किया जाना था। जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक राजेन्द्र कुमार व्यास ने बताया कि निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर के आदेशानुसार टेबलेट वितरण कार्यक्रम को अग्रिम आदेशों तक स्थगित कर दिया गया है। इस संबंध में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं सभी संस्था प्रधानों को टैबलेट वितरण से संबंधित समस्त कार्य पूर्ण करने के लिए सूचित कर दिया गया है। निदेशालय से वितरण के लिए सूचना मिलने पर टैबलेट प्राप्ति के लिए नवीन आदेश पृथक से जारी कर दिए जाएंगे।

हिंगलोट बांध पर 5 सेमी की चादर चली

छबड़ा (निसं)। छबड़ा क्षेत्र में लगातार रुक रुक कर बारिश का दौर जारी है बारिश से क्षेत्र के जलाशयों का जलस्तर बड़ रहा है। वहीं, क्षेत्र के हिंगलोट बांध पर भी लबालब हो गया। हिंगलोट बांध पर 5 सेमी की चादर चल रही है। जानकारी के अनुसार छबड़ा क्षेत्र में बीते कुछ दिनों से रुक-रुक कर बारिश का दौर जारी है जो रुक-रुक कर सोमवार तक जारी रहा। जिसके चलते नदियों, तालाबो, नालों व बांधो में भी लगातार पानी की आवाक हो रहीं है जिससे जलाशयों का जलस्तर बड़ रहा है। वही, क्षेत्र के हिंगलोट बांध भी लबालब हो गया जिसपर 5 सेमी की चादर चल रही है।

जन्मदिन धूमधाम से मनाया जाएगा

छबड़ा (निसं)। प्रथम पीठ युवराज मिलन कुमार महाराज का 50 जन्मदिन 14 अगस्त को धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। मथुरेश सोनी के अनुसार प्रथम पीठ मथुराधीश के तिलकायत लालमणि महाराज के पुत्र मिलन कुमार महाराज का जन्मदिन धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। जिनका जन्मदिन कोटा, मथुराधीश पाटनपोल, मध्यप्रदेश भंवरा आदि स्थानो पर मनाया जाएगा। जन्मदिन के दिन सुबह 12 मारकंडे पूजा व रात्रि को मुम्बई में गरबा रस आयोजित होगा।

तिरंगा मैराथन आज

छबड़ा (निसं)। कस्बे में मंगलवार को तिरंगा मैराथन का आयोजन किया जाएगा, जो नदी दरवाजा पुलिया से सुबह साढ़े आठ बजे से शुरू होगी, जो पुराना थाना, डिप्टी ऑफिस, बालिका विद्यालय, आजाद सर्किल, अंहिसा सर्किल, खेल मैदान पहुंचकर संपन्न होगी।

'फ्लैगशिप योजनाओं में प्रगति लाकर रैंकिंग में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करें'

झालावाड़, (निसं)। आवश्यक सेवाओं की साप्ताहिक समीक्षा बैठक सोमवार को जिला कलेक्टर अजय सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में मिनी सचिवालय के सभागार में आयोजित की गई।

बैठक में जिला कलेक्टर ने कहा कि सभी अधिकारी अपने-अपने विभाग से संबंधित प्रदेश सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं में अधिक से अधिक लोगों को लाभान्वित कराते हुए राज्य स्तर पर रैंकिंग में सर्वोच्च स्थान पर आने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी पूर्ण जिम्मेदारी एवं सजगता से विभागीय कार्यों का क्रियान्वयन सुनिश्चित करें।

उन्होंने सभी विभागों के अधिकारियों को भूमि आवंटन के प्रकरणों के निस्ताण के लिए उनकी जानकारी देने के निर्देश दिए ताकि शीघ्र अग्रिम कार्यवाही करते हुए भूमि आवंटित की जाए। उन्होंने नगरीय निकायों के अधिकारियों को अतिक्रमण हटवाने के कार्य को गति प्रदान करने तथा सार्वजनिक स्थानों पर फैंसिंग कर राजकीय सम्पत्ति का सूचना बोर्ड लगाने की कार्यवाही कर जानकारी प्रदान करने के निर्देश दिए। उन्होंने पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक को गौशालाओं का औचक निरीक्षण करने तथा व्यापक मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए।

झालावाड़ जिला कलेक्टर अजय सिंह राठौड़ ने आवश्यक सेवाओं की साप्ताहिक समीक्षा बैठक ली।

इस दौरान उन्होंने कहा कि किसी भी विभाग से संबधित 30 दिन पुराना कोई भी प्रकरण सम्पर्क पोर्टल पर लम्बित रहा तो संबंधित अधिकारी के विरूद्ध कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने ई-फाइलों एवं लाइट्स पोर्टल पर दर्ज प्रकरणों के समयबद्ध रूप से निस्तारण करने के निर्देश सभी अधिकारियों को दिए।

उन्होंने गांवडी तालाब के पास हाइटेंशन लाइन के नीचे बसे लोगों के अवैध बिजली कनेक्शन काटते हुए पुलिस जाप्ते के साथ अवैध मकानों को हटवाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। बैठक में जिला कलेक्टर ने "हर घर तिरंगा" अभियान के तहत आमजन को 13 से 15 अगस्त तक तिरंगा फहराने के लिए जागरूक करने के निर्देश भी सभी अधिकारियों को दिए। इस दौरान नशा मुक्त भारत अभियान के तहत नशा छोड़ने व आमजन को भी इसके लिए जागरूक करने की प्रतिज्ञा उपस्थित अधिकारियों को दिलाई गई।

इस दौरान जिला कलेक्टर ने सार्वजनिक निर्माण विभाग, आरयूआईडीपी, स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण), रसद विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग एवं वन विभाग सहित अन्य विभागों की योजनाओं एवं कार्यों की समीक्षा करते हुए आवश्यक निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर सत्यनारायण आमेटा सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

भोलेनाथ का जलाभिषेक किया

मांगरोल (निसं)। कस्बे में सावन के तीसरे सोमवार को सभी शिव भक्तो ने पैदल चलकर कांवरिया लाकर भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक किया जिसमें मांगरोल से डिबरी बड़ोंद से महादेव जी कालीसिन नदी से जला लाकर कावडिया ने सोरती बावडी लिंगेश्वर महादेव का जलाभिषेक किया।

दूसरी कावड यात्रा बूंदी जिले रामेश्वर धाम से मांगरोल बिलेश्वर महादेव क्षित्रयों के स्थान पर महादेव जी के मंदिर पर जलाअभिषेक व हाडी पाली महादेव से गऊघाट महादेव पर आकर जलाभिषेक किया सभी भक्तों का नगर वासियों ने फल फ्रूट टेकर स्वागत किया गया भगवान भोलेनाथ के जयकारे के साथ कावड यात्रा पैदल चलकर भोले नाथ मंदिर पर पहुची मंत्र उचार के साथ पूजा अर्चना की।

गगनभेदी जयकारों के साथ नागेश्वर बाबा का जलाभिषेक हुआ

छबड़ा (निसं)। सावन माह के चौथे सोमवार को नागेश्वर मंदिर सेवा समिति तत्वाधान में भव्य कावड यात्रा निकाली गई। इस कावड यात्रा में षामिल षिवभक्तो ने गगनभेदी जयकारों के साथ पार्वती नदी के जल से नागेष्वर बाबा जलाभिशेक किया।

शिवभक्त गुगोर गांव के समीप प्रवाहित हो रही पार्वती नदी में तट पर पहुंचे, यहां विधि-विधानपूर्वक पूजा-अर्चना कर महिलाओं, पुरूशों एवं बच्चों ने अपने-अपने पात्रों में पार्वती नदी का पवित्र जल भरा एवं महाआरती के तत्पष्चात् भक्तों की पैदल-पैदल भव्य षोभायात्रा प्रारंभ हुई। जो कि गांव आंचोली, महेषपुरा, धरनावदा चौराहा, आजाद सर्किल, लोटा भैरू, अलीगंज बाजार, पुराना बाजार, छत्री चौराहा होते हुए कैलाष पर्वत पर पहुंची जहां पर कावडियों द्वारा अपने-अपने पात्रों में भरकर लाए पार्वती नदी के पवित्र जल से नागेष्वर बाबा का गगनभेदी जयघोश के साथ जलाभिशेक कर मन्नते मांगी। इस षोभायात्रा में कावडियों द्वारा लगाए गए हर-हर महादेव व हर-हर, बम-बम, आदि जयकारों एवं डीजे साउंड पर चल रहें षिव भजनों से शहर में धार्मिक माहौल बना रहा।

वरिष्ठ भाजपा नेता हिम्मतसिंह सिंघवी के नेतृत्व में आजाद सर्किल पर कावड़ियों का पुश्पवर्शा कर स्वागत किया। इस अवसर पर भाजपा नगर अध्यक्ष सीपी गेरा, पार्शद विपिन षर्मा, कटिखंडी गौषाला समिति अध्यक्ष मनोज राठौर, किषन भार्गव, अमित गालव, हिमांषु धींगडा, गोविंद सोनी, राजेंद्र नामदेव, गौरव सेन आदि मौजूद थे। वही, पालिकाध्यक्ष केसी जैन के नेतृत्व में महामंत्री हरिओम गौड़, पार्शद कपिल यादव, गोविंद तिवारी, जितेंद्र साहू, रामदयाल षर्मा आदि ने स्वागत किया। इसी के साथ ही, कावड़ यात्रा का भक्तों द्वारा जगह-जगह स्वागत द्वार सजाकर पीने के लिए षीतल जल एवं अल्पाहार, षरबत की व्यवस्था की। शोभायात्रा की भव्यता को देखते हुए पुलिस प्रषासन पूरी तरह मुस्तैद रहा। वही, सीआई राजेष खटाना के नेतृत्व में जगह-जगह पर पुलिस जवान तैनात रहे। समिति अध्यक्ष गणेष भार्गव ने पुलिस प्रषासन व समिति कार्यकर्ताओ सहित समाजसेवियों का आभार व्यक्त किया।

हर घर तिरंगा अभियान का शुभारंभ

बूंदी (निसं)। आमजन में देशभक्ति की भावना का संचार करने के लिए सोमवार को जिलेभर में राज्य सरकार के निर्देशानुसार हर घर तिरंगा कार्यक्रम के तहत विविध गतिविधियों का आयोजन हुआ।

जिला कलेक्टर अक्षय गोदारा और जिला पुलिस अधीक्षक हनुमान प्रसाद ने शहर के हायर सैकेण्डरी स्कूल परिसर से तिरंगा रैली को हरी झंडी दिखाकर हर घर तिरंगा अभियान का शुभारंभ किया।इस अवसर पर जिला कलेक्टर अक्षय गोदारा ने कहा कि जिले भर में स्वतंत्रता दिवस हर्ष एवं उत्साह से मनाया जाएगा। साथ ही उन्होंने तिरंगा रैली के दौरान स्कूली बच्चों को तिरंगा शपथ एवं नशा मुक्ति अभियान के तहत शपथ भी दिलाई।

जिले की सभी राजकीय स्कूलों एवं आंगनबाड़ी केंद्रों में हर घर तिरंगा अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित हुए। इनमें आमजन के साथ ही स्कूली छात्र-छात्राओं ने शपथ भी ली।

इस दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर घनश्याम शर्मा, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी महावीर शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी राजेंद्र व्यास, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी ओम गोस्वामी, स्काउट सीओ सुरेंद्र कुमार सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

जिलेभर में हर घर तिरंगा कार्यक्रम के तहत विविध गतिविधियों का आयोजन हुआ।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत सोमवार को जिला कलेक्ट्रेट परिसर में कैनवास व सेल्फी पाइंट का अतिरिक्त जिला कलक्टर घनश्याम शर्मा ने शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने कैनवास पर जय हिंद लिखा और सेल्फी पाइंट पर सेल्फी लेकर देशभक्ति की भावना का संदेश प्रसारित किया। इसके अलावा जिला परिषद कार्यालय के बाहर भी कैनवास व सेल्फी पाइंट का अतिरिक्त जिला कलक्टर (सीलिंग) नवरत्न कोली ने शुभारंभ किया।

इस अवसर पर जिला कोषाधिकारी अंजनी कुमार शर्मा, नरेगा के अधिशाषी अभियंता प्रियव्रत सिंह, डीओआईटी के संयुक्त निदेशक महेन्द्रपाल, स्वच्छ भारत मिशन के जिला परियोजना समन्वयक निजामुद्दीन आदि मौजूद रहे।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत 13 अगस्त को तिरंगा मैराथन का आयोजन होगा। तिरंगा मैराथन खेल संकुल से लंका गेट, रानी जी की बावड़ी, नागर सागर कुंड, एक खंभे की छतरी, सर्किट हाउस तक निकाली जाएगी। खेल संकुल में सुबह 8 बजे जिला कलक्टर मैराथन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे।

झालावाड़ में तिरंगा रैली के माध्यम से तिरंगा फहराने का संदेश दिया

झालावाड़ (निसं)। 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत सोमवार को जिला कलक्टर अजय सिंह राठौड़ के नेतृत्व में राजकीय विजयाराजे सिंधिया खेल संकुल से मिनी सचिवालय तक तिरंगा रैली (मेराथॉन) का आयोजन किया गया।

तिरंगा रैली को जिला कलेक्टर की पहल पर राजकीय विद्यालय के छात्र द्वारा हरी झण्डी दिखाकर खेल संकुल से रवाना किया गया। रैली में आगे-आगे जिला कलेक्टर के साथ अतिरिक्त जिला कलक्टर सत्यनारायण आमेटा, जिला परिषद् के मुख्य कार्यकारी अधिकारी शम्भुदयाल मीणा सहित अन्य अधिकारी एवं आमजन हाथों में तिरंगा लिए "भारत माता की जय" एवं "वन्दे मातरम्" के नारे लगाते हुए जोश व उमंग के साथ चल रहे थे। रैली के माध्यम से उक्त अभियान के तहत हर-घर तिरंगा फहराने का संदेश दिया गया। इस दौरान जिला कलक्टर ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश की आजादी के पर्व स्वतंत्रता दिवस को हमें जोश व उमंग के साथ मनाना चाहिए। इस पर्व पर सम्पूर्ण देश में देशभक्ति का माहौल बनाने के लिए "हर घर तिरंगा" अभियान चलाया जा रहा है।

जिला कलक्टर अजय सिंह राठौड़ के नेतृत्व में राजकीय विजयाराजे सिंधिया खेल संकुल से मिनी सचिवालय तक तिरंगा रैली (मैराथॉन) का आयोजन किया गया।

उन्होंने सभी से आगामी 13 से 15 अगस्त तक अपने-अपने घरों, प्रतिष्ठानों व कार्यालयों में तिरंगा फहराने की अपील की। रैली (मेराथॉन) खेल संकुल से सुभाष सर्किल, मोटर गैराज, बड़ा बाजार, गढ़ परिसर, मंगलपुरा चौराहा, मंगलपुरा टेक, मूर्ति चौराहा, मामा-भांजा चौराहा होते हुए मिनी सचिवालय पहुंचकर सम्पन्न हुई। रैली में पीटीएस के जवान, राजकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राएं, नर्सिंग कॉलेज की छात्राएं, महिला शिक्षण विहार की छात्राओं सहित जिला स्तरीय अधिकारी व आमजन ने भी भाग लिया। इस दौरान खेल संकुल में लगाए गए बैनर पर जिला कलक्टर सहित सभी अधिकारियों एवं आमजन ने हस्ताक्षर किए। इस दौरान जिला कलेक्टर द्वारा मिनी सचिवालय में उपस्थित लोगों को नशा मुक्ति अभियान के तहत स्वयं नशा छोड़ने एवं आमजन को इसके लिए जागरूक करने की प्रतिज्ञा दिलाई गई।

इस दौरान हर घर तिरंगा अभियान के सहायक नोडल अधिकारी जीतमल नागर, सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियंता हुकुमचन्द मीणा, जिला रसद अधिकारी जितेन्द्र कुमार, सांख्यिकी विभाग के उपनिदेशक सुरेश शर्मा, तहसीलदार झालरापाटन नरेन्द्र मीणा, सहित बड़ी संख्या में आमजन एवं समाजसेवी उपस्थित रहे।

सार-समाचार

विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण

अंता (निसं)। युवा हृदय सम्राट स्वामी विवेकानंद का जीवन एक कठोर तपस्वी की तरह रहा है, उनके जीवन से हमें सदैव देशभक्ति की प्रेरणा मिलती है, यह विचार राजस्थान सरकार के शिक्षा व पंचायत राज मंत्री मदन दिलावर ने अंता ब्लॉक के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अमलसरा में पूज्य स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा अनावरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि राजस्थान सरकार शिक्षा के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित करेगी तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका रखने वाले महापुरुषों के इतिहास को शामिल कर आने वाली युवा पीढ़ी को अवगत कराने के लिए हर संभव प्रयास करेगी। समारोह में डाक्टर ललित मीणा विधायक किशनगंज तथा भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष बारां आनंद गर्ग ने समारोह की अध्यक्षता की। अमलसरा विद्यालय की बालिकाओं द्वारा प्रवेश द्वार पर तिलक लगाकर पुष्प वर्षा के साथ प्रधानाचार्य दिनेश कुमार शर्मा ने मय स्टाफ के अगवानी की। विद्यालय की छात्राओ ने मंचासीन अतिथियों का स्वागत गान से स्वागत किया। विद्यालय परिसर में पूज्य स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा का विधिवत रूप से अनावरण किया गया। समारोह में सैंकड़ों की संख्या में नागरिक गण शामिल रहे।

सावन महोत्सव कार्यक्रम आयोजित

झालावाड़ (निसं)। मां रेणुका सेवा समिति द्वारा आयोजित सावन महोत्सव कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम प्रभारी पूर्वा दुबे ने बताया कि कार्यक्रम में कृष्ण प्रिया अदिति राधे द्वारा भजन संध्या एवं प्रद्युम्न पांडे द्वारा सावन गीत प्रस्तुत किये जिस पर ब्राह्मण महिलाओं ने आनंद लिया तथा भाव विभोर होकर नृत्य किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रश्मि शुक्ला एवं विशिष्ट अतिथि आभा जोशी रही तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता मां रेणुका सेवा समिति जिला अध्यक्ष ज्योति जोशी ने की। कार्यक्रम में सावन क्वीन प्रतियोगिता में प्रथम शिवानी शर्मा, द्वितीय कमलेश शर्मा, तृतीय तरूणा तिवारी रही मेहंदी प्रतियोगिता में प्रथम कमलेश गौतम, द्वितीय तरुणा तिवारी, तृतीय पुष्पलता दुबे रही कार्यक्रम में लक्की डॉ. दुर्गेशनन्दनी शर्मा का निकला इस अवसर पर ब्राह्मण समाज की महिलाओं द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित किये गये। कार्यक्रम में सभी ब्राह्मण की महिलाओं का सम्मान किया गया जिसमें विप्र फाउंडेशन से बरखा शर्मा व अर्चना शर्मा, राजस्थान ब्राह्मण महासभा से मंजू शर्मा व दुर्गेश नंदिनी शर्मा, झालावाड गुर्जर गौड समाज से दीपिका शर्मा, तथा सीनियर महिलाओं के सम्मान में मीनाक्षी औदिच्य, मधु मिश्रा, किरण शर्मा, सुशीला शर्मा, का सम्मान किया गया। आये हुए सभी अतिथियों का स्वागत वीणा दुबे, ज्योति व्यास, वीनू शर्मा, सावित्री मिश्रा, मधु मिश्रा, गोरी दुबे, नीलू शर्मा, मीनाक्षी उपाध्याय, योजना शर्मा, प्रीति शर्मा, ज्योति शर्मा, मंजू शर्मा, सुमन दुबे, ने किया।

कर्मचारियों को शपथ दिलाई

रामगंजमंडी (निसं)। हर घर तिरंगा अभियान को लेकर सोमवार को कोटा जिले के स्वास्थ्य भवन एवं चिकित्सा संस्थानों में प्रतिज्ञा का आयोजन किया गया।मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ जगदीश कुमार सोनी ने नयापुरा स्थित स्वास्थ्य भवन में कार्यालय के समस्त अधिकारी कर्मचारियों को राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराने एवं भारत के ध्वज सहिंता का पालन करने तथा इसका सदैव सम्मान करने का संकल्प लेने की प्रतिज्ञा दिलाई। सभी कार्मिकों ने हाथों में राष्ट्रीयध्वज तिरंगा थामे शपथ ग्रहण की। इस अवसर पर उप मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी स्वास्थ्य डॉ घनश्याम मीना आरसीएचओ डॉ रमेश कारगवाल डॉ सुधींद्र श्रृंगी भी मौजूद रहे। सीएमएचओ डॉ सोनी ने बताया कि इसी प्रकार चिकित्सा संस्थानों में भी शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किये गये।

दधिमती माता मन्दिर में चोरी

बून्दी (निसं)। बूंदी जयपुर रोड स्थित दाधीच समाज की कुल देवी दधिमती माता मन्दिर में एक बार फिर चोरों ने चोरी की वारदात को अंजाम दिया। चोरी का पता सोमवार सुबह पुजारी अंकुश के मंदिर जाने पर लगा, जब उन्होनें देखा की मन्दिर के ताले टूटे हुए है और माता जी की मूर्ति से श्रृंगार आर्टिफिशल गहने गायब थे। पुजारी द्वारा पुलिस को सूचित किए जाने के बाद कोतवाली पुलिस ने मौके पर पहुंच जांच शुरू कर दी। पुजारी ने बताया कि चोरों व नशेड़ियों के डर से मन्दिर में कोई कीमती सामान नहीं रखते उसके बाद रोज काम में आने वाले सामानों को भी चोर चोरी कर ले जाते है। पुजारी ने बताया कि चोर माता की प्रतिमा से हार, टीकला सहित अन्य आभूषण ले गए व चोरी की वारदात को अंजाम देते समय चोरों ने माता के गले मे पहने हुए हार को खींचने का प्रयास किया है इससे माता के कान के नीचे का कुछ हिस्सा क्षतिग्रस्त हुआ है।

'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम

रावतभाटा, (निसं)। जिला कलेक्टर आलोक रंजन की अध्यक्षता में सोमवार को वीसी के माध्यम से 12 से 15 अगस्त के दौरान 'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम की कार्य योजना बनाने हेतु निर्देशित किया है। उपखण्ड क्षेत्र में इस कार्यक्रम की सफलता के लिए माहोल तैयार करना तथा देश की स्वतंत्रता के उपलक्ष में आयोजित होने वाले कार्यकमों में सभी नागरिकों को दिल से जुडने हेतु प्रेरित किए जाने हेतू उपखंड कार्यलय में उपजिला कलेक्टर महेश गगोरिया की अध्यक्षता में सोमवार को समस्त ब्लॉक स्तरीय अधिकारियो की बैठक लेते हुए 'हर घर तिरंगा' अभियान को सफल बनाने के लिए निर्देश दिए।

आज जल सप्लाई बाधित रहेगी

रामगंजमंडी (निसं)। रामगंजमंडी परियोजना के जल श्रोत्र आम्बाकुई इन्टेक वेल पर राणा प्रताप सागर बांध का लेवल बढ़ने से नदी में आई घांस व काई पम्पों पर जमने से पेयजल योजना पर जल उत्पादन प्रभावित हो रहा है। जिस कारण योजना पर कम पानी आने से जल सप्लाई प्रभावित हो रही है। जिससे 13 अगस्त मंगलवार को ग्रामीण क्षेत्र में होने वाली जल सप्लाई आंशिक बाधित रहेगी व कम दबाव से होगी।उक्त जानकारी बलभद्र शर्मा सहायक अभियंत (ग्रामीण) जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग रामगंजमंडी ने दी।

आर्थिक सहायता दी

रामगंजमंडी (निसं)। मोडक मंगलम महिला मंडल के द्वारा अध्यक्षा विभा सचान एवं संयुक्त अध्यक्षा श्रीमति शशि मण्डोत के नेतृत्व में बड़ोदिया कलां निवासी मांगी बाई धर्मपत्नी बंशीलाल लोधा जिन्होंने करंट लगने से अपने एक हाथ और पांव गंवा दिए,उनको इलाज़ के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की गयी। मंडल की पी.आर.ओ. श्रीमति स्नेहा पालीवाल ने जानकारी दी कि इस मौके पर सभी मंडल सदस्या मौजूद रही।

शमी से इसे लेकर बातचीत होनी चाहिए। कोशिश होनी चाहिए की वह अगले 3-4 साल खेलें। ऐसा करने के लिए रास्त बनाना होगा। इसे लेकर उनसे बातचीत होनी चाहिए।

- पारस महाम्ब

पूर्व भारतीय गेंदबाजी कोच, मोहम्मद शमी के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

रोहित शर्मा

भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा इन दिनों काफी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। वह लगातार गेंदबाजों को परेशान कर रहे हैं। रोहित अपने इस इरादे में सफल भी रहे हैं और उनकी इस तरह की बल्लेबाजी से भारतीय टीम को तेज शुरुआत भी मिल रही है। वहीं वनडे वर्ल्ड कप 2023 की बात करें या फिर टी20 वर्ल्ड कप 2024 की या फिर उसके बाद श्रीलंका के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज की। रोहित ने हर जगह गेंदबाजों को अपनी बल्लेबाजी से परेशान किया। इसके दम पर वो अन्य भारतीय बल्लेबाजों के मुकाबले ज्यादा सफल भी रहे।

क्या आप जानते हैं ?... विश्वकप फुटबाल में पहली हैट्रिक करने का श्रेय फीफा अमेरिका के ब्रेट्रेम को जाता है, वहीं कुछ लोग अर्जेंटीना के गुलिरेमा स्टे विल को यह सम्मान देते हैं।

रंग-बिरंगी आतिशबाजी के बीच पेरिस ओलंपिक का समापन

बुझाई गई मशाल, हैंडओवर हुआ ओलंपिक फ्लैग

पेरिस, 12 अगस्त। 33वें ओलंपिक का समापन हो गया। फ्रांस की राजधानी पेरिस में आयोजित हुए इन खेलों ने पूरी दुनिया को एंटरटेन किया। अभूतपूर्व और रंगारंग कार्यक्रम के बीच विश्व में खेलों के सबसे बड़े महाकुंभ का जब समापन हुआ तो पेरिस ओलंपिक 2024 कमेटी के अध्य टोनी एस्टांगुएट ने अपनी स्पीच में कहा कि वह ओलंपिक खेलों का समापन हीं है, ये केवल उद्घाघटन समारोह की समाप्ति है और विश्राम है, बल्कि खेलों को तो अनवरत होते रहना है। तीन घंटे तक चले इस समारोह की शुरुआत एक फ्रेंच गीत से हुई थी। स्टेड डी फ्रांस स्टेडियम ऑफ नेशंस के बाद बेल्जियम की पॉप सिंगर एंजेले वान वीक ने परफॉर्म किया।

इसके बाद ऑस्ट्रेलिया के गोल्डन वॉयजर बैंड ने ओलंपिक की खोज दिखाई, इशमें थॉमस जॉली ने डायरेक्ट किया था। इसके बाद पांच बार की ग्रैमी अवॉर्ड जीतने वाली गैब्रिएला सरमिएंटो विल्सन ने अमेरिका का नेशनल एंथम गाया। स्टेड डी फ्रांस से टॉम क्रूज ने स्टंट दिखाते हुए ओलंपिक ध्वस को लॉस एंजिलिस ले गए। वहां, पॉप गायिका बिलि एलिश, रैपर स्नूप डॉग और डॉक्टर ड्रे ने परफॉर्म किया। इस तरह मशाल बुझाकर 33वें ओलंपिक का समापन हुआ।

ओलंपिक फ्लैग हैंडओवर के बाद अमेरिकी नेशनल एंथम गाया गया। इसके बाद हॉलीवुड स्टार टॉम क्रूज की स्टेडियम में एंट्री हुई। वो अपनी बाइक पर ओलंपिक फ्लैग लेकर गए। उन्होंने अपनी बाइक को चार्टर्ड फ्लाइट में रखा। फिर हवा में डाइव लगाते हुए पैराशूट लैंडिंग के जरिए जमीन पर आए। यहां से उन्होंने साइकिल के जरिए ओलंपिक फ्लैग को अपनी जगह लॉस एंजिल्स के लिए भेजा, हॉलीवुड में अगले ओलंपिक की मेजबानी मिलने का जश्रन मनाया गया। लोकप्रिय रॉक बैंड रेड हॉट चिली पेपर्स ने अपने हिट गाने कैन्ट स्टॉप से समा बांध दिया।

भारतीय मुक्केबाजों से ओलंपिक में अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद थी

नई दिल्ली, 12 अगस्त। निकहत ज़रीन और लवलीना बोरगोहेन जैसे मौजूदा विश्व चैंपियन खिलाड़ियों के बावजूद भारतीय मुक्केबाज पेरिस ओलंपिक में उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर पाए और उन्हें बिना पदक के वापस लौटना पड़ा। विजेंदर सिंह के बीजिंग ओलंपिक 2008 में ऐतिहासिक कांस्य पदक जीतने के बाद भारतीय मुक्केबाजों से ओलंपिक में अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद की जाने लगी थी।

इसके चार साल बाद एमसी मैरी कॉम ने लंदन ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था। रियो ओलंपिक 2016 में भारतीय मुक्केबाज पदक नहीं जीत पाए लेकिन तोक्यो ओलंपिक में लवलीना कांस्य पदक हासिल करने में सफल रही थी। इस परिदृश्य में उम्मीद की जा रही थी कि

भारतीय मुक्केबाज पदक जीतने का सिलसिला जारी रखेंगे लेकिन उनका प्रदर्शन निराशाजनक रहा।

खेल केजानकारों का मानना था कि क्वालीफाई करने वाले छह मुक्केबाजों से दो नहीं तो कम से कम एक पदक की उम्मीद की जा सकती है। दो बार की विश्व चैंपियन जरीन (50 किग्रा), लवलीना (75 किग्रा) और विश्व चैंपियनशिप 2023 के कांस्य पदक विजेता निशांत देव (71 किग्रा)सभी को पोडियम पर पहुंचने का मजबूत दावेदार माना जा रहा था। लेकिन जब वास्तविक प्रतिस्पर्धा की बात आई तो भारतीय खिलाड़ियों में आवश्यक गति की कमी नजर आई। निशांत को अपवाद माना जा सकता है।

क्योंकि क्वार्टर फाइनल में विवादास्पद परिणाम के कारण वह पदक से वंचित हो गए। जहां तक जरीन और लवलीना का सवाल है तो वह अपनी मजबूत प्रतिद्वंदियोंके सामने संघर्ष करती हुई नजर आई। अमित पंघाल (51 किग्रा) अपनी पिछली फॉर्म को दिखाने में नाकाम रहे। लवलीना, पंघाल और निशांत को पदक सुरक्षित करने के लिए सिर्फ दो जीत की जरूरत थी।

दमदार प्रदर्शन का इरादा, भारतीय यूथ महिला हैंडबॉल टीम वर्ल्ड चैम्पियनशिप के लिये चीन पहुंची

टीम में राजस्थान की टीना, मुस्कान व मनीषा भारतीय टीम की कोच होगी प्रदेश की मनीषा

जयपुर, 12 अगस्त। चुझोउ (चीन) में 14 से 25 अगस्त तक होनी वाली यूथ महिला हैंडबॉल वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिये भारतीय यूथ महिला हैंडबॉल टीम ने क्वालीफाई किया है। वर्ल्ड चैंपियनशिप में भाग लेने वाली भारतीय टीम में राजस्थान की टीना, मुस्कान व मनीषा जाट चयन हुआ है। टीम की कोच राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद की हैंडबॉल कोच मनीषा राठौड़ को बनाया गया है। इस चैंपियनशिप में भाग लेने के लिये भारतीय टीम सोमवार को चीन पहुँच गयी।

राजस्थान राज्य हैंडबॉल संघ के मानद सचिव यश प्रताप सिंह ने बताया कि भारतीय टीम में राजस्थान से शामिल टीना, मुस्कान तथा मनीषा जाट राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद् द्वारा जयपुर में संचालित महिला हैंडबॉल अकादमी की खिलाड़ी हैं। इनमें टीना पीवट की पोजीशन पर, मुस्कान लेफ्ट बैक और मनीषा जाट राइट बैक की पोजीशन पर खेलती है।

रवानगी से पूर्व भारतीय टीम को इस चैंपियनशिप के लिए रवानगी से पूर्व भारतीय टीम को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के सुपुत्र हरीश नड्डा, हैंडबॉल एसोसिएशन इंडिया के कार्यकारी निदेशक डा.आनन्देश्वर पाण्डेय व महासचिव डा. तेजराज सिंह ने वर्ल्ड चैंपियनशिप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दी। हैंडबॉल एसोसिएशन इंडिया के महासचिव डा. तेजराज सिंह ने बताया कि भारतीय टीम की कप्तान हिमाचल प्रदेश की खुशी व उपकप्तान भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) की सुजाता को बनाया गया है।

उन्होंने बताया कि इस चैंपियनशिप की तैयारी के लिए भारतीय टीम का प्रशिक्षण शिविर गत 31 जुलाई से 10 अगस्त, 2024 तक भारतीय खेल प्राधिकरण एनसीओई- गांधीनगर (गुजरात) में लगाया गया था। इस चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम के कोच एम.कार्तिकेयन (साई, एनसीओई गांधीनगर), सचिन चौधरी (रेलवे) व मनीषा राठौड़ (राजस्थान) बनाए गए हैं।

भारतीय टीम :- गोलकीपर : आरुषी, कनिका (हिमाचल प्रदेश), लवीषा (चंडीगढ़), राइट बैक :- रेणुका (हरियाणा), मुस्कान देवी (हिमाचल प्रदेश), मनीषा जाट (राजस्थान) सेंटर बैक :-सुजाता - उपकप्तान (साई), खुशी - कप्तान (हिमाचल प्रदेश)। लेफ्ट बैक :- काजल (हिमाचल प्रदेश), मुस्कान (राजस्थान), अनिका (हरियाणा)। राइट विंग :-काफी (हरियाणा), ईशू (साई)। पिवोट :-वैष्णवी (गोल्डन ईगल अकादमी, उत्तर प्रदेश), टीना (राजस्थान), तन्नु (साई)। लेफ्ट विंग :- तमन्ना (साई), पूजा (गोल्डन ईगल अकादमी, उत्तर प्रदेश)।

दलीप ट्रॉफी पहले दौर का मैच बेंगलुरू में

अश्विन और बुमराह को छोड़कर सभी सितारे खेलेंगे

बेंगलुरू, 12 अगस्त। तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और सीनियर स्पिनर रविचंद्रन अश्विन को छोड़कर भारत के कुछ नियमित स्टार दलीप ट्रॉफी के पहले दौर में खेलेंगे जिसे बीसीसीआई ने अनंतपुर की जगह बेंगलुरू में कराने का फैसला किया है। सीनियर बल्लेबाज विराट कोहली और रोहित शर्मा को छूट दी जा सकती है। टूर्नामेंट में भाग लेने का फैसला पूरी तरह से उन पर छोड़ा जायेगा। दलीप ट्रॉफी के पहले दौर के दो सेट के मैच आंध्रप्रदेश के अनंतपुर में पांच सितंबर से होने थे लेकिन अब उनमें से एक को एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में कराया जायेगा ताकि लॉजिस्टिक की समस्या नहीं आये। अनंतपुर बेंगलुरू से 230 किलोमीटर दूर है और हवाई मार्ग से जुड़ा हुआ भी नहीं है। एक सूत्र ने बताया ,'' कुछ शीर्ष खिलाड़ियों की सुविधा के लिये यह फैसला लिया गया है ताकि उन्हें बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला से पहले लाल गेंद के क्रिकेट का अनुभव हो जाये।''

गोल्ड मेडलिस्ट अरशद नदीम का पाक में जोरदार स्वागत

नई दिल्ली, 12 अगस्त। पाकिस्तान के गोल्ड मेडलिस्ट अरशद नदीम पेरिस ओलंपिक 2024 से अपने वतन लौट चुके हैं। जहां उनका एयरपोर्ट पर गर्मजोशी के साथ स्वागत हुआ। पेरिस ओलंपिक में अरशद नदीम ने 92.97 मीटर की दूरी पर भाला फेंकर गोल्ड मेडल जीता। इस थ्रो के कारण भारतीय जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा को दूसरा स्थान मिला था। ओलंपिक गोल्ड मेडल जीतकर इतिहास रचने वाले अरशद नदीम अपने घर लौट आए हैं। पाकिस्तान की तरफ से अरशद नदीम पर नकद पुरस्कार की बारिश हो रही है। लेकिन उनके ससुर ने इस बीच रिकॉर्डधारी थ्रोअर को उपहार में भैंस देकर सुर्खियां बटोरी हैं। बता दें कि, नदीम के गांव से ससुर मोहम्मद नवाज ने स्थानीय मीडिया को बताया कि उनके गांव

में भैंस उपहार में देने का मतलब काफी मूल्यवान और सम्मानीय होता है। नदीम अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं और सफलता हासिल करने के बावजूद वह अपने गांव में अपने परिवार के साथ ही रह रहे हैं।

दक्षिण अफ्रीका बनाम विंडीज पहला टेस्ट मैच ड्रॉ

पोर्ट ऑफ स्पेन, 12 अगस्त। ऐलेक ऐथनेज की (92) रनों की जुझारु पारी की बदौलत वेस्टइंडीज ने दूसरी पारी में पांच विकेट पर 201 रन बनाकर दक्षिण के साथ खेले गये पहले टेस्ट मैच को ड्रा करा दिया। दक्षिण अफ्रीका ने पांचवें दिन दूसरी पारी को तीन विकेट पर 173 रन पर पारी घोषित कर वेस्टइंडीज को जीत के लिए 298 रनों का लक्ष्य दिया। जिसके जवाब में दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज की शुरुआत खराब रही और एक समय उसने 64 रन पर अपने तीन विकेट गवां दिये थे। ऐसा लग रहा था दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाज केशव महाराज वेस्टइंडीज की दूसरी पारी को जल्द ही समेट देंगे। कप्तान क्रेग ब्रैथवेट(शून्य), मिकाइल लुईस (9) रन बनाकर आउट हुये। ऐसे संकट के समय ऐलेक ऐथनेज ने पहले केसी कार्टी के साथ मिलकर चौथे विकेट लिये 63 रनों की साझेदारी की। केसी कार्टी (31) और उसके बाद केवम हॉज (29) रन बनाकर आउट हुये। ऐलेक ऐथनेज ने 92 रनों की जुझारू पारी खेली। जेसन होल्डर (31) रन बनाकर नाबाद रहे। वेस्टइंडीज ने 56.2 ओवर में पांच विकेट पर 201 रन बनाये। दक्षिण अफ्रीका की ओर से केशव महाराज ने चार विकेट लिये। कगिसो रबाडा को एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका ने दूसरी पारी में बिना किसी नुकसान के 30 रन से आगे खेलना शुरु किया। टोनी डीजॉर्जी 45 रन एवं एडन मारक्रम 38 रन बनाकर आउट हुये। दोनों ही बल्लेबाजों को जोमेल वारिकन ने आउट किया। ट्रिस्टन स्टब्स ने 68 रनों की शानदार पारी खेली। उन्हें केमार रोच ने बोल्ड आउट किया। स्टब्स के आउट होने के बाद दक्षिण अफ्रीका ने तीन विकेट पर 173 रन पर पारी घोषित कर दी। और वेस्टइंडीज को पहली पारी की 124 रनों की बढ़त और दूसरी के 173 रनों के आधार पर जीत के लिए 298 रनों का लक्ष्य दिया। वेस्टइंडीज की ओर से जोमेल वारिकन ने दो विकेट लिये। वहीं केमार रोच ने एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका के केशव महाराज और कगिसो रबाडा ने बेहतरीन गेंदबाजी का मुजाहिरा करते हुए वेस्टइंडीज को पहली पारी में 233 रन पर समेट दिया था। दक्षिण अफ्रीका को पहली पारी के आधार पर 124 रनों की बढ़त मिली गई थी। वेस्टइंडीज के कप्तान क्रेग ब्रैथवेट और मिकाइल लुईस ने पारी की अच्छी शुरुआत की थी। दोनों बल्लेबाजों ने पहले विकेट के लिये 53 रन जोड़े। लेकिन दक्षिण अफ्रीकी बेहतरीन गेंदबाजी के आगे वेस्टइंडीज का कोई भी बल्लेबाज पिच पर अधिक तक नहीं टिक सका। मिकाइल लुईस (35), क्रेग ब्रैथवेट (35), जेसन होल्डर (36), केवम हॉज (25) रन बनाकर आउट हुये। केसी कार्टी ने टीम के सर्वाधिक (42) रनों की पारी खेली। जोमेल वारिकन (35) रन बनाकर नाबाद रहे। दक्षिण अफ्रीका की ओर से केशव महाराज ने चार विकेट लिये। कगिसो रबाडा को तीन विकेट तीन विकेट मिले। लुंगी एन्गिडी और एडन मारक्रम ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए कप्तान तेम्बा बवूता (86), टोनी डीजॉर्जी के (78) अद्धर्शतको और काइल वेरेन के 39 रन एवं वियान मुल्डर के नाबाद 41 रनों की उपयोगी पारियों की बदौलत 357 रनों का स्कोर खड़ा किया। वेस्ट इंडीज की ओर गेंदबाजी करते हुए जोमेल वारिकन ने सबसे ज्यादा चार विकेट हासिल किए जबकि जेडेन सील्स ने तीन, केमार रोच ने दो तथा जेसन होल्डर ने एक विकेट लिया।

नीरज चोपड़ा के मनु भाकर की मां ने दी कसम, कहा-

मेरी बेटी की तरह गेम छोड़ने की मत सोचना, आप में बहुत खेल बाकी

पानीपत,12 अगस्त। पेरिस ओलंपिक 2024 का समापन हो चुका है। भारत ने इस ओलंपिक में महज 6 मेडल जीते हैं, जिनमें से एक सिल्वर तो 5 ब्रॉन्ज मेडल हैं। वहीं नीरज चोपड़ा ने जैवलिन थ्रो में सिल्वर मेडल जीता वह गोल्ड मेडल से पाकिस्तन के अरशद नदीम से पिछड़ गए। वहीं मनु भाकर ने दो ब्रॉन्ज मेडल जीतकर इतिहास रचा। वहीं इस बीच मनु भाकर की मां सुमेधा भाकर ने पेरिस में नीरज से मुलाकात की। जिसका वीडियो सोशल

मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है। साथ ही फैंस ने मनु और नीरज के बीच तरह-तरह के कयास लगाने शुरू कर दिए। वायरल वीडियो में मनु की मां नीरज चोपड़ा से बात करते हुए नजर आ रही हैं उसके बाद वो नीरज का हाथ पकड़ती हैं और अपने सिर पर रखकर कसम खाने के लिए कहती है। चर्चा है कि मनु की मां ने कहा कि आप खेलना मत छोडना । अभी बहुत खेल बाकी है आपके। दोनों के बीच काफी देर बातचीत हुई। जिससे लोगों ने कयासबाजी शुरू कर दी। जहां कुछ फैंस का कहना था कि मनु की मां बेटी के लिए अच्छा रिश्ता ढूंढ रही हैं।

दिग्गज क्रिकेटर ग्राहम थोर्प ने आत्महत्या की : अमांडा

लंदन, 12 अगस्त। लंबे समय से अवसाद और चिंता से जूझ इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर ग्राहम थोर्प ने आत्महत्या की थी। यह जानकारी थोर्प के परिवार ने एक साक्षात्कार में साझा की है। ग्राहम थोर्प की पत्नी अमांडा ने माइकल एथरटन को द टाइम्स से बातचीत में बताया है कि वो लंबे समय से डिप्रेशन से जूझ रहे थे और अवसाद के कारण उन्होंने आत्महत्या की थी। उन्होंने बताया कि वह अफगानिस्तान के मुख्य कोच के रूप में काम कर रहे थे। लेकिन मई 2022 में अपनी जान लेने के पिछले प्रयास के बाद उन्हें अस्पताल में रखा गया था। थार्प की तबीयत में सुधार हो रहा था। लेकिन, बीच-बीच में वो गहरे अवसाद में भी चले जा रहे थे। हमने एक परिवार के रूप में उनका समर्थन किया और इलाज का पूरा प्रयास। लेकिन दुर्भाग्य से उनमें से कोई भी वास्तव में काम नहीं कर रहा था। उन्हें वास्तव लगता था कि उनके बिना हम बेहतर रहेंगे और हम इस बात से बहुत दुखी हैं कि उन्होंने इस पर काम किया और अपनी जान ले ली।

ग्राहम सबसे बड़ी बेटी किट्टी ने कहा, हमें इसके बारे में बात करने में कोई शर्म नहीं। इसमें छिपाने जैसा कुछ भी नहीं है और यह कोई कलंक नहीं। अब समय आ गया है कि

हम यह खबर साझा करें, चाहे यह कितनी भी भयानक क्यों न हो। वो जीवन से प्यार करते थे और हमसे भी प्यार करते थे। लेकिन उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। वह पहले जैसा व्यक्ति नहीं रहे थे। बाएं हाथ के बल्लेबाज थोर्प ने इंग्लैंड के लिए 100 टेस्ट मैच और 82 एकदिवसीय खेले थे और नौ हजार से अधिक रन बनाए थे। इसमें 16 टेस्ट शतक शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले सप्ताह इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड ने 55वर्षीय ग्राहम थोर्प के पांच अगस्त को निधन होने की जानकारी दी थी। तब ये पता नहीं चल सका था कि उनकी मौत किस वजह से हुई है।

प्रज्ञानानंदा को मिला-जुला ड्रॉ

नई दिल्ली, 12 अगस्त। आर प्रज्ञानानंदा को सेंट लुई रेपिड एवं ब्लिट्ज टूर्नामेंट में मिला-जुला ड्रॉ मिला है और यह भारतीय ग्रैंडमास्टर यहां अपने अभियान की शुरुआत काले मोहरों से अमेरिका के लेवोन अरोनियन के खिलाफ करेगा। प्रज्ञानानंदा को मैक्सिम वाचियेर-लाठोव और अलीरेजा फिरोजा की फ्रांसीसी जोड़ी, ग्रैंड शतरंज टूर में शीर्ष पर चल रहे अमेरिका के फाबियानो कारुआना और उज्बेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसोत्तोरोव खिलाफ सफेद मोहरों से खेलना है जिससे उनके पास टूर पर अपनी वर्तमान तीसरी रैंकिंग से सुधार करने का अच्छा अवसर है। साल के शुरुआती हिस्से में अच्छा प्रदर्शन करने के बाद प्रज्ञानानंदा बील मास्टर्स में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पाए और कुछ महत्वपूर्ण रेटिंग अंक गंवाकर विश्व रैंकिंग में शीर्ष 10 से बाहर हो गए। तेजी से वापसी करने वाले खिलाड़ी के रूप में जाने जाने वाले 19 साल के प्रज्ञानानंद को उम्मीद है कि वह अपनी गलतियों को सुधारेंगे और यहां आखिरी दो प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

विद्युत जामवाल ने नेशनल मार्शल आर्ट्स चैम्पियनशिप के प्रतिभागियों को किया प्रोत्साहित

नई दिल्ली, 12 अगस्त। अभिनेता विद्युत जामवाल ने आज नेशनल मार्शल आर्ट्स चैंपियनशिप के समापन समारोह में 16 राज्यों से आये एक हजार से अधिक प्रतिभागियों ने प्रोत्साहित किया।

तालकटोरा स्टेडियम में यूनाइटेड वर्ल्ड मार्शल आर्ट्स फेडरेशन द्वारा आयोजित तीन दिवसीय नेशनल मार्शल आर्ट्स चैंपियनशिप 2024 के सोमवार को हुये समापन समारोह में ताइक्वांडो की वेशभूषा में पहुंचे अभिनेता विद्युत जामवाल ने प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया। तीन दिनों तक चली इस चैंपियनशिप में कराटे, ताइक्वांडो, गटका, लाठी खेल और जूडो प्रतियोगिता में 16 राज्यों के एक हजार से अधिक प्रतिभागियों ने अपने प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

इस चैंपियनशिप में 240 से अधिक श्रेणियों में सात विभिन्न विधाओं की प्रतिस्पर्धा का आयोजन हुआ, जिनमें कराटे, ताइक्वांडो, गटका, लाठी खेल, और जूडो शामिल थे। इस कार्यक्रम ने भारत की समृद्ध मार्शल आर्ट्स परंपरा को भी प्रदर्शित किया, जिसमें तमिलनाडु की सिलंबम और पंजाब की गटका जैसी पारंपरिक विधाओं को प्रमुखता से पेश किया गया। नेशनल मार्शल आर्ट्स चैंपियनशिप 2024 ने न केवल असाधारण प्रतिभाओं को सामने लाया बल्कि भविष्य के मार्शल आर्टिस्टों को प्रेरित करने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया।

रोहित आराम से अगले दो साल जबकि विराट पांच साल तक खेल सकते है : हरभजन

नई दिल्ली, 12 अगस्त। भारत के पूर्व दिग्गज स्पिनर खिलाड़ी हरभजन सिंह का मानना है कि विराट कोहली अपनी बेहतरीन फिटनेस के साथ अगले पांच साल तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के व्यस्त कैलेंडर से आसानी से तालमेल बैठा सकते हैं जबकि टेस्ट और एकदिवसीय कप्तान रोहित शर्मा भी आराम से अगले दो साल तक खेल सकते हैं। हरभजन ने 'पीटीआई-वीडियो को दिये विशेष साक्षात्कार में कहा, ''रोहित आसानी से दो साल और खेल सकते हैं। आप विराट

कोहली की फिटनेस की तुलना किसी और से नहीं कर सकते हैं। आप उन्हें आसानी से पांच साल तक खेलते हुए देख सकते हैं। वह शायद टीम में सबसे फिट खिलाड़ी हैं।'' अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 700 से अधिक विकेट लेने वाले इस पूर्व ऑफ स्पिनर ने कहा, '' आप किसी भी 19 साल के युवा को फिटनेस के मामले में विराट को टक्कर देने के लिए कह सकते हैं और विराट उसे हरा देंगे। वह इतने फिट है। मेरा मानना है कि विराट और रोहित में अभी काफी क्रिकेट बाकी है और यह पूरी तरह उन पर निर्भर है कि वे कब तक खेलना चाहते हैं।'' उन्होंने कहा, '' ये दोनों अगर फिट रहे और अपने प्रदर्शन से टीम की जीत में योगदान देते रहे तो उन्हें खेलना जारी रखना चाहिए।''

हरभजन का मानना है कि टेस्ट क्रिकेट एक ऐसा प्रारूप है जहां टीम को इन दोनों की जरूरत होगी। उन्होंने कहा, '' लाल गेंद प्रारूप में आपको वास्तव में इन दोनों खिलाड़ियों की ज़रूरत है। आपको सभी प्रारूपों में अनुभव की आवश्यकता है चाहे वह सीमित ओवरों का क्रिकेट हो या टेस्ट क्रिकेट। आपको आने वाली प्रतिभा को निखारने के लिए अनुभवी क्रिकेटरों की जरूरत है।'' हरभजन ने साथ ही यह भी कहा कि अगर कोई खिलाड़ी लगातार प्रदर्शन नहीं कर रहा है तो उसे टीम से बाहर करना चाहिये। उन्होंने कहा, '' चयनकर्ताओं को यह देखने की जरूरत है कि कौन सा खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पा रहा है।

हॉकी महिला अकादमी चैम्पियनशिप : ओडिशा नवल टाटा ने जीता हॉकी इंडिया जूनियर महिला अकादमी चैम्पियनशिप का खिताब

नई दिल्ली, 12 अगस्त। ओडिशा नवल टाटा हॉकी हाई परफॉरमेंस सेंटर ने सोमवार को फाइनल मुकाबले में राउंडग्लास पंजाब हॉकी क्लब अकादमी को पेनल्टी शूटआउट में हराकर महिला वर्ग का खिताब जीता। वहीं पुरुष वर्ग के क्वार्टर फाइनल में राउंडग्लास पंजाब ने सेल हॉकी अकादमी को 4-1 तथा नामधारी एकादश ने घुम्मनहेड़ा राइजर अकादमी को 6-1 से हराया।

आज यहां खेले गये फाइनल ओडिशा नवल टाटा हॉकी हाई परफॉरमेंस केन्द्र और राउंडग्लास पंजाब हॉकी क्लब अकादमी का मुकाबला निर्धारित समय पर 2-2 की बराबरी पर छूटा। उसके बाद हुये पेनल्टी शूटआउट में ओडिशा ने पंजाब को हराकर महिला वर्ग का खिताब अपने नाम किया।

ओडिशा नवल टाटा हॉकी हाई परफॉरमेंस सेंटर के लिए प्रभजोत कौर ने (34वें मिनट) और सुरेखा बहाला ने (54वें मिनट) ने गोल किए, जबकि राउंडग्लास पंजाब हॉकी क्लब अकादमी की ओर से रूबी ने (14वें मिनट) और रिबका ने (45वें मिनट) ने गोल दागे। शूटआउट में चेतना रानी दास ने दो गोल किए, प्रभजोत कौर, अनंदिता टोप्पो और पटेल प्रज्ञा ने भी एक-एक गोल किए। वहीं राउंडग्लास पंजाब हॉकी क्लब अकादमी के लिए नमनीत कौर और नेहा ने गोल दागे।

महिला वर्ग में तीसरे/चौथे स्थान के लिए हुए मुकाबले में घुमनहेड़ा राइजर्स अकादमी ने सैल्यूट हॉकी अकादमी को 5-1 से हराया। घुमनहेड़ा राइजर्स अकादमी के लिए प्रिया ने (दूसरे, 27वें, 51वें मिनट), शशि कुमारी ने (53वें मिनट) और वंशिका ने (60वें मिनट) ने गोल किए, जबकि सैल्यूट हॉकी अकादमी के लिए दीपिका ने (10वें मिनट) ने एकमात्र गोल किया।

मेजर ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम में पुरुष वर्ग के क्वार्टर फाइनल में राउंडग्लास पंजाब ने सेल हॉकी अकादमी को 4-1 जबकि नामधारी एकादश ने घुम्मनहेड़ा राइजर अकादमी को 6-1 से हराया। राउंडग्लास पंजाब हॉकी क्लब अकादमी के लिए जपनीत सिंह ने (15वें मिनट), सनी ने (34वें मिनट), गुरसेवक सिंह ने (36वें मिनट) और अमनदीप ने (54वें मिनट) में गोल दागे, जबकि सेल हॉकी अकादमी के लिए पवन लाकड़ा ने (सातवें मिनट) ने एकमात्र गोल किया।

दिन के दूसरे मुकाबले में नामधारी इलेवन ने घुमनहेड़ा राइजर्स अकादमी को 6-1 से हराया। नामधारी इलेवन के लिए नवराज सिंह ने (छठें, 23वें, 42वें, 52वें मिनट), गुरमन सिंह ने (12वें मिनट) और अश्वनी ने (20वें मिनट) में गोल किए, जबकि घुमनहेड़ा राइजर्स अकादमी के लिए निशांत ने (43वें मिनट) ने एकमात्र गोल किया।

पवित्र माह श्रावण मास के चौथे सोमवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मुख्यमंत्री आवास परिसर में स्थित शिव मंदिर में भगवान महादेव की विधिवत् पूजा- अर्चना कर प्रदेशवासियों के मंगल व खुशहाल जीवन की कामना की।

मनीष सिसोदिया की तरह केजरीवाल की भी रिहाई होगी?

दिल्ली आबकारी नीति मामले में केजरीवाल की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने शीघ्र सुनवाई के संकेत दिये

- **सुप्रीम कोर्ट ने मामले की पैरवी कर रहे वकील अभिषेक मनु सिंघवी को संबंधित मामले के संबंध में ईमेल भेजने के लिए कहा है।**
- **अगर ऐन मौके पर सी.बी.आई. की ओर से प्राथमिकी दर्ज नहीं की जाती तो केजरीवाल अब तक जेल से रिहा कर दिये गये होते। शीर्ष अदालत ने मनी लॉण्डरिंग के मामले में एनफोर्समैंट डायरैक्टोरेट की ओर से दर्ज मुकदमे में केजरीवाल को 12 जुलाई को अंतरिम जमानत दे दी थी।**

नयी दिल्ली, 12 अगस्त (वार्ता) उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली आबकारी नीति कथित घोटाला मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की ओर से गिरफ्तारी की वैधता को चुनौती देने वाली उनकी (मुख्यमंत्री) याचिका पर शीघ्र सुनवाई का सोमवार को संकेत दिया।

मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने विचार करने का संकेत देते हुये वरिष्ठ अधिवक्ता ए एम सिंघवी और चंद्र उदय सिंह से मामले से संबंधित एक अनुरोध ईमेल के जरिये भेजने को कहा। दोनों अधिवक्ताओं ने विशेष उल्लेख के दौरान केजरीवाल का पक्ष रखते हुये उनकी याचिका को तत्काल सूचीबद्ध का अनुरोध किया था।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने केजरीवाल के खिलाफ केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की ओर से दर्ज मुकदमा रद्द करने और जमानत के लिये दायर उनकी याचिकायें पांच अगस्त को खारिज कर दी थी।

न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा की एकल पीठ ने अपना आदेश सुनाते हुये कहा था कि सीबीआई के पास केजरीवाल को गिरफ्तार करने का पर्याप्त कानूनी आधार था।

न्यायमूर्ति कृष्णा ने कहा था, यह नहीं कहा जा सकता कि गिरफ्तारी बिना किसी न्यायोचित कारण के की गयी। उच्च न्यायालय ने तब गुण-दोष के आधार पर इस मामले में कोई निर्णय लेने से इनकार कर दिया, लेकिन निचली अदालत का दरवाजा खटखटाने की छूट दी थी एकल पीठ ने जमानत याचिका पर कहा था कि याचिकाकर्ता को निचली अदालत जाने की छूट है। एकल पीठ के समक्ष सीबीआई के एसपीपी रिपीट एसपीपी डी पी सिंह ने दलील देते हुए कहा था कि आरोपी केजरीवाल भ्रष्टाचार के इस मामले सूत्रधार हैं और उनके खिलाफ इस मामले में स्पष्ट सबूत हैं। ईडी ने 21 मार्च और सीबीआई में 26 जून 2024 को आरोपी मुख्यमंत्री केजरीवाल को गिरफ्तार किया था।

सीबीआई ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के मुकदमे में मार्च से न्यायिक हिरासत में बंद आरोपी मुख्यमंत्री केजरीवाल को अदालत की अनुमति के बाद 25 जून को पूछताछ और फिर 26 जून को गिरफ्तार किया था।

आरक्षरण कोटे में कोटा के फैसले को लागू नहीं करेगी सरकार

गत 9 अगस्त को हुई कैबिनेट मीटिंग में ही प्र.मंत्री मोदी ने इस बारे में फैसले ले लिया था

- **कांग्रेस के दो मुख्यमंत्रियों ने खुलकर सुप्रीम कोर्ट फैसले का स्वागत किया था। लेकिन दलित नेताओं ने शुरू में ही अपना रुख स्पष्ट कर दिया था कि वो इस फैसले के साथ नहीं हैं।**

नई दिल्ली, 12 अगस्त। अगस्त महीने के पहले ही दिन सुप्रीम कोर्ट ने एस.सी-एस.टी. के कोटे में विभाजन को स्वीकार करके देश में दलित राजनीति पर सरगर्मियां बढ़ा दी थीं। कांग्रेस के दो मुख्यमंत्रियों ने खुलकर इस फैसले का स्वागत किया। पर दलित नेताओं ने शुरू में ही अपना रुख क्लियर कर दिया था कि वो इस फैसले के साथ नहीं हैं।

बीएसपी प्रमुख मायावती से लेकर लोजपा (रामविलास) तक सभी दलित नेता इस फैसले के विरोध में दिखाई दे रहे थे। संविधान बचाओ-आरक्षण बचाओ नारे का नुकसान झेल चुकी भाजपा फूंक-फूंक कर कदम रख रही थी। अंत में गत 9 अगस्त को भाजपा के एस.सी.-एस.टी. सांसदों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की.। प्रधानमंत्री ने सांसदों को आश्वासन दे दिया कि सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले को लागू नहीं किया जाएगा. 9 अगस्त को ही देर रात केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भी इस सिलसिले में फैसला ले लिया कि इस फैसले को लागू नहीं किया जाएगा। भाजपा के इस फैसले को देखते हुए इंडिया गठबंधन के दलों में हलचल मच गई। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने भी आनन-फानन में फैसले लिए, देखते ही देखते दलित सब कोटे पर देश की राजनीति ही बदल गई।

सुप्रीम कोर्ट ने दलित सब कोटे के फैसले पर जिस दिन मुहर लगाई उसी दिन तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंथ रेड्डू ने फैसले का स्वागत करते हुए घोषणा कि उनके राज्य में भविष्य में होने वाली सभी भर्तियों में कोटे में कोटे के फैसले का पालन किया जाएगा।

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने भी कहा कि उनके राज्य में जल्द ही इस फैसले का क्रियान्वयन किया जाएगा। इन दोनों में राज्यों में कांग्रेस की सरकारें होने के चलते आम तौर पर यही धारणा बनी कि पार्टी इस फैसले का स्वागत करेगी। पर कांग्रेस पार्टी का अधिकारिक बयान नहीं आया। हो सकता है कि कांग्रेस के नेता पहले भारतीय जनता पार्टी का रुख देखना चाह रहे हों. क्योंकि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्राओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुके और सेफोलॉजिस्ट के रूप में मशहूर हो चुके योगेंद्र यादव ने इंडियन एक्सप्रेस में एक ऑर्टिकल लिखकर सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले की भूरि-भूरि तारीफ की. यादव के इस लेख के बाद ऐसा माना जा रहा था कि राहुल गांधी भी इस फैसले की जल्द ही तारीफ करेंगे. पर इस बीच 9 अगस्त को बीजेपी ने सुप्रीम कोर्ट के दलित कोटे में कोटा बनाने के फैसले से दूरी बना ली। केंद्र सरकार ने क्लियर कर दिया कि सरकार भीम राव आंबेडकर के बनाए संविधान के हिसाब से आरक्षण लागू करने में विश्वास रखती है. जाहिर था कि कांग्रेस ने आनन-फानन में अपनी पॉलिसी बदली. 10 अगस्त को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी दलित सब कोटे का विरोध कर दिया।

एस.आई. पेपर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

खिलाफ पर्याप्त सबूत होने पर उनकी गिरफ्तारी की गई। एस.ओ.जी. ने गिरफ्तारी के 24 घंटे में आरोपियों को कोर्ट में पेश कर दिया और इसमें कानूनी प्रावधानों की अवहेलना नहीं हुई है। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने आरोपियों को कहा है कि वह ट्रायल कोर्ट के समक्ष अपने पक्ष में साक्ष्य पेश कर सकते हैं और नियमित जमानत की अर्जी लगा सकते हैं।

मामले में आरोपी सुभाष बिश्नोई, राकेश भामू, मनीष बेनीवाल और दिनेश बिश्नोई, सुरेन्द्र कुमार व मालाराम ने दो एस.एल.पी. के जरिए राजस्थान हाईकोर्ट के 8 मई 2024 के आदेश को चुनौती दी थी। इस आदेश में राजस्थान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार की अपील पर जयपुर मेट्रो-द्वितीय की सी.एम.एम. कोर्ट का, 11 ट्रेनी एस.आई. व एक कांस्टेबल सहित 12 आरोपियों की सशर्त रिहाई के निर्देश देने वाला 12 अप्रैल का आदेश रद्द कर दिया था। आरोपियों की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा व सिद्धार्थ दवे ने राजस्थान हाईकोर्ट के आदेश को रद्द कर सी.एम.एम. कोर्ट के आदेश को बहाल कर उन्हें जमानत देने का आग्रह किया था। इसके विरोध में राज्य सरकार के ए.ए.जी. शिवमंगल शर्मा ने कहा कि एस.ओ.जी. ने आरोपियों को गिरफ्तारी के 24 घंटे में ही कोर्ट में पेश कर दिया था और इससे पहले उन्हें पूछताछ के लिए ही बुलाया था।

भाजपा व विपक्ष यू.पी. के बाय...

- **सपा उपचुनाव में मिल्कीपुर सीट पर भी जीतना चाहती है, पर 12 वर्ष की बालिका के साथ सपा के दो कार्यकर्ताओं मोईद खान व राजू खान द्वारा बलात्कार किए जाने से सपा के जीतने की संभावना कमज़ोर हो गई है।**
- **12 वर्षीय बालिका से बलात्कार की घटना और बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ हो रही हिंसा के कारण भाजपा के पक्ष में माहौल सा बनता लग रहा है।**

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पूरा जोर इसलिये लगा रही है ताकि वह फैजाबाद (अयोध्या) लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी के अवधेश प्रसाद के हाथों हुई अपनी हार का बदला ले सके। ज्ञातव्य है कि सपा कार्यकर्ता मोइन खान तथा राजू खान द्वारा 12 वर्षीय बालिका के साथ किये गये गैंग रेप के बाद, अवधेश प्रसाद की जीत की आभा मंद पड़ गई है।

जहाँ मिल्कीपुर का जातीय गणित बड़े पैमाने पर सपा के पक्ष में दिखाई दे रहा है, वहीं भाजपा को उक्त गैंगरेप मामले के बाद इस क्षेत्र का माहौल उसके पक्ष में हो जाने की आशा है। इसी के साथ, भाजपा बाँग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे हमलों के खिलाफ अपने प्रचार-अभियान को लेकर भी आशान्वित है।

जहाँ इंडिया ब्लॉक ने लोकसभा चुनावों में उसे मिला लाभ अभी गँवाया नहीं है, लेकिन गठबन्धन को दो अन्य मोर्चों पर चुनौतियों का सामना करना है। पहली, कांग्रेस और सपा दोनों ने ही सर्वोच्च न्यायालय के उस फैसले पर चुप्पी साध रखी है, जिसमें अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों को कोटा के अन्दर कोटा की स्वीकृति दे दी गई है। दूसरी, मायावती का यह निर्णय, कि वे इन चुनावों में उतरेंगी।

उपचुनाव नहीं लड़ने की अपनी पुरानी परम्परा के विपरीत, बसपा ने निर्णय लिया है कि वह इन चुनावों को पूरी ताकत से लड़ेगी। बसपा आज अपने पूर्व स्वरूप की छाया मात्र रह गई है तथा उसका प्रभाव काफी कम हो गया है, लेकिन उसमें अभी इतनी क्षमता तो है कि वह इस फैसले को किसी राजनैतिक दल या गठबन्धन के पक्ष में या खिलाफ प्रभावित कर सके। वर्तमान परिदृश्य में ज्यादा सम्भावना इसी बात की है कि मायावती के उम्मीदवार इंडिया ब्लॉक के उम्मीदवारों की चुनावी सम्भावनाओं पर प्रतिकूल असर डालेंगे।

डॉ. किरोड़ी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दो दिनों से सक्रिय होने के बाद, उनके फिर से मंत्री पद पर लौटने की सियासी चर्चाओं ने जन्म लिया है। इसी बीच आज भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ के, किरोड़ी के जल्द कामकाज संभालने के बयान के बाद इन सियासी चर्चाओं को बल मिला है। मदन राठौड़ ने आज प्रदेश भाजपा कार्यालय में मीडिया से बात करते हुए कहा कि किरोड़ीलाल मीणा जल्द ही मंत्री पद का कामकाज संभालेंगे। मेरी उनसे बात हुई है और मुझे पूरा विश्वास है कि मैं उन्हें मनाने में कामयाब हो जाऊंगा। उन्होंने भावनात्मक रूप से मंत्री पद से इस्तीफा दिया था, जिसे स्वीकार नहीं किया गया है, और न इसे स्वीकार किया जाएगा।

ये माधवी पुरी बुच ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से एम.बी.ए. किया था। उनके करियर की शुरुआत आई.सी.आई. बैंक से हुई थी। वर्ष 1993-95 के बीच उन्होंने इंग्लैंड के वैस्ट चार्ल्स कॉलेज के बतौर लैक्चरर काम किया। बारह साल तक उन्होंने कई कम्पनियों के सेल्स, मार्केटिंग और प्रोडक्ट डवलपमैंट के क्षेत्र में काम किया।

वर्ष 2006 में उन्होंने आई.सी.आई.सी.आई. सिक्यूरिटीज को जॉइन किया तथा बाद में 2009 से 2011 तक इसके सी.ई.ओ. पद पर काम किया और 2011 में वे ग्रेटर पैसिफिक कैपिटल को जॉइन करने के लिए सिंगापुर चली गईं। उन्होंने कई कम्पनियों जैसे जैन्सर टैक्नॉलजीज़, इन्नो वैन कैपिटल और मैक्स हैल्थ केयर के एग्ज़ीक्युटिव डायरैक्टर के पद पर काम किया। उन्होंने इंडियन स्कूल ऑफ डवलपमैंट मैनेजमैंट के डायरैक्टर पद पर और न्यू डवलपमैंट बैंक में सलाहकार पद पर अपनी सेवाएं दी थीं। अप्रैल 2017 में उन्हें सेबी का पूर्णकालिक डायरैक्टर बनाया गया तथा कलैक्टिव इन्वैस्टमैंट स्कीम्स, सर्विलांस एवं इन्वैस्टमैंट मैनेजमैंट का विभाग दिया गया। जब उनका कार्यकाल खत्म हुआ तो उन्हें सात सदस्यों वाली टैक्नॉलॉजी कमेटी में लिया गया, जिसका गठन हाउस टैक्नॉलॉजी सिस्टम के विकास में सेबी की मदद के लिए किया गया था, टैक्नॉलॉजी और डेटा एग्नॉस्टिक एप्टीट्यूड में महारथ के कारण उन्होंने इसमें भी क़ई लैंडमार्क फैसले दिए।

18 साल की उम्र में उनकी सगाई धवल बुच से हुई जो कि तब एफ.एम.सी.जी. मल्टीनैशनल, यूनिलीवर में डायरैक्टर थे। जब माधवी 21 वर्ष की हुईं तब उनकी शादी हो गई, जिससे उन्हें एक बेटा है अभय। वे अपनी सफलता का श्रेय अपने बेटे और पति को देती हैं, जिन्हें वे अपना मित्र, सलाहकार व गाइड मानती हैं। जब 26/11 हुआ था, उस समय वे अपने पति के साथ ताज होटल में युनिलीवर की मीटिंग में थी।

हिंडनबर्ग ने माधवी और उनके पति पर बेनामी ऑफ शोर कम्पनियों के निवेश से लेकर अडानी की कम्पनियों के शेयर्स के दाम कृत्रिम रुप से बढ़ाने का आरोप लगाया है।

उप मुख्यमंत्री...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कुमारी अधिकारियों की बैठक लेने पहुँचीं, तभी एक युवक तेजी से दौड़ता हुआ कलैक्ट्रेट सभागार के अंदर घुस गया। युवक के अंदर घुसने पर सुरक्षाकर्मी हरकत में आ गए और उसे दबोच लिया तथा सिविल लाइन थाना पुलिस ने उसे हिरासत में ले लिया। पुलिस युवक से पूछताछ कर रही है। युवक ने अपना नाम नियारा गांव निवासी हंसराज गुर्जर बताया है। युवक ने बताया कि बस स्टैंड पर उसका मोबाइल चोरी हो गया था। पुलिस में कोई सुनवाई नहीं होने के कारण वह यहाँ शिकायत दर्ज कराने आया था। पुलिस युवक से पूछताछ में जुटी है।

'हिंडनबर्ग की रिपोर्ट, भारत में आर्थिक अराजकता फैलाने का षड्यंत्र' है

भाजपा ने आरोप है लगाया कि कांग्रेस इस षड्यंत्र का मुख्य सूत्रधार है

नयी दिल्ली, 12 अगस्त (वार्ता) भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने हिंडनबर्ग की ताजा रिपोर्ट को झूठी और भारत के विरुद्ध दुष्प्रचार करार देते हुए आज कहा कि कांग्रेस ने हिंडनबर्ग के साथ देश में आर्थिक अराजकता फैलाने के लिए षड्यंत्र रचा है।

भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं सांसद रविशंकर प्रसाद ने पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में हिंडनबर्ग की रिपोर्ट, उसके आने के समय और तथ्यों पर सवाल उठाते हुए जमकर हमला किया।

प्रसाद ने कहा कि हिंडनबर्ग के मुख्य निवेशक जॉर्ज सोरॉस हैं, जो भारत के विरुद्ध नियमित दुष्प्रचार चलाते हैं। टूलकिट वालों को तो हिंदुस्तान के विकास से कोई मतलब नहीं है, लेकिन देश पर 55 वर्षों तक राज करने वाली कांग्रेस पार्टी और इंडी गठबंधन, एक सुनियोजित षड्यन्त्र के तहत हिंडनबर्ग के साथ मिल कर काम कर रहे हैं। देश के शेयर बाजार को अस्थिर करने की कोशिश के साथ आर्थिक अराजकता फ़ैलाने की साजिश हो रही है।

प्रसाद ने कहा कि तीसरी बार सत्ता से बेदखल होने के बाद कांग्रेस पार्टी, विपक्षी गठबंधन के नेता और इनको प्रोत्साहित करने वाले टूलकिट के लोग देश में आर्थिक अराजकता और आर्थिक अस्थिरता लाने का प्रयास कर रहा है। इसी कड़ी में हिंडनबर्ग की रिपोर्ट सामने आई है। यह रिपोर्ट शनिवार को आती है और रविवार को इसपर हल्ला मचाया जाता है, ताकि सोमवार को देश के पूंजी बाजार को अस्थिर कर दिया जाए। भारत की अर्थव्यवस्था बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है। दुनिया के बड़े-बड़े वैश्विक संस्थानों ने भारत की वृद्धि दर की सराहना की है और देश में सबसे ज्यादा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) आया है। भारत में कई संस्थागत और छोटे निवेशक हैं, जो मार्केट के रिटर्न से बहुत खुश हैं। सेबी की कानूनी जिम्मेदारी है कि शेयर बाजार ठीक से चले। सेबी अधिनियम में सुनवाई का प्रावधान है और निर्णय के खिलाफ अपील का भी प्रावधान है। देश के कैपिटल मार्केट प्रबंधन के लिए एक सशक्त वैधानिक संरचना है।

प्रसाद ने कहा कि पिछले साल हिंडनबर्ग की रिपोर्ट आई और जनवरी में उच्चतम न्यायालय का आदेश आया था, जिसके बाद 2024 में 22 जांच पूरी की गई। कांग्रेस जेपीसी की मांग करती है जबकि राहुल गांधी के पास वकीलों की फौज है, तो उन्होंने इन जांचों में सहयोग क्यों नहीं किया ? उच्चतम न्यायालय के आदेश पर हुई जांच के बाद, जुलाई में सेबी ने हिंडनबर्ग को नोटिस जारी किया कि वह कानून के विरोध में लगाए गए आरोपों पर जवाब दे। हिंडनबर्ग ने अपनी वेबसाइट पर भी नोटिस के कारण का जिक्र किया है।

सिंघानिया...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बताने को कहा है कि सिंघानिया युनिवर्सिटी के खिलाफ एन.एम.सी. की ओर से शिकायत देने के बाद भी कार्रवाई क्यों नहीं की गई। जस्टिस समीर जैन ने यह आदेश सिंघानिया युनिवर्सिटी से एम.बी.बी.एस. करने वाली रंजना जांगड़ा व अन्य की याचिकाओं पर दिए।

सुनवाई के दौरान एन.एम.सी. की ओर से कहा गया कि उन्होंने राज्य सरकार को समय रहते हुए सूचना दे दी थी कि सिंघानिया युनिवर्सिटी को एम.बी.बी.एस. कोर्स चलाने की मंजूरी नहीं है, इसलिए युनिवर्सिटी के एम.बी.बी.एस. कोर्स को बंद किया जाए। वहीं, यू.जी.सी. ने कहा कि उन्होंने तो केवल युनिवर्सिटी को बी.एड. सहित अन्य कोर्स चलाने की मंजूरी दी थी, उन्होंने एम.बी.बी.एस. कोर्स चलाने के लिए कभी अनुमति नहीं दी थी। अदालत ने एन.एम.सी. व यू.जी.सी. का पक्ष जानने के बाद राज्य के ए.सी.एस. उच्च शिक्षा को उपस्थित होकर स्पष्टीकरण देने के लिए कहा है। मामले से जुड़े अधिवक्ता सुनील कुमार सिंगोदिया ने बताया कि याचिकाकर्ताओं ने वर्ष 2016-17 में नीट की परीक्षा दी थी और उसमें वे पात्र घोषित किए गए। इस दौरान सिंघानिया वि.वि. ने एक विज्ञापन जारी कर एम.बी.बी.एस. कोर्स में प्रवेश के लिए आवेदन मांगे। जिस पर याचिकाकर्ताओं ने युनिवर्सिटी में एम.बी.बी.एस. कोर्स में प्रवेश ले लिया और 2022 में एम.बी.बी.एस. कोर्स कर भी लिया, लेकिन जब उन्होंने आर.एम.सी. में रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन किया तो यह कहते हुए उनका रजिस्ट्रेशन करने से मना कर दिया गया कि सिंघानिया युनिवर्सिटी एन.एम.सी. से मान्यता प्राप्त नहीं है और इसलिए उनका एम.बी.बी.एस. कोर्स वैध नहीं है। इस कार्रवाई को हाईकोर्ट में चुनौती देते हुए याचिकाकर्ताओं ने आर.एम.सी. में उनका रजिस्ट्रेशन करवाने और उनकी एम.बी.बी.एस. की डिग्री को वैध करार देने का आग्रह किया।

प्रियंका गांधी ने बांग्लादेश के हिन्दुओं का मुददा उठाया

नयी दिल्ली, 12 अगस्त (वार्ता) कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने बंगलादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए उम्मीद जताई है कि वहां जल्द ही सामान्य स्थिति बहाल हो जाएगी।

प्रियंका गांधी ने कहा पड़ोसी देश बंगलादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर लगातार हमलों की खबरें विचलित करने वाली हैं। किसी भी सभ्य समाज में धर्म, जाति, भाषा या पहचान के आधार पर भेदभाव, हिंसा और हमले अस्वीकार्य हैं।

उन्होंने जल्द ही हालात में सुधार की उम्मीद जताई और कहा हमें उम्मीद है कि बांग्लादेश में जल्द हालात सामान्य होंगे और वहां की नवनिर्वाचित सरकार हिंदू, ईसाई और बौद्ध धर्म को मानने वाले लोगों के लिए सुरक्षा व सम्मान सुनिश्चित करेगी।

सेबी की चेयरमैन माधवी पुरी बुच की भूमिका पर तलवारें ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हुआ था।

हिंडनबर्ग ने आरोप लगाया है कि बुच और उनके पति के उसी गुमनाम ऑफशोर बरमूडा एंड मॉरिशस फंड्स में कुछ छिपी हुई हिस्सेदारी थी। यह फर्म उसी कॉम्प्लेक्स में पाई गई। बरमूडा एंड मॉरिशस फंड्स का उपयोग विनोद अडानी करता था।

रिपोर्ट कहती है कि जब बुच सेबी की पूर्णकालिक सदस्य थी, उसका ऑफशोर फंड के मैनेजरों से सम्पर्क रहता था तथा उसने "इंडिया इन्फोलाइन" को पत्र लिखा कि फंड की इकाइयों को मुक्त किया जाये। इसी दौरान, उसकी रूचि सिंगापुर की एक ऑफशोर कन्सल्टिंग फर्म "अगोरा" में हो गई तथा सेबी की चेयरपर्सन नियुक्त हाने के केवल दो सप्ताह बाद ही उसने अपने शेयर अपने पति के नाम ट्रांसफर कर दिये थे।

हिंडनबर्ग रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि 40 से अधिक मीडिया जाँचों द्वारा प्रस्तुत एवं पुष्ट साक्ष्यों के बावजूद, सेबी ने अडानी ग्रुप के खिलाफ कोई खास सार्वजनिक कार्यवाही नहीं की है।

रिपोर्ट कहती है कि सेबी की निष्क्रियता को उसी फंड को काम में लेने की बुच की सहअपराधिता से जोड़ा जा सकता है, जो अब संवीक्षा के अधीन है।

हिंडनबर्ग रिपोर्ट में कहा गया है कि अडानी पर आई उसकी रिपोर्ट से लेकर अब तक के 18 महीनों में, "सेबी ने अडानी के मॉरिशस तथा ऑफशोर फर्जी फर्मों के अडानी के कथित गुप्त जाल में बहुत ही कम रूचि दिखाई।"

सेबी प्रमुख तथा उसके पति ने "रिपोर्ट में लगाए आरोपों का निराधार तथा कपटपूर्ण बताया और इनसे इन्कार किया।

बोर्ड के सदस्यों के लिये सेबी का विधान कहता है कि वे अपने हितों, जो उनकी ड्यूटी के खिलाफ हो सकते हैं तथा परिजनों ट्रांज़ेकशन्स को उजागर करें।

किन्तु इस नवीनतम विवाद को देखते हुए यह पूछा जाना जरूरी है: जब नियामक अडानी ग्रुप से जुड़े आरोपों की जाँच-पड़ताल कर रहा था, तो जो बातें सामने आईं, उन्हें सार्वजनिक क्यों नहीं किया गया?

अडानी ग्रुप ने भी अपनी नियमित बीफ्रिंग में हिंडनबर्ग के आरोपों को दुर्भावनापूर्ण, बचकाना और चालाकीपूर्ण बताते हुए कहा है कि तथ्यों और कानून की जबरन उपेक्षा कर सार्वजनिक जानकारी के चुनिंदा अंशों को व्यक्तिगत लाभ के लिए पूर्व निर्धारित निर्णयों के साथ प्रस्तुत किया गया। भाजपा ने सोमवार को आरोप लगाया कि हंगरी मूल के अमेरिकी निवेशक जॉर्ज सोरोस हिंडनबर्ग रिसर्च के मुख्य निवेशक हैं। भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद को यह कहते हुए उद्धृत किया गया कि "आज हम कुछ मुद्दे उठाना चाहते हैं। हिंडनबर्ग में किसका निवेश है? क्या आप जॉर्ज सोरोस नामक सज्जन को जानते हैं जो भारत के खिलाफ नियमित रूप से दुष्प्रचार करते हैं। वे इसके मुख्य निवेशक हैं। उनके दिल में नरेन्द्र मोदी के प्रति घृणा भरी हुई है। आज कांग्रेस पार्टी भी भारत से घृणा करने लगी है।

उन्होंने आगे कहा कि "यदि भारत के शेयर बाजार में उथल-पुथल मचती है तो क्या छोटे निवेशकों को परेशानी नहीं होगी? कांग्रेस पार्टी के पास एक तो "टूलकिट" पॉलिटिक्स है और दूसरी है चिट पॉलीटिक्स। यदि परीक्षा में चिट्स पायी जाती है तो एक्शन लिया जाता है, लेकिन उस चिट्स का क्या करें जो कांग्रेस पार्टी और उसके नेताओं को मिलती हैं? वे पूरे शेयर बाजार को तबाह करना तथा छोटे निवेशकों के पूंजीगत निवेश को रोकना चाहते हैं और यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि भारत में कोई भी आर्थिक निवेश ना हो।"

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने दावा किया है कि सेबी की अध्यक्ष के खिलाफ लगाए गए आरोपों से पता चलता है कि सेबी की विश्वसनीयता के साथ समझौता किया गया है और उसके बाद से भारतीय शेयर बाजार में स्थिति जोखिमपूर्ण है।

हाल ही आई हिंडनबर्ग रिपोर्ट को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म "एक्स" पर डाली गई एक पोस्ट में मांग की कि सिक्युरिटीज़ एण्ड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इण्डिया (सेबी) की अध्यक्ष माधवी पुरी बुच के विरूद्ध लगाए गए आरोपों की जांच जॉइन्ट पॉर्लियामैन्टरी कमेटी (जे.पी.सी.) से करायी जानी चाहिए, क्योंकि सेबी ने हिंडनबर्ग की जनवरी 2023 की रिपोर्ट में हुए खुलासों के बाद प्रधानमंत्री के विश्वस्थ साथी अडानी को सुप्रीम कोर्ट के समक्ष क्लीन चिट दे दी थी। तथापि, सेबी प्रमुख पर आपसी सहायता करने के नए आरोप सामने आए हैं।

खड़गे ने आगे कहा कि "अपनी गाढ़ी कमाई का स्टॉक मार्केट में निवेश करने वाले लघु एवं मध्यम निवेशकों के संरक्षण की जरूरत है क्योंकि उनका सेबी पर विश्वास है। इस महाघोटाले की तह में जाने के लिए जे.पी.सी. जांच जरूरी है।

खड़गे ने कहा कि "तब तक यही माना जाएगा कि प्रधानमंत्री मोदी भारत के उन संवैधानिक संस्थानों की कीमत पर अपने सहयोगियों को बचाना जारी रखेंगे, जिन्हें पिछले सात दशकों में बड़ी मुश्किल से खड़ा किया गया है।"

हिंडनबर्ग रिपोर्ट पर सत्तारूढ़ पार्टी और विपक्ष के दावों-प्रतिदावों के बावजूद पर्याप्त मात्रा में ऐसे दस्तावेजी साक्ष्य मौजूद हैं कि मोदी सरकार द्वारा नियुक्त सेबी अध्यक्ष ने पक्षतापपूर्ण काम किया। सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए जांच के आदेश से उन्हें स्वयं को अलग कर लेना चाहिए था।

शीर्ष अदालत के हिसाब से देखा जाए तो सुस्पष्ट है कि सेबी के निर्णय संदेहास्पद तथा सही नहीं थे। सुप्रीम कोर्ट को सभी बातों को ध्यान में रख नए रहस्योद्घाटनों के हिसाब से स्वत: प्रेरित संज्ञान लेना चाहिए। कोर्ट को अडानी के प्रति पक्षपात करने को लेकर बुच के भी गुणागुण की जांच करनी चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट को बुच ने यह प्रश्न करना चाहिए कि जब वह यह दावा करती हैं कि उनके धन का लेन-देन एक खुली किताब है तो फिर वह बेनामी विदेशी इकाईयों के जरिए अपने धन को क्यों घुमा रही हैं?

सलेक्टिव मीडिया, कोटा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी रोड, कोटा से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा आर.एन.आई. नं. 28446/75, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908